UNIVERSAL
LIBRARY
OU_180717
UNIVERSAL
LIBRARY

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY
Call No. H82/K16V Accession No G.H.2463
Author कानिटकर, ना. वा.
Title वीर पेशवा / 1937
This book should be returned on or before the date last marked below.

विद्यार्थी-संस्करण

वीर पेशवा

(ऐतिहासिक नाटक)

अनुवादक—
सन्त राम, बी० ए०

प्रकाशक—
साहित्य-भवन, अस्पताल रोड,
लाहौर ।

पहली बार १९३७ मूल्य सजिल्द १॥)
बिना जिल्द ~~१)~~

प्रकाशक—

साहित्य-भवन,

अस्पताल रोड,

लाहौर।

मुद्रक— ला: रामभेजा कपूर

मालिक

लाहौर आरट प्रेस

१६, अनारकली

लाहौर।

निवेदन

इस नाटक का कथानक ऐतिहासिक है। इस का संबंध महाराष्ट्र-इतिहास से है। इस में वीररत्न बाजीराव द्वितीय पेशवा की कोंकण-विजय का वर्णन है। बहुत वर्ष हुए स्वर्गीय राजमान्य राजेश्री नारायण बापूजी कानिटकर ने मराठी भाषा में "बाजीराव-मस्तानी" नाम का एक नाटक लिखा था। श्रीयुत दत्तात्रय विष्णु तिनईकर नाम के एक दूसरे सज्जन ने उसे संगीत का रूप दिया था। वह नाटक बड़ा वीररस-पूर्ण था। वह महाराष्ट्र में बड़ा लोकप्रिय हुआ। यहाँ तक कि परिवारों में भी उस का अभिनय होने लगा। कारण यह कि अपने पूर्वजों का अद्भुत शौर्य देख किस का मस्तक गर्व से ऊँचा नहीं होता और किस का हृदय आनन्द से प्रफुल्लित नहीं हो उठता! नाटक की लोकप्रियता को देख श्रीयुत गुलाबसिंह हीरासिंह पूर्वदेशी और श्रीयुत अच्युत बलवन्त कोल्हटकर आदि और भी कई सज्जनों ने इसी कथानक को लेकर 'प्रेम-बंधन' और 'मस्तानी' आदि भिन्न-भिन्न नामों से मराठी भाषा में नाटक रचे। मेरे इस "वीर पेशवा" नाटक का आधार भी श्रीयुत कानिटकर का मराठी नाटक ही है।

में वही एक राष्ट्र कहला सकते हैं। इसी लिए अकबर ने हिन्दू राजपूत-कन्याओं के साथ विवाह करके और उन की संतान को राजसिंहासन पर बैठा कर एक भारतीय राष्ट्र पैदा करने का उपाय किया था। परन्तु खेद है कि जब बाजीराव बल्लाल द्वितीय पेशवा ने मस्तानी नाम की एक मुसलमान स्त्री को अपनी पत्नी बनाकर वही कार्य किया तो सारे महाराष्ट्र ने उनका और उन के पुत्र शमशेर बहादुर का सामाजिक बहिष्कार कर दिया। इसे हिन्दुओं का दुर्भाग्य न कहें तो और क्या कहें।

कुछ नाटकों में देखा गया है कि मुसलमान पात्र अरबी-फ़ारसी के मोटे-मोटे गला-घोंटू शब्द बोलते हैं। इस का कारण यह दिया जाता है कि उन की स्वाभाविक भाषा यही हो सकती है। परन्तु इस नाटक में इस नियम का पालन नहीं किया गया। कारण यह कि एक तो यह पुस्तक हिन्दी के प्रचार के उद्देश्य से लिखी गई है, अरबी-फ़ारसी के क्लिष्ट शब्द सिखलाने के लिए नहीं। दूसरे, यदि इस नियम का पालन किया जाता तो बाजीराव आदि महाराष्ट्र-पात्रों के मुख से मराठी बुलवाना पड़ता, जिस से पुस्तक हिन्दी पाठकों के लिए दुर्बोध हो जाती। फिर यह कहना भी कठिन है कि बाजीराव द्वितीय पेशवा के समय हैदराबाद के मुसलमान आजकल की उर्दू बोलते थे। इस लिए इस नाटक में सभी पात्रों की भाषा हिन्दी ही रक्खी गई है।

इस पुस्तक में मैंने सर्वश्री पूर्वदेशी और कोल्हटकर की रचनाओं से भी सहायता ली है। पुस्तक में जो पद्य और गीत हैं वे श्रीयुत उदयशंकर भट्ट, सुधा-संपादक श्रीयुत दुलारेलाल भार्गव और प्रसिद्ध नाटककार श्रीयुत गोविन्द वल्लभ पन्त की कृपा का फल हैं। इस लिए मैं इन सब सज्जनों का और श्रीयुत कानिटकर की स्वर्गस्थ आत्मा का आभारी हूँ। इस पुस्तक की रचना में मुझे सब से अधिक सहायता मेरी धर्म्मपत्नी श्रीमती सुन्दर बाई से मिली है। उनकी सहायता के बिना मेरे लिए इस पुस्तक का लिखना बहुत दुष्कर था। कारण यह कि मेरा मराठी भाषा-ज्ञान बहुत अल्प है। अतएव मेरे लिए नाटकों की ठेठ मराठी बोली को समझना कठिन था। श्रीमती जी की मातृ-भाषा मराठी होने से उन्हों ने यह काम मेरे लिए सरल कर दिया। इस के लिए मैं उन का भी बहुत कृतज्ञ हूँ।

श्रीयुत नारायण श्यामराव चिताम्बरे ने ऐतिहासिक गवेषणा पूर्ण प्रस्तावना लिख कर जहाँ पुस्तक का मूल्य बढ़ा दिया है वहाँ मुझे भी बहुत उपकृत किया है। नाटक में वर्णित घटनावली ऐतिहासिक रूप से अक्षरशः सत्य नहीं कही जा सकती। कथानक को रोचक बनाने के लिए इस में कल्पना को स्थान देना आवश्यक था।

साहित्य-सदन,
कृष्णानगर—लाहौर।

सन्तराम

प्रस्तावना

हिन्दू-जीवन की समस्या ! हिन्दू-जीवन की समस्या !! यह समस्या आज की नहीं, शताब्दियों से अपना भीषण रूप लेकर हमारे सम्मुख उपस्थित है । इस समस्या को हल करने के लिये—भारतवर्ष को लगे हुए इस रोग का—संक्रामक रोग का—समूल नाश करने के लिये आज तक कितने ही प्रयत्न किये गये। राजपूताने की वीर बालाएँ हँसते-हँसते इसी लिये चिता में स्वाहा हो गईं। केसरिया बाना पहन कर, जीवन का तनिक भी लोभ न करके, राजपूताने के वीर नवयुवक हँसते-हँसते रणाङ्गण में सदा के लिये सो गये। किन्तु यह समस्या हल नहीं हो सकी। स्वदेश-प्रेम के नशे में चूर, तथा इस समस्या को मिटाने के प्रयत्न

पुत्रियों को यवनों के यहाँ खून का घूँट पीकर भेज दिया। उन ललनाओं का हृदय रो रहा था, किन्तु उनके सम्मुख हिन्दू-जीवन की समस्या थी। इसी समस्या की जलती हुई चिता में उन्होंने अपनी भावनाओं का, हृदय का, धर्म का, सुख का, प्रेम का बलिदान कर दिया, फिर भी यह समस्या हल नहीं हो सकी। महाराष्ट्र में भी इस समस्या को मिटाने के लिये कम बलिदान नहीं हुए। महाराजा छत्रपति संभाजी का आलमगीर के सम्मुख 'स्वधर्मे निधनं श्रेयः' कहना आज भी हमारे कानों में प्रतिध्वनित हो रहा है। श्री छत्रपति शिवाजी महाराज ने बजाजी निम्बालकर और नेताजी पालकर को शुद्ध करके हिन्दू-धर्म की दीक्षा देकर महान् आदर्श की स्थापना की थी। (ये दोनों मरहठा सरदार मुसलमान हो गये थे) किन्तु अल्प समय पश्चात् ही समाज ने वे आदर्श भुला दिया। और वह समस्या—हिन्दू-जीवन की समस्या—ज्यों की त्यों बनी रही। इस समस्या को हल करने में भारत अपनी समस्त शक्ति खो बैठा है। फिर भी वह नहीं मिटी—नहीं मिटी। और आज भी अपना उग्र रूप लेकर हमारे सम्मुख उपस्थित है।

महाराष्ट्रीय इतिहास-संशोधक श्रीयुत सर देसाईजी और कतिपय विद्वानों ने यह निर्विवाद सिद्ध कर दिया है कि दूसरे पेशवा बाजीराव बल्लाल ने मस्तानी नामक एक मुस्लिम युवती

को अपने घर में रख लिया था। मस्तानी का पेशवा के घर में प्रवेश होने से महाराष्ट्र के राजकीय व्यवहार पर तथा बाजीराव के जीवन पर और पर्याय से हिन्दू-जीवन की समस्या पर क्या परिणाम हुआ, इसका दिग्दर्शन करा देने का मेरा विचार है।

मुस्लिम इतिहास-लेखक इस सम्बन्ध में चुप हैं। ग्रांड डफ मस्तानी के नाम से हमें परिचित नहीं कराता है। अपने इतिहास में केवल वह यह बतलाता है कि बाजीराव का पुत्र शमशेर बहादुर यवनी से उत्पन्न हुआ था। किन्तु पेशवाओं के समय के जो कागज उपलब्ध हुए हैं उनमें इस मस्तानी का उल्लेख स्पष्टतया आया है। फिर भी मस्तानी कहाँ से और किस तरह बाजीराव के गले पड़ी, यह प्रश्न विवादास्पद है।

श्री कृष्णाजी विनायक सोहनी अपने 'पेशव्यांची बखर' नामक इतिहास में मस्तानी के सम्बन्ध में लिखते हैं कि सादतखान नामक मुग़ल सरदार का पराजय बाजीराव के कनिष्ट बन्धु चिमणा जी बल्लाल ने किया। उस समय उसकी मस्तानी नामक वेश्या विष खाकर प्राण देने लगी। मरहटा सैनिकों ने उसे विष नहीं खाने दिया और चिमणाजी के सामने पेश कर दिया। उन्होंने उससे पूछा कि तुम विष खाकर क्यों प्राण त्याग रही थी? उस समय मस्तानी ने कहा—'मेरी सम्हाल करने वाला चला गया, अब मैं जीकर क्या करूँगी? श्रीमान् उनके समान मेरा

हाथ पकड़ें तो रह सकती हूँ।' किन्तु संयमशील चिमणाजी ने यह बात अस्वीकृत कर दी और उससे कहा कि बाजीराव बुन्देल खण्ड गये हैं, उनके आने पर तुम्हारा न्याय होगा।

बाजीराव के बुन्देलखण्ड से आने पर चिमणाजी ने मस्तानी के सम्बन्ध में उनसे जिक्र किया। बाजीराव ने उसे बुलवाया। वह उनके सम्मुख उपस्थित की गई। मस्तानी रूप की रानी थी। उसके अङ्ग-प्रत्यंग से सौंदर्य फूटा पड़ रहा था। रोम-रोम से कान्ति बरस रही थी। बाजीराव ने कहा—'तुम्हारा नाम क्या है?' मस्तानी ने अनुभव किया जैसे बाजीराव का स्वर काँप रहा है, उसने सलज्ज भाव से कहा—'मस्तानी'। बाजीराव ने अनुभव किया, मस्तानी के शब्दों में कातरता स्पष्ट है। बाजीराव ने अचानक कह दिया—'तुम मेरे पास रह सकती हो।' चतुर मस्तानी ने बाजीराव के हृदय की भावनाओं को पहचान लिया। वह लाड़ से बोली—'महाराज मेरी एक इच्छा है।' उन्होंने पूछा—'वह क्या?' वह बोली—'मुझे जो पुत्र हो उसे राजपुत्र की तरह मान मिलना चाहिये और राज्य का भाग भी।' बाजीराव ने इसे स्वीकार करके उसे रख लिया।

एक इतिहास-संशोधक मस्तानी के सम्बन्ध में दूसरा ही विचार रखते हैं। बुन्देला सरदार महाराजा छत्रसाल पर जब महम्मद खान बंगश ने चढ़ाई की उस समय बाजीराव से महाराजा

छत्रसाल ने सहायतार्थ याचना की। साठ वर्ष पूर्व जिस वीर छत्रसालने छत्रपति श्री शिवाजी महाराज से स्वराज्य-स्थापना के सम्बन्ध में विचार-विमर्श किया था, वही वीर छत्रसाल वृद्धावस्था के कारण अब महम्मद खान से युद्ध करने में असमर्थ हो गया था। राजपूताने में उस समय आपसी फूट का ज़ोर था। एक दूसरे को नीचा दिखाने में ही उनकी इतिकर्तव्यता शेष रह गई थी। छत्रसाल को भरोसा था मरहठों का। उस समय मरहठों की शक्ति असीम थी। उसने बाजीराव को चिट्ठी लिखकर निम्न लिखित एक दोहा भी लिख भेजा—

जो गत ग्राह गजेन्द्र की, सो गत भई है आज।
बाजो जात बुंदेल की, राखो बाजी लाज॥

तारीख १३ मार्च १७२९ को बाजीराव एकदम छत्रसाल के पास पहुँच गया और उसने महम्मद खान बंगश को मार भगाया। महाराजा छत्रसाल इस विजय से बहुत खुश हुए। उन्होंने बाजीराव का खूब सम्मान किया। अपने राज्य के तीन भाग करके एक भाग बाजीराव को और दो अपने पुत्रों को दिये। दोनों पुत्रों को बाजीराव के सुपुर्द करके बाजीराव से विनती की—'यह तुम्हारे भाई हैं, इनकी आजन्म सँभाल की जावे।'

अपने राज्य का आधा भाग बाजीराव को अर्पण करने के

अतिरिक्त छत्रसाल ने उनको अपार सम्पत्ति भी दी और मस्तानी नामक वेश्या भी अर्पण की। उस समय नाचने-गाने में निपुण स्त्रियाँ राजाओं के यहाँ उनके मन-बहलाव के लिए रहती थीं। मस्तानी भी उनमें से एक थी, और उसके रूप-गुण पर मोहित होकर बाजीराव ने उसे अपने साथ ले लिया।

स्वयं श्री सर देसाई जी का मत कुछ और ही है। उनका कहना है कि उस समय सुन्दर और तरुण युवतियों को नृत्य-गायन में निपुण करके उन्हें राजाओं को अर्पण करके धन कमाना कितने ही लोगों ने अपना पेशा बना लिया था। किसी ऐसे ही व्यावसायिक मनुष्य से उन्होंने मस्तानी को माँग लिया था। श्री सर देसाई जी ने इस सम्बन्ध में एक पत्र भी प्रकाशित कराया है। उसका आशय इस प्रकार है—

साहब (बाजीराव) विजय सम्पादन करके स्वदेश आये। हमें भी आनन्द है। इसमें तनिक भी सन्देह हो तो साहब के श्री चरणों की शपथ खाता हूँ। हमारी जैसी चाहिये पूछ-ताछ नहीं की गई। इधर ज़ोरों की अफवाह है कि लड़की (मस्तानी) हमसे हर ली गई। इस लिए ऐसा न करके दो महीने के लिए भेज दीजिये। फिर जल्दी ही भेज दी जायगी। मैंने श्री चरणों का आश्रय ग्रहण किया है। श्रीमान् पाचारण करेंगे सेवा में उपस्थित होऊँगा।

इस पत्र का लेखक अज्ञात है। फिर भी सन् १७२६ में ही बाजीराव दिग्विजय प्राप्त करके पूना लौटे थे। उसी समय का यह पत्र है। इससे कहा जा सकता है कि मस्तानी महाराजा छत्रसाल की ओर से बाजीराव के पास नहीं आई। मैं स्वयं भी श्री सर देसाई जी के इस मत से सहमत हूँ। मस्तानी के जीवन का अध्ययन करने पर एक बात स्पष्टतया दृष्टिगोचर होती है कि वह बाजीराव को अन्त तक पति के रूप में ही देखती रही। इस भाव का बीजारोपण यौवन के प्रवेश-द्वार में तथा हृदय-स्थित कोमल भावनाओं के विकास के पूर्व ही होना सम्भव हो सकता है। बाल्य और यौवन के सन्धिकाल में ही मस्तानी ने बाजीराव के जीवन में प्रवेश किया था। यौवन का मध्यकाल निकल जाने पर और रूप के बाज़ार में बैठी वेश्या से पति-प्रेम—वह भी मस्तानी जैसी से— की आशा करना असम्भव सा है।

मस्तानी को बाजीराव कहाँ से लाये, इस में मतभेद हो सकता है। किन्तु मस्तानी बाजीराव के पास थी, यह त्रिकाल सत्य है और उसके बाजीराव के गृह में प्रवेश करने का समय भी १७२६ ही है। श्री सर देसाई महोदय ने इसे बिलकुल सिद्ध कर दिया है।

सन् १७२६ ई० में बुँदेलखण्ड से पूना वापिस आने पर, बाजीराव ने पूना में सन् १७३० में एक 'शनिवार बाड़ा' नामक महल बनवाना शुरू किया। उस में मस्तानी के लिए एक छोटा

किन्तु सुन्दर महल बनवाया था। वैसे ही दिवाघाट के नीचे मस्तानी के नाम से उन्होंने एक सुन्दर महल बनवाया था, जो आज भी वहाँ अपनी निराली छटा दिखला रहा है।

सन् १७३० ई० की जनवरी में बाजीराव के पुत्र बालाजी उर्फ नानासाहब का विवाह सुसम्पन्न हुआ। उसमें जो नई पोशाकें बनवाई गयीं थीं उनकी एक सूची में 'मस्तान कलावंत' का नाम लिखा हुआ है। उस सूची का कुछ भाग इस प्रकार है—"लग्न विवाह सम्बन्धे देहनगी खर्च,मिसकीन मस्तान कलावंत रु० १००)। राघोनटवा १००)। बाबू गुरव २०)। मिसकीन मस्तान कलावंत यास सनगे पेसवजा सुटेशालू ३ दर १०) व रुपये ४०) टुपटे २ मिलून सनगे ५) रु० ७० शिवाय देहनगी वस्त्रें रु० १३३) दिया मिसकी मस्तान—३० तिवट ६, २५ पासोदी ताड़पत्री ८ साड़ी २० नागोजी पासोदी ताड़पत्री व ५० ओढण्या २ मिलून नग १०।" इस से स्पष्ट है कि मस्तानी नामक मुस्लिम स्त्री बाजीराव के पास अवश्य थी।

बाजीराव जब बुंदेल-खण्ड से वापस आये तब उनके विजय-सम्पादन की खुशी में पूना में आनन्द का समुद्र उमड़ पड़ा था। पूना में वह दिवस विजयादशमी का था और रात दीपावली की थी। प्रत्येक मनुष्य आनन्द में उत्फुल्ल दिखाई देता था। किंतु जब अल्प समय पश्चात् मस्तानी के सम्बन्ध में लोगों

ने सुना तो वह एक दूसरे की ओर सशंक दृष्टि से देखकर काना-फूसी करने लगे। धर्म-प्रधान भारतवर्ष देश में—तिसमें सबसे अधिक धर्म की कठोरता का पालन करने वाले महाराष्ट्र में—उस समय किसी मुसलमान को छू जाना अपवित्र माना जाता था और सचैल स्नान करके शरीर की शुद्धि कर ली जाती थी। तब किसी मुस्लिम युवती को अर्द्धाङ्गिनी बनाना धार्मिक क्रांति के लिए पर्याप्त था। सारे महाराष्ट्र में इस वार्ता से हलचल मच गई। बाजीराव की माता राधाबाई के हृदय पर, जिसका सारे महाराष्ट्र पर आतङ्क था, गहरी चोट लगी। रूढ़ि-संगत धर्म के संकुचित वातावरण में रहने वाली वह वृद्धा इसे न सह सकी और अपने पुत्र के इस कार्य पर अत्यन्त रुष्ट हो गई।

सुख और समाधान का जिस घर में साम्राज्य था उसमें मस्तानी के प्रवेश से भूकम्प के धक्के आने लगे। बाजीराव के इस कार्य पर किसी ने सन्तोष प्रकट नहीं किया। महाराष्ट्र के निवासी, माता राधाबाई, छत्रपति साहू महाराज, यहाँ तक कि उनके पुत्र बाला जी (नाना साहब) भी उनसे नाराज़ हो गये। बाजीराव के अनुज चिमणाजी अप्पा ने उनके इस कार्य का विरोध नहीं किया, तो सन्तोष भी प्रकट नहीं किया। किंतु बाजीराव के कार्य का स्वागत करने वाला एक हृदय था। वह हृदय, जिसका अलौकिक चमत्कार, त्यागमय पवित्र चित्र आज

बीसवीं सदी में भी कभी कभी हमें दृष्टि-गोचर हो जाता है। पति के लिए सर्वस्व न्योछावर करने वाला वह आर्य ललना का पुण्यमय हृदय था। पति-परायणा काशीबाई ने मस्तानी का प्रेममय, आनन्दमय हृदय से स्वागत किया। उस उदार-हृदया ने कभी अपने जीवन में मस्तानी का तिरस्कार नहीं किया। मस्तानी को बाजीराव प्राणों से भी अधिक चाहते थे, फिर भी उन्होंने काशीबाई की कभी अवहेलना नहीं की। मस्तानी के आगमन के पूर्व जो प्रेम उस पर था वह उसके आने पर भी आजन्म उसी रूप में रहा।

मस्तानी के आगमन से पेशवा के घर में आग धधक उठी। और वह तब और अधिक भड़की, जब कि सन् १७३४ में मस्तानी के पुत्र उत्पन्न हुआ, जिसका नाम शमशेर बहादुर रखा गया।

मस्तानी सन् १७२६ से १७३६ के अन्त तक दस वर्ष पर्यन्त बाजीराव के साथ रही। किन्हीं किन्हीं इतिहास-लेखकों का उन पर यह आक्षेप है कि इन दस वर्षों में उन्हों ने कोई विशेष कार्य नहीं किया। वह दिन उन्होंने सुखोपभोग में, विलास में बिता दिये। किन्तु महाराष्ट्रीय इतिहास का सूक्ष्मतया परिशीलन करने पर यह सिद्धान्त केवल कपोल-कल्पना सिद्ध होता है। मस्तानी के आने पर भी सन् १७३८ तक वह दूर देशों में विजय सम्पादन कर रहे थे। इसी साल भोपाल के पास उन्होंने निज़ाम को बुरी तरह

हराया था और उसकी अपार सम्पत्ति का अपहरण किया था। हाँ, सन् १७३८ से १७४० तक दो वर्ष पर्यन्त ज़रूर उन्होंने कोई कार्य नहीं किया। और यही दो वर्ष सामाजिक तथा धार्मिक दृष्टि से उनके जीवन में महत्व के हैं।

शमशेर बहादुर इस समय चार वर्ष का हो चुका था। उसकी सुन्दरता अनुपम थी। बाजीराव का उस पर निरतिशय प्रेम था। काशीबाई से उत्पन्न उनका रघुनाथ राव नामक पुत्र भी शमशेर बहादुर के समवयस् था। दोनों ही साथ-साथ खेलते थे और दोनों को बाजीराव समान दृष्टि से देखते थे। किंतु उनके कुटुम्ब के और लोग उसे छूते तक नहीं थे। सम्भव है मस्तानी के पुत्र न होता तो बाजीराव का जीवन इतना कंटकमय और दुःखद न होता। शमशेर बहादुर के जन्म से ही पेशवा के घर में बाजीराव और उनके कुटुम्बियों में मनमुटाव हो गया। बाजीराव की हार्दिक इच्छा थी कि जिस प्रकार रघुनाथ राव के चौल, उपनयन आदि संस्कार लाड़ से किये जाते हैं, उसी प्रकार शमशेर बहादुर के भी किये जावें। केवल इस कारण कि मस्तानी अविवाहित एवं मुसलमान है, उसके पुत्र का तिरस्कार किया जाना, समाज से बहिष्कृत किया जाना, उनको मान्य नहीं था। उन्होंने अनेक देश देखे थे, वहाँ की धार्मिक, सामाजिक, राजकीय स्थिति का अध्ययन किया था। अतएव उनकी धार्मिक एवं

सामाजिक भावनाएँ बदल जाना स्वाभाविक ही था। उनके हृदयाकाश में धर्म के संकुचित रूप का अस्त होकर उस के विशाल रूप का उदय होगया था। श्री सर देसाईजी के इस विषय में निम्न विचार हैं—

"हिंदुस्तानभर स्वार्‌या करून ठिक ठिकाणचे रीति रिवाज बारकाई ने अवलोकन केल्या वर त्याच्या मनांत कधी कालीं प्रखर कर्मनिष्ठ प्रेम असेल तर तें मुसल्मानांच्या संसर्गाने लयास गेलें होतें। बारा बन्दर चे पाणी प्यालेला बाजीराव एखाद्या भिक्षुकास किंवा सोवल्या आजीबाई स थोड़ाच जुमानणार।"

अर्थात् बाजीराव हिन्दुस्तान भर में घूम कर जगह-जगह के रीति-रिवाजों का सूक्ष्मदृष्टि से अवलोकन कर चुका था। इस लिए यदि उस में पहले कुछ धार्मिक संकीर्णता थी भी तो वह मुसलमानों के संसर्ग से सब दूर हो चुकी थी। जो बाजीराव बारह बंदरगाहों का पानी पी चुका था वह एक आध भिक्षुक ब्राह्मण या पुराने ढर्रे की किसी बुढ़िया की बातें कहाँ मान सकता था।

इस से स्पष्ट है कि उनकी धार्मिक भावनाओं में अद्‌भुत परिवर्तन हो गया था। वैसे ही भारतवर्ष के हित की दृष्टि से हिन्दू-मुस्लिम एकता का प्रश्न भी उनके सम्मुख था। उन्होंने कई बार उत्तर भारत में चढ़ाइयाँ की थीं, और राजपूताने के अतीत की कहानियाँ भी सुनी थीं। हिन्दू मुस्लिम एकता का प्रश्न हल

करने के लिए देशभक्त राजपूतों ने अपनी पुत्रियों का डोला मुसलमानों को दिया था, तो बाजीराव ने मुसलमान स्त्री को अपने घर में रख कर उसकी सन्तान को हिन्दू-धर्म के अनुसार संस्कार कराना ठान लिया था। यह हिन्दू-मुस्लिम एकता के स्थापनार्थ उनका एक प्रयोग कहा जा सकता है।

रघुनाथराव के उपनयन (जनेऊ) के साथ-साथ शमशेर बहादुर का भी उपनयन करने का प्रस्ताव बाजीराव ने महाराष्ट्र के पुरोहित तथा अपनी माता के सम्मुख रखा। कितने ही दिनों तक इस पर वाद-विवाद होता रहा। अन्त में उनका यह प्रस्ताव बड़ी निर्दयता के साथ ठुकरा दिया गया। तलवारों की झनझनाहट तथा तोपों की गड़गड़ाहट में सदैव चट्टान की तरह अटल खड़े रहने वाले बाजीराव का दृढ़ हृदय चूर-चूर हो गया। गहरी चोट लगी थी, जिसका घाव भरना नितान्त असम्भव हो गया। देसाई महाशय के कथनानुसार 'बाजीराव के साथ किसी की सहानुभूति नहीं थी। इसका परिणाम बहुत भयानक हुआ। ब्राह्मण के घर में शमशेर बहादुर मुसलमानी वेष में रह कर उन्हीं के आचार-विचार का पालन करने लगा और बाजीराव महाराष्ट्र का तेजस्वी सूर्य मलिन हो गया था। महाराष्ट्र ने अन्धे होकर उसकी भावनाओं का समयोचित आदर नहीं किया। एतदर्थ बाजीराव को मानसिक यातनाएँ होने लगीं। उन्हें भूलने के लिए वह मदिरा का सेवन

करने लगा, और अन्त में मदिरा के साथ-साथ मांस का उपयोग भी पर्याय से आरम्भ हो गया।" बाजीराव के इस आचरण की चर्चा अखिल महाराष्ट्र में फैल गई और उन्हें जातिच्युत करने का विचार महाराष्ट्र के धर्म के ठेकेदारों ने निश्चित कर लिया। तब भयभीत होकर नाना साहब, राधाबाई, चिमणाजी बाजीराव को मुक्त करने का उपाय सोचने लगे। उन्होंने बाजीराव को प्रायश्चित लेकर शुद्ध होने के लिए प्रेरित किया। किन्तु बाजीराव मस्तानी को छोड़ने पर राज़ी नहीं हुए। तब नाना साहब ने मस्तानी को पकड़ कर कैद में डाल दिया। किन्तु वह छूट कर ता० २४ नवम्बर १७३६ में पाटस गाँव में बाजीराव के पास चली गई। नाना साहब का यह प्रथम प्रयास असफल रहा।

सन् १७४० के माघ महीने में रघुनाथराव का उपनयन संस्कार और सदाशिवराव (चिमणाजी अप्पा के पुत्र) का विवाह करने का विचार स्थिर हो गया था। पूना तथा महाराष्ट्र के शास्त्री पण्डितों ने पेशवा के घर जाने से इनकार कर दिया। तब नाना साहब के सम्मुख जटिल समस्या उपस्थित हो गई। वह मस्तानी पर अत्यन्त क्रोधित हो गये। वह किसी कार्यवश पूना आई थी और बाजीराव अपना टूटा हृदय लेकर पूना के आस-पास घूम रहे थे। नाना साहब ने मस्तानी को फिर कैद में डाल

दिया। विवाह और उपनयन दोनों समारम्भ आरम्भ किये गये। बाजीराव को भी इसमें सम्मिलित नहीं किया गया।

बाजीराव को जब इस घटना का पता चला तो वह अपने इस तिरस्कृत जीवन से निराश हो गया। अपमान का शल्य उसके जर्जरित हृदय में चुभने लगा। संसार के कटुतर व्यवहार से ऊब कर वह मरना चाहता था। दो मास पश्चात् ही ता० २८ अप्रैल १७४० को नर्मदा नदी के पास रावेर खेड़ी में देशभक्त बाजीराव की आत्मा अनन्त में विराम पा गई!

उस समय मस्तानी जेलखाने में अपनी अवस्था पर आँसू बहा रही थी। सुन्दरी मस्तानी बाजीराव को प्राणों से भी अधिक चाहती थी। वह पतिनिष्ठ थी। अपने जीवन में कभी उसने अपनी सौत काशीबाई का, सास राधाबाई का, या पेशवा के किसी कुटुम्बी का हृदय नहीं दुखाया। न कभी बाजीराव को मुसलमान हो जाने की सलाह दी, जैसा कि प्रायः मुस्लिम युवतियाँ किया करती हैं। एक आर्या स्त्री की तरह उसने अपना सारा जीवन बाजीराव पर न्योछावर कर दिया था।

बाजीराव की मनस्थिति की ओर लक्ष करके नाना साहब, राधाबाई एवं चिमणाजी अप्पा ने ठहराया कि मस्तानी को बाजीराव के पास भेज देने में ही खैर है। अन्यथा परिस्थिति के विकट हो जाने की सम्भावना है। उन्होंने मस्तानी को छोड़ दिया।

किन्तु हाय ! वह प्रेमपरायणा अपने प्रेमदेवता से न मिल सकी और उसने पावल ग्राम में सुना कि उसका पति—उसका देवता—उसका सर्वस्व उसे छोड़ स्वर्गधाम सिधार गया है। तब वह प्रेम की देवी एकदम अचेतन होकर गिर पड़ी और अल्प समय पश्चात् ही उसके प्राण पँखेरू उड़ गये। आज भी उसकी समाधि पावल ग्राम में वर्तमान है,—श्री सर देसाईजी।

श्री सोहनी जी अपने इतिहास में लिखते हैं कि मृत्यु के समय मस्तानी बाजीराव के पास थी, किन्तु यह सयुक्तिक नहीं है। उसमें परस्पर विरोधी अनेक बातें हैं। श्री सर देसाईजी ने जो कुछ लिखा है वह साधार और सयुक्तिक है। अतएव वही सर्वमान्य हो सकता है ।

यह है मस्तानी की दुःखान्त कहानी। श्री इतिहासाचार्य सर देसाई जी ने अपने इतिहास में इस घटना का खूब बारीकी से विस्तृत वर्णन किया है, और उस समय के पत्र भी प्रकाशित किये हैं। किसी इतिहासकार ने इस सम्बन्ध में इतनी खोज-बीन नहीं की। इन्हीं के ही अथक परिश्रम का फल है कि एक अतीत का सत्य हमारे सम्मुख स्पष्ट रूप से विद्यमान है।

अब देखना यह है कि महाराष्ट्र के भाग्य-विधाता बाजीराव के जीवन में मस्तानी के प्रवेश से क्या प्रभाव पड़ा, और हिंदू-जीवन की समस्या उलझी या सुलझी। इसको जानने के लिए प्रथम हमको उस समय के महाराष्ट्र की राजकीय परिस्थिति का

सिंहावलोकन करना होगा। महाराष्ट्र की स्थिति उस समय बड़ी डाँवाडोल थी। छत्रपति श्री शिवाजी महाराज के स्वराज्य-स्थापन करने के पश्चात् कोई सुयोग्य स्वराज्य-चालक एवं वर्धक उत्पन्न नहीं हुआ। उनके पुत्र श्री छत्रपति संभाजी महाराज पराक्रमी थे, वीर थे, किंतु उनमें राज-कारण का सर्वथा अभाव था। स्वराज्य की उन्नति में बाधा पड़ गई और आलमगीर ने छत्रपति संभाजी महाराज का क्रूरता से वध कर दिया। तब स्वराज्य में विशृङ्खलता उत्पन्न हो गई। सन् १६८६ से सन् १७२१ पर्यन्त महाराष्ट्र की स्थिति में स्थैर्य नहीं था। यह दिन महाराष्ट्र के दुर्भाग्य के दिन थे। आपसी फूट, स्वार्थ का ज़ोर, सुयोग्य नेता का अभाव आदि कारणों से स्वराज्य के अस्तित्व के सम्बन्ध में भी आशङ्का उत्पन्न हो गई थी। किंतु उस समय के देशभक्त वीरों ने तथा छत्रपति श्री राजाराम महाराज ने अथक परिश्रम करके इस आपत्ति-काल में उसकी तन, मन, धन से जैसे तैसे रक्षा की। फिर भी श्री शिवाजी महाराज के अनन्तर महाराष्ट्र में कोई स्वराज्य-वर्धक वीर सन् १७२१ तक उत्पन्न नहीं हुआ। महाराज श्री शिवाजी का व्रत—स्वराज्य-संस्थापना का महान् व्रत—बाजीरावने अपने अपूर्व युद्ध-कौशल से, अनुपम राजनीति से और महान् स्वार्थ-त्याग से अन्त तक प्राण-प्रण से निभाया। उन्होंने अनेक देश जीत कर स्वराज्य का खूब विस्तार किया और महाराष्ट्र में शान्ति स्थापन

की। सन् १७२१ से १७४० तक १६ वर्ष के अल्प काल में ही महाराष्ट्र की धाक सुदूर मालवा, बुँदेलखण्ड तक जमा दी, और उत्तर भारत के मुसलमान तथा राजपूतों ने मरहठों का लोहा मान लिया।

किंतु छत्रपति श्री शिवाजी महाराज को जिस रूप में महाराष्ट्र ने देखा था वह दृष्टि बाजीराव के समय में नहीं रह गई थी। मुसलमानों के आतङ्क से सारा महाराष्ट्र त्राहि-त्राहि पुकार उठा था। धर्म का उच्छेद, आर्य स्त्री का सतीत्व-हरण, लूट-मार इत्यादि के कारण महाराष्ट्र की उस समय अत्यन्त दयनीय अवस्था हो गई। ऐसे समय में महाराज शिवाजी को लोगों ने देवता के रूप में देखा। उनकी भावना हो गई थी कि यह अवतारी पुरुष हैं। उनको पाकर महाराष्ट्र निहाल हो गया तथा उनकी प्रत्येक आज्ञा सर-आँखों मानने लगा था। किंतु वही महाराष्ट्र स्वराज्य की स्थापना हो जाने पर—सामाजिक स्थिरता उत्पन्न हो जाने पर—दूसरी ही भाषा बोलने लगा। जिस महाराष्ट्र ने शिवाजी के समय में बजाजी निम्बालकर तथा नेताजी पालकर को मुसलमान से हिंदू बनाने की धार्मिक उदारता दिखाई थी, जिस महाराष्ट्र ने माता जीजाबाई की यह आज्ञा, कि 'स्वराज्य के लिए इन दोनों सरदारों को हिंदू बनाना अत्यन्त आवश्यक है', सहर्ष अपनाई थी, वही महाराष्ट्र बाजीराव के समय में शमशेर बहादुर का उपनयन-संस्कार

कराने पर राज़ी नहीं हो सका। आश्चर्य तो यह कि बाजीराव की माता राधाबाई का ही इसमें विशेष हाथ था। ७५ वर्ष में ही महाराष्ट्र की सामाजिक तथा धार्मिक परिस्थिति का यह परिवर्तन देख दाँतों तले उँगली देनी पड़ती है।

जिस बाजीराव ने अपनी सारी आयु स्वराज्य-संपादन में खर्च कर दी, जिस बाजीराव ने अपना सारा का सारा जीवन स्वराज्य की वृद्धि में उत्सर्ग कर दिया, जिस बाजीराव ने अपने प्राण भी स्वराज्य पर न्योछावर कर दिये, जिस बाजीराव ने महाराष्ट्र का मुख अखिल जगत् में उज्ज्वल कर दिया; जिसने महाराष्ट्र को जगत् के इतिहास में अमर बना दिया, उसी बाजीराव की अल्प इच्छा महाराष्ट्र पूर्ण न कर सका! धर्म के संकुचित विचारों के वशीभूत होकर उसकी यह इच्छा महाराष्ट्र ने ठुकरा दी। उनको अपने अपूर्व त्याग का पुरस्कार मिला—जाति से बहिष्कृत होना। महाराष्ट्र की इस दूषित मनोवृत्ति के कारण वे अपने पुत्र के उपनयन समारम्भ में सम्मिलित नहीं हो सके, नहीं किये गये। ७५ वर्ष पूर्व जिस महाराष्ट्र ने स्वराज्य के लिये धर्म के इस सीमित रूप को दूर फेंक दिया था, वही महाराष्ट्र स्वराज्य जाये चाहे रहे, उसे छाती से लगाये था।

हम तो इसका दोष महाराष्ट्र को देने के बजाय राधाबाई तथा नाना साहब को ही देंगे। लोकापवाद से डर कर उन्हें बाजी-

राव तथा मस्तानी से छल नहीं करना चाहिये था। राधाबाई के सम्मुख माता जीजाबाई का चरित्र था। क्या यह सम्भव नहीं कि बजाजी निम्बालकर तथा नेताजी पालकर को शुद्ध करने के विचार से जनता में धार्मिक उच्छृङ्खलता उत्पन्न नहीं हुई होगी? ज़रूर उत्पन्न हुई होगी। किंतु चतुर जीजाबाई तथा राजनीति-निपुण शिवाजी ने स्वराज्य की उपयोगिता समझा कर धर्म के सच्चे स्वरूप का दिग्दर्शन उनको कराया था। इसी आदर्श को सम्मुख रख कर राधाबाई तथा नाना साहब जनता के विचलित हृदय में राजकीय भावनाओं को भर कर शान्ति उत्पन्न कर देते तो मस्तानी के पुत्र शमशेर बहादुर का उपनयन-संस्कार करा देने पर धार्मिक क्रान्ति का बवण्डर उठना कितना असम्भव होता। पेशवा जैसे प्रसिद्ध नेता का प्रचलित किया हुआ आदर्श समाज में रूढ़ि हो जाता और हिंदू-जीवन की समस्या आज कुछ सुलझी हुई नज़र आती।

गुना—ग्वालियर] नारायण श्यामराव चिताम्बरे

वीर पेशवा

नाटक के पात्र

नट

बाजीराव—महाराष्ट्र ब्राह्मण और पेशवा।

होलकर और शिंदे—दो मराठा सरदार।

जाधवराव—मराठा सरदार, धन्नाजी जाधव का पुत्र।

रामू—जाधवराव का नौकर।

नाना साहब—बाजीराव का पुत्र।

गोवर्धन राव पन्त—बाजीराव का एक अफसर।

आत्माराम—बाजीराव का नौकर।

भाऊ साहब—बाजीराव की सेना का एक बड़ा सरदार।

शमशेर बहादुर—मस्तानी के पेट से बाजीराव का पुत्र।

शाहूजी—संभाजी का पुत्र, मराठों का राजा।

प्रतिनिधि—शाहू जी का एक राजकर्मचारी।

निज़ाम—हैदराबाद दक्खिन का मुसलमान शासक।

शहबाज़खाँ—निज़ाम का एक अधिकारी।

नटी

मस्तानी—एक मुसलमान स्त्री के पेट से उत्पन्न हुई बुन्देलखण्ड के राजा छत्रसाल की लड़की।

इन्दुमती—मस्तानी की धर्म्म-बहन।

काशीबाई—बाजीराव पेशवा की स्त्री।

मालती—काशीबाई की दासी।

वीर पेशवा

(नाटक)

अंक पहला

प्रवेश पहला

नान्दी— (मंगलाचरण)

जय जय करुणानिधान जग-विधान प्यारे !
जय जय जय विश्वकाम धर्म ध्रुव दुलारे ।
तेरे ही भ्रू-विलास जंगम जड़ का निवास ।
आस पास क्लेश नाश हुए हैं हमारे ।
जय जय करुणानिधान०

सत्पथ मथ वेद ज्ञान भासित भुवि मूर्तिमान
कुण्ठित के ज्ञान ध्यान तुम्हीं मम सहारे ।
जय जय करुणानिधान जग विधान प्यारे !

नाटक, नट, रंग मंच, कविता के कल प्रपंच
संचित-रुचि राग रंग अङ्ग हैं तुम्हारे।
जय जय करुणानिधान जग-विधान प्यारे!

सूत्रधार—सब से प्रथम मैं सर्व विघ्न-विनाशक जगन्नियन्ता को पवित्र प्रेम से नमस्कार करता हूँ। तत्पश्चात् जनता का मनोरञ्जन करने वाले नाटक की रचना में निरत होता हूँ। इस में आर्य वीर बाजीराव पेशवा के चरित्र की रम्य कथा है। यह वीररस-पूर्ण नाटक सुजनों को अर्पण करके मैं अपने को धन्य मानता हूँ।

अपने प्रबल पराक्रमी शूरवीर पूर्वजों के शौर्य का स्मरण दिलाने के लिए मैंने यह क्षुद्र सा प्रयत्न किया है। हे जगदीश्वर, यह व्यर्थ न हो! यद्यपि यह समय स्पष्ट कहने का नहीं। तो भी हे दयामय! ऐसी कृपा कीजिए कि इस का प्रभाव सब दर्शकों के हृदयों पर हो!

[नटी प्रवेश करती है]

नटी—कैसा कठिन समय आया है! परन्तु तुम्हें खेल ही सूझ रहा है। पूर्वकाल का सब वैभव जाता रहा। अब दरिद्रता ने डेरा जमा रक्खा है। हमारी स्वतंत्रता छिन गई। हम पराधीन हो गये। इस दासता की शृङ्खला से हमें मुक्त कराने वाला कोई दिखाई नहीं देता। तुम काहे के पुरुष हो!

तुम महामूर्ख और श्वान किस लिए बन रहे हो ? गर्दन झुकाए क्यों बैठे हो ? तुम्हारे ऐसे जीवन को धिक्कार है ! जिन्होंने स्वदेश की कीर्ति बढ़ाई थी उन्हीं के वंशज हो कर तुमने अपनी लँगोटी भी छिनवा दी ! तुम्हारे भाग्य में दासत्व ही आया है ! पद पद पर तुम्हारा अपमान हो रहा है । तुम्हारा राज-पाट जाता रहा, ऐश्वर्य-वैभव सब नष्ट हो गया । अब हाथ में भिक्षा-पात्र लिए बैठे हो ! महाशयो ! कुछ लज्जा करो, अपना कर्तव्य पहचानो, और दासी की विनती पर ध्यान दो !

सूत्रधार—प्रिये ! आज तू यह क्या कर रही है ? तेरा ऐसा उद्धत व्यवहार मैंने आज ही देखा है ।

नटी—तो क्या मुझे पहले से ही ऐसा उद्दाम होना चाहिए था, आप यह कहते हैं ?

सूत्रधार—छिः, छिः ! तू तो सद्गुणों की खान और शान्त रस की साक्षात् मूर्ति है । तू तो सदा पति के वचनों में लीन रहने वाली है ! फिर तेरा यह व्यवहार कैसा ! सच है, बालरवि की स्निग्ध सुन्दर रश्मिमाला पक्षीकुल को हर्षित और प्रफुल्लित करती है, पर वही नेत्र-रोगियों को दुःख-दायक जान पड़ती है ।

नटी—तब हो चुका! तुम सब भीरु बन गये हो, इसी से हम स्त्रियाँ तुम को उद्धत दिखाई देती हैं।

सूत्रधार—कुछ भी कहो, पर आज तुम सच मुच कुछ पागल हुई हो।

नटी—कुछ नहीं। आप को ही कायरता रूपी शीत के कारण विभ्रम हो रहा है।

शीत से शरीर में शिथिलता आ जाती है, शौर्य-ताप नष्ट होजाता है। हिम-जल में मैंने जान बूझ कर उँगली डाली थी। पता नहीं तुम्हें स्मरण है कि नहीं। तुम ने स्वयं ही हाथ में शस्त्र लेकर उसे काटा था।

सूत्रधार—[स्वगत] यह जो कुछ कह रही है, उसमें रत्ती भर भी झूठ नहीं। पर किया क्या जाय? [प्रकट] प्रिये, तू जो कुछ कहती है वह ठीक है, पर समय का भी कुछ ध्यान रखना चाहिए।

नटी—क्या तुम यही समझते हो? दोष कोई तुम्हारे अकेले का नहीं, वरन् इस भरत-खण्ड के आर्य कहलाने वाले सभी लोगों का है। इस लिए तुम्हीं से नहीं सभी देश-बन्धुओं से विनती करती हूँ। पूर्वजों को तुम भूल गये। सदा दूसरों के गुणगान किया करते हो। तुम ने आलस्य से मित्रता गाँठी है। देखो, यह कितना अनिष्ट हुआ है! घरों में मलिन भाव भर गये हैं। अपने ही हाथ से तुमने आप

आग सुलगाई है। शत्रुदल धर्म्म का नाश कर रहा है। तुम भी उसी का अनुसरण कर रहे हो। तुम्हारे मन में कुछ भी विचार नहीं होता। आर्यों को यह कैसी ऊँघास आई है! क्या कभी आँखें खोलोगे भी या नहीं?

सूत्रधार—हाँ, हाँ! प्रिये धीरे बोलो, धीरे बोलो!

उधर निर्दय मुसलमान बादशाह है। इस अप्रिय वार्ता को सुनकर वह मद्यप की भाँति उमड़ पड़ेगा और हमारा घात कर डालेगा। अब कोई भी बात मुँह से निकालना उचित नहीं। जो कुछ होगा सब देख लिया जायगा।

नटी—[सुन कर डर जाती है] अरे, यह कौन मुआ ढीट!

[परदे में] अरे दुष्ट ब्राह्मण! तू मद्यप कह कर हमारे निज़ाम साहब की निन्दा करता है! ठहर, मैं अभी आकर तेरी खबर लेता हूँ।

सूत्रधार—जैसे कुल्हाड़े की मूठ अपनी सारी वृक्षजाति का काल होती है वैसा ही यह है।

जिसने हिन्दूपति सम्भाजी की प्रभुता यवनों को सौंप दी है, जो देशद्रोही और जाति-घातक है, वही जाधवराव इधर आ रहा है। इस लिए उसके सामने नहीं जाना चाहिए। दुष्ट के सम्मुख होना ठीक नहीं होता।

[दोनों जाते हैं। बाद को क्रोध से भरा हुआ जाधवराव प्रवेश करता है]।

जाधवराव—हे मदान्ध, तू कैसा मतिमंद हो रहा है! ओ मूढ़, तू निज़ाम की निन्दा कर रहा है! जलचर यदि सिंधुसे वैर रक्खेंगे तो, बताओ, उनका जीवन कैसा होगा? अरे मूढ़, तू श्राद्ध खाने वाला भिखारी ब्राह्मण है, युद्ध करना तेरा काम नहीं।

परन्तु बच्चू, याद रख, तेरी यह निन्दा कब तक! जब तक यवनपति निज़ाम शान्ति किए हुए है, तभी तक तू सुरक्षित है। जब तक सिंह आँखें बंद किए बैठता है तभी तक मर्कट बन में ऊधम मचाते हैं। उसके सहज गर्जन से ही वे तुरन्त प्राण छोड़ देते हैं।

हाँ! पर मैं अभी तक कृतघ्न निज़ाम का पक्ष क्यों ले रहा हूँ? फिर उस भिक्षुक ब्राह्मण बाजीराव से भी क्यों मिलना चाहिए? दोनों मेरे वैरी हैं। कारण, राजा शाहू जी मुझ से रुष्ट था। इसी लिए मैंने देशद्रोही बन कर राजा सम्भाजी को निज़ाम के हवाले कर दिया। मेरे इस सारे उपकार को निज़ाम भूल गया है और काले नाग की तरह उलट कर मुझी पर गिर पड़ा है। मेरी ऐसी बुरी स्थिति का कारण जगत् में एक मात्र पाजी बाजीराव है।

अब मेरे लिए तीसरा मार्ग यही है कि अपनी स्वार्थ-सिद्धि के पश्चात् दोनों को अँगूठा दिखाऊँ। परन्तु जाते-जाते वह सुन्दर चिड़िया अचानक उड़ा लेनी चाहिए।

[जाता है]

[इसके पश्चात् नरसिंगा बजता है। बाजीराव, भाऊ साहिब शिन्दे, होलकर, सभी बड़े बड़े सरदार शंकर के दर्शन को आते हैं।]

बाजीराव—[शंकर के दर्शन कर के] हे महेश, आप की कृपा से मैं आज सेना सहित यशस्वी हुआ हूँ। आप हमें सदा ही ऐसी जय-श्री प्रदान करते रहिए! हे ईश, हम आप से ऐसी ही आशा करते हैं! हे स्वामी, आप मेरी प्रजा को सुखी रखिए! हे प्रभु, इसी लिए मैं आपकी पाद-वंदना करताहूँ।

शिन्दे—स्वामिन्, बड़ा ही अच्छा हुआ जो हमें इस मुहिम में विजय प्राप्त हुई। आप के प्रताप से हमें और क्या चाहिए?

होलकर—इस में संशय ही क्या है। उस पामर को भी स्वामी ने खूब मज़ा चखाया है। याद रखो बच्चू, यदि तुम ने फिर कभी हम मराठों को छेड़ा तो देखना क्या होता है! धूर्त्त, हमें सहायता के लिए बुला कर हमारे साथ कपट करता है!

बाजीराव—मेरे वीरो, तुम्हारे जैसे शूरों और तलवार के धनियों के भरोसे ही मेरा सारा व्यूह-बल है।

शिन्दे—[भाऊ साहब से] कहिए भाऊ साहब, तबीयत कैसी है?

अब वह छैला जाधवराव कहाँ है ? स्त्रियों की तरह छिप कर वह कहाँ बैठा है ? वह है किधर ? देखते रहना, मैं उसके मुँह पर थूकूँगा। तुम बड़े महाराजा के साथ कपट कर रहे हो, बच्चू ! सम्भाजी महाराज बहुत भोले भाले हैं। उन बेचारों को कोई भी धोखा दे सकता है। अरे बच्चू, अपने स्वामी को विधर्मी के पंजे में फँसा देने में तुम्हारी क्या वीरता है ?

बाजीराव—जाने दो। उस पाजी का नाम मेरे सामने मत लो।

मेरा तन-मन जल कर कोयला हो गया है। ऐसे नर-वीर के घर में जन्म लेकर उसने अपना जीवन व्यर्थ किया है। उसने अपने कुल को कलङ्कित किया है। ऐसे अधम को धिक्कार है !

भाऊ साहब—महाराज, आपका कहना तो ठीक है, पर उसे इस बात की लज्जा कहाँ है ! आप उसके विषय में क्यों सन्ताप कर रहे हैं ?

बाजीराव—भाऊ साहब, जो दुष्ट मराठा-राज्य को डुबाने के लिए उत्सुक हुआ है उसका नाम सुनकर मुझे क्यों क्रोध न हो आयगा ? मेरा निश्चय आपको मालूम नहीं है क्या ?

ये सब पामर मुझे बड़ी द्रोह-दृष्टि से देखते हैं। जो उन की सहायता करता है मेरे लिए वह भी वैसा ही है। उसका

मुख देख मुझे घिन उत्पन्न होती है। मुझे इतना क्रोध हो रहा है कि जी चाहता है, इसी समय उसका कण्ठ-नावाल काट डालूँ।

शिन्दे—सच है भाऊ साहब! आश्चर्य है उस वीरवर धन्नाजीराव जाधव के घर में इस जाधवराव का जन्म कैसे हो गया! वह हमारे स्वामी से तो बहुत ही बिगड़ रहा है।

होलकर—वह हमारे स्वामी से बिगड़ कर कर ही क्या सकता है? कायर कहीं का! स्त्रियों की भाँति छिप कर बैठा है! मैं ने इस मुहिम में उस की खूब खबर ली होती, पर वह गधा वहाँ से भाग ही गया।

शिन्दे—यह देखो भाऊ साहब! कभी न कभी तो मैं उस की तोंद में यह तलवार घोंप कर उस के प्राण अवश्य लूँगा, कभी नहीं छोड़ूँगा। ऐसा देशद्रोही, अधम कभी इस धरणी पर रहने न पावेगा! इस के लिए यदि स्वामी मुझे सूली पर भी लटका दें तब भी कुछ परवा नहीं।

बाजीराव—सामन्त गण, जो कुछ हम चाहते हैं वह सब थोड़े दिन में हुआ ही चाहता है। आज संध्या को मुझे निज़ाम की ओर से भोजन का निमंत्रण है, यह आप को विदित ही है। उस समय संधि की शर्तें तय होंगी। मैं पहले से ही कहे देता हूँ कि शत्रु पर किसी प्रकार भी विश्वास करना

ठीक नहीं। इस लिए भाऊ साहब, हमें अपने शिन्दे और होलकर को और कुछ दूसरे सरदारों को भी गुप्त सेवकों के वेश में अपने साथ ले चलना चाहिए। जाइए, आप तयारी में लग जाइए।

[भाऊ साहब जाता है]

कहिए शिन्दे साहब और होलकर साहब, तबियत कैसी है ? आप हमारे साथ चलने को तैयार हैं न ?

होलकर—हम तैयार हैं, राव साहब ! इस समय उस निज़ाम से खूब धन लूटना चाहिये। इस के अतिरिक्त संभाजी महाराज और उस पाजी जाधवराव को अपने अधिकार में कर लेना चाहिए।

बाजीराव—उस के सामने मैं बड़ी कड़ी शर्तें रक्खूँगा। यदि उस ने उनको स्वीकार न किया तो पुनः ताबड़तोड़ लड़ाई आरम्भ कर के एक एक शत्रु को हाथ दिखा दूँगा। चलिए।

खगेन्द्र जैसे निर्भय हो कर पन्नग का वध करता है, उसी प्रकार मैं निश्चय ही रणाङ्गण में तीक्ष्ण खड्ग से यवनों का वध करूँगा। रण में यवनों का निकन्दन कर के शत्रु को दहाड़ें मार कर रुलाऊँगा ! यदि मैं अपना यह वचन सत्य न करूँ तो मेरे पितर अधोगति को प्राप्त हों !

देखिए, मैं आर्य-बंधुओं को त्रास देने वाले इन शिखा-नष्टों का नाश करूँगा। उन अभिमानियों का अभिमान मैं देख लूँगा। मैं शत्रुओं के टुकड़े टुकड़े करके बोटी बोटी उड़ा-ऊँगा। अब मुझे जोश आगया है। रण में शत्रु को देख कर मैं खड्ग से उस का संहार करूँगा और उसे खूब रुलाऊँगा।

[सब जाते हैं]

—:o:—

प्रवेश दूसरा

स्थल—निज़ाम के शिविर में अतिथ्य-सत्कार का तम्बू

[निज़ाम अपनी मण्डली-सहित तम्बू में बैठा है और एक पार्श्व में जाली के परदे के भीतर अन्तःपुर है। परदा उठता है]

निज़ाम—देखो जाधवराव ! अब यहाँ से छूटते ही देहली जा कर वहाँ सर्ववध करना होगा। आप की सब तैयारी है न ?

जाधवराव—जी हाँ, हमारी सब तैयारी है। आपका आदेश पाते ही दिल्ली पर धावा बोल दूँगा।

निज़ाम—बस करो ! अपनी लंबी-चौड़ी बातें अपने पास ही रहने दो ! मैं सब कुछ जानता हूँ। तुमने इस नदी के किनारे जो वीरता दिखाई है वैसी ही देहली में दिखाओगे न !

बातें तो डेढ़ डेढ़ हाथ लंबी परन्तु समय आने पर सिर पर पाँव रख कर भागना, यही तुम्हारे जैसे असंस्कृत मनुष्यों की प्रकृति है। देखो, तुम और वह दोनों हिन्दू हो। फिर उस की चालाकी तुमको किस लिए मालूम नहीं हुई ? इस से मुझे ऐसा विदित होता है कि तुम सच मुच अनुभव-हीन हो ! बाजीराव बड़ा बुद्धिमान् सरदार है। तुम में उसकी बुद्धि का दशांश भी नहीं। यदि तुम स्त्रियों से अधिक बुद्धिमान् नहीं हो तो हाथ में चूड़ी क्यों नहीं पहन

लेते ? उस ढीली धोती वाले ब्राह्मण ने तुम्हें और तुम्हारे साथ हमारी सेना को एक घड़ी में नष्ट कर दिया। पाजी, तेरे परामर्श के कारण मैं व्यर्थ ही नष्ट हुआ। तू ने हमारा नाम ही डुबो दिया !

माधवराव—मैं अकेला क्या करता ! मेरी सेना में सब मुगल लोग भरे पड़े थे। उन को हम मराठों की तरह घेरा डालना नहीं आता। नहीं तो दिखाई होती तलवार की बहादुरी। उन दाल-भात खाने वाले बम्मनों की खड्ग के शौर्य की मेरे सामने आप क्या प्रशंसा करते हैं ! वह काम उस पेशवा का नहीं, हम मराठों का है। खूब समझ लीजिए। अब मैं स्वयमेव आप के निकट आकर आपके हाथ पड़ गया हूँ, इसी लिए ये सब बातें सुननी पड़ रही हैं। नहीं तो कभी भी न सुनता ! समझे ? बात करते समय ज़रा ज़बान को लगाम दे कर बात कीजिए। हम आप के अधिकार में तो हैं, फिर भी आपकी गाली सुनने को तैयार नहीं। समझे ?

निज़ाम—[क्रोध से] शहबाज़ खाँ, देखते क्या हो ? अभी के अभी, इस जंगली को कारागार में डाल दो। मूर्ख, कायरों के काम करके फिर भी दर्प दिखलाता है। पाजी, तुझ को लज्जा नहीं होती ?

[इतने में चोबदार आता है]

चोबदार—[प्रणाम करके] स्वामिन् , धृष्टता क्षमा हो । मालिक ! पेशवा आए हैं ।

निज़ाम—अच्छा, उनको बहुत संमान के साथ राज सभा में ले आओ ।

[चोबदार जाता है]

[नरसिंगा बजता है । पेशवा, भाऊ साहब और दूसरे साथी आते हैं । निज़ाम बाजीराव से मिलता है और उसको अपने पास बैठाता है । बाजीराव के दोनों सेवक उसके पीछे खड़े रहते हैं । भाऊ साहब एक तरफ बैठ जाते हैं । इस के बाद]

कहिए पेशवा साहब, आपका मिज़ाज तो अच्छा है न ?

बाजीराव—स्वामी शाहू महाराज की कृपा से ठीक है । परन्तु आप तो सकुशल हैं न निज़ाम साहब ?

निज़ाम—हाँ, हाँ ! आपकी कृपा से सब कुशल है । पेशवा साहब, आपकी तरफ के पण्डित जी के कथन के अनुसार ही सब प्रबंध किया है ।

भाऊ साहब—[बीच में ही बाजीराव के सामने हाथ जोड़ कर] आपकी आज्ञा मैंने निज़ाम साहब से कही थी । उस के अनुसार खज़ाने को पचास सहस्र रुपए देने का आदेश हुआ है ।

बाजीराव—बहुत उत्तम है । [निज़ाम से] निज़ाम साहब, आप

की इच्छा पूर्ण करने के लिए हमारे स्वामी ने हम को आज्ञा दी है। इसी समय हमारी तैयारी है। बादशाह! बादशाह क्या चीज़ है। दिल्ली पहुँचने की देर है कि एक पल में ईंट से ईंट बजा दूँगा। [जाधवराव की ओर देख कर] जाधवराव जी, आप सकुशल तो हैं न?

जाधवराव—[नीचे की ओर दृष्टि किए, अपने आप से] इस भिक्षुक ब्राह्मण का अभिमान देखना क्या हमारे ही भाग्य में बदा था? ऐं!

बाजीराव—[जाधवराव से] आपकी स्वामि-भक्ति के लिए महाराज आप का बहुत आभार मानते हैं। वे कहा करते हैं कि सेनापति साहब के यहाँ जन्म लेकर आप ने उनका यश खूब बढ़ाया है!

जाधवराव—(आक्षेप-पूर्वक) ले लीजिये अब बड़ा यश। महाराजा को एक कोने में बैठा दीजिए, और बस आपका काम बन गया!

निज़ाम—(क्रोध से) जाधवराव, खबरदार, पेशवा से लंबी ज़बान करोगे तो हम से बुरे बनोगे!

बाजीराव—लेने दीजिए उसे मुँह का मज़ा। तलवार की बहादुरी तो है नहीं, अब वह ज़बान की बहादुरी भी न दिखाए?

निज़ाम—क्यों पेशवा साहब, अब इस समय आप कितनी सेना साथ ले आये हैं ?

बाजीराव—आप को जितनी चाहिए उतनी सेना मेरे पास इसी समय तैयार है।

निज़ाम—" इसी समय तैयार है !" बाजीराव, आप क्या कह रहे हैं !! इसी समय तैयार है !!! रहने दीजिए ये बड़ाई की बातें। ये सब बड़ाई की बातें आपका बावला शाहूराज ही सुन सकता है। परन्तु इस समय [छाती पर हाथ रख कर] इस निज़ाम के साथ मामला है, समझे ? आपकी सब सेना इस समय द्रोही हो गई है, आप को क्या विदित है ?

बाजीराव—ऐसी बात त्रिकाल में भी संभव नहीं। यह महाराज का आज्ञाकारी सेवक है। यह कोई भगोड़ा राजद्रोही जाधवराव नहीं। बहुत क्या, यदि आपकी ऐसी इच्छा हो तो पिपीलिका-दल की भाँति लाखों धुरंधर वीर मैं अभी इसी स्थल पर उपस्थित कर सकता हूँ। अपने प्रभु का सहारा लिए उन के पार्श्व में यह बाजीराव होगा।

निज़ाम—बस कीजिए ! अपनी ये सब बातें एक ओर रहने दीजिए ! अब आप मेरे काबू में हैं। [तलवार खेंचे बाजीराव का हाथ पकड़ता है] इसी समय आपका मुण्ड रुण्ड

से पृथक् करता हूँ। क्या करेंगे आप ? बुलाइए अब अपने शिन्दे और होलकर को, मैं भी देखूँ !!

बाजीराव—[एक हाथ से खंजर बाहर निकाल कर] निज़ाम, इस बाजीराव ने अपने हाथ में कोई चूड़ियाँ नहीं पहन रखी हैं, समझे ! [खंजर उठाता है] आओ मेरे वीरो ! अब क्या देख रहे हो ? यह शिखा-नष्ट यवन अपने मन में बहुत गर्व कर रहा है। दुष्ट रिपुओं का घात करने वाले अपने खड्ग निकालो। आओ वीरो, अब क्या देख रहे हो !

[इतना सुनते ही शिन्दे और होलकर आदि सरदार सामने आकर तलवारें निकालते हैं।]

होलकर—इस समय आज्ञा मिलनी चाहिए, महाराज ! देखिए, लेता हूँ इस विश्वास-घातक पाजी का प्राण !

शिन्दे—प्राण भी जायँ तो कुछ हानि नहीं। आप की आज्ञा होनी चाहिए। अभी इस दुष्ट का सिर इसी तलवार से चर्र चर्र काट डालता हूँ !!

(परदे के भीतर शोर होता है। शहबाज़ खाँ और जाधवराव अपनी अपनी तलवारें खींचते हैं।)

निज़ाम—शहबाज खाँ, जाधवराव ! खबरदार जो तुम अपनी जगह छोड़कर आगे बढ़े ! (बाजीराव से नम्रतापूर्वक) पेशव साहब, क्षमा कीजिए ! मैंने आज आपकी पूरी परीक्षा कर

ली। सच है—"एक बाजी, बाकी सब पाजी"। अब आपके मन में जो कुछ इच्छा होगी वह प्रभु-कृपा से सब पूरी की जायगी।

बाजीराव—निज़ाम साहिब, आपकी राजनीतिज्ञता की कोई सीमा नहीं। आप की दूरदृष्टि और बुद्धिमत्ता सचमुच विलक्षण है। मैं भी यही समझता हूँ कि "एक निज़ाम, बाकी सब हज़ाम।" मैं सन्धि के नियम बना कर साथ लाया हूँ। चलिए, अब उन पर विचार करलें। (ऐसा कह कर सब लोग मसव्वदा देखते हैं)

एक स्त्री—(परदे में से बाजीराव की ओर देख कर आनन्द से) अहा! कैसा यह लावण्य है! इसका मनोहर रूप मन को मुग्ध किए जा रहा है। इस का भूषण-मंडित शरीर कैसी शोभा दे रहा है! सच मुच जिस सुभगा ने इस के गले में वर-माला डाली होगी वह कितनी सौभाग्यवती होगी! इसको पाने के लिए बड़ी पुण्याई चाहिए।

जाधवराव—(उस को एकटक देख कर आनन्द से) भला यह इतनी सुन्दर स्त्री कौन है? अहा, यह रमणी कितनी सुन्दर दीखती है। यह नारी क्या है, मानो पृथ्वी पर दूसरी सौदामिनी है। इतनी सुन्दर स्त्री मैं ने कभी पहले नहीं देखी! ब्रह्मदेव तेरे कौशल को धन्य है!

निज़ाम—(सन्धि का मसव्वदा देख कर) बहुत अच्छा है। वर्षा-ऋतु की समाप्ति पर मैं आपके साथ एक मत और एक प्राण होकर देहली की ओर जाने का विचार रखता हूँ।

बाजीराव—जैसी आपकी इच्छा। हमारी ओर से तो इसी समय तैयारी है। चलें, अब आज्ञा चाहिये।

निज़ाम—ज़रा ठहरिए। (शहबाज़ खाँ से) शहबाज़ खाँ, कपड़े और गहने ले आओ! (शाहबाज़ वस्त्राभूषण लाता है) बाजीराव साहब, मन में कुछ रोष न रखिए। आप बड़े युद्ध-वीर हैं। आप इस युद्ध में विजय प्राप्त करें, इसलिए मैं आप को कुछ उपहार अर्पण करता हूँ। आप उसको स्वीकार कीजिए। हमारे साथ आप की और आप के स्वामी की सदा मित्रता रहे, यही मेरा कहना है। (ऐसा कहकर बाजीराव को सरोपा देता है। दोनों एक दूसरे को प्रणाम करते हैं।)

बाजीराव—(सरोपा आदि लेकर भाऊ साहब को देता है) अच्छा निज़ाम साहब, अब मैं जाता हूँ। हम पर आप की दया-दृष्टि सदा ऐसी ही बनी रहे! दोनों के हृदयों में वैर-भाव कभी उत्पन्न न हो! दिल्ली क्या चीज़ है, हम उस पर चढ़ाई करेंगे। उसे हस्तगत करते देर न लगेगी। इसलिये मैं जल्दी करूँगा। [परदा गिरता है]

प्रवेश तीसरा

स्थल—रास्ता

(मस्तानी के लिये पागल हुआ जाधवराव प्रवेश करता है]

जाधवराव—(स्वगत) उस रमणी पर दृष्टि पड़ते ही मुझे उसे पाने की इच्छा हो गई है। मैं उस चद्रमुखी को फिर कब देख पाऊँगा ! उसने मुझे पागल बना दिया है। अब मुझे कुछ सूझता ही नहीं।

कौन है भला ? वह तो नहीं ? (ऐसा कहकर चुपचाप खड़ा हो जाता है और देखने सा लगता है) वह कौन है भला ? इधर ही आरहा है। हाँ, हाँ ! यह शहबाज़ खाँ इधर आ रहा है। इसे फुसला कर सारी बात पूछनी चाहिये, तब पता लगेगा। (इतने में शहबाज़ खाँ आता है) सलाम खाँ साहब, कैसे हो ? निज़ाम साहब की सवारी यहाँ से कब रवाना होगी ? क्या भात खाने वाले भिक्षुक ब्राह्मण की हाँजी, हाँजी करते यहीं बैठे रहेंगे ?

शहबाज़ खाँ—छावनी कल सवेरे कूच करने को है। कल सवेरे सन्धिपत्र हस्ताक्षरित हो जाने के उपरान्त यहाँ रहने क कुछ काम नहीं।

जाधवराव—पर क्यों खाँ साहब, निज़ाम साहब का इस जाधवराव को बंदी-गृह में डालने की आज्ञा देना और उस भिक्षुक

ब्राह्मण के सामने मिन्नतें करना क्या योग्य जान पड़ता है ?

निज़ाम साहब मन में भयभीत हैं। इसी लिए उसको अपने यहाँ लेजाकर उन्होंने उसका बहुत सत्कार किया है। उसे अपनी सुन्दर युवतियाँ दिखाई हैं, प्रेम से बातें की हैं और बहुत सा धन दिया है। उसे ईश्वर मानकर तुम्हारा मालिक उस के सामने नाक रगड़ रहा है।

शहबाज़ खाँ—जाने दो इन बातों को। तुम को उन की तबियत का हाल मालूम नहीं। उन की तबियत ज़रा गरम है। तुम मन में किसी प्रकार का विचार लाकर चिन्ता मत करो।

जाधवराव—अच्छा, पर अब बाजीराव के दाँत खट्टे करने के लिए भला क्या युक्ति करनी चाहिए ? मुझे बड़ा हर्ष होता, यदि निज़ाम मुझे तलवार चलाने की आज्ञा देते। शत्रु काबू में आए हुए थे। परन्तु निज़ाम साहब भयभीत हो गये। इसी लिए उन्हें सकुशल छोड़ दिया। यदि वे मुझे तनिक भी इंगित करते तो मैं अपना शौर्य दिखा देता।

शहबाज़ खाँ—छोड़ो जी ! उस बाजी को सीधा करने में क्या देर लगती है। निज़ाम साहब ने कल ही निश्चय किया है कि उस निगोड़े के पूना नगर को चारों ओर से आग लगा कर भस्मसात कर दिया जायगा।

जाधवराव—(आनन्द से) ओह ओ ! बहुत अच्छी युक्ति है !! आ बच्चू , अब देखता हूँ तेरी अकड़ ! पर क्यों खाँ साहब, आप से एक और बात पूछनी है। परसों भोज के समय अन्तःपुर में एक अतिशय सुन्दर नव यौवना नारी कौन थी ? उस के मुख-चन्द्र को देख कर सुर-बालाएँ भी लज्जित होती थीं। मेरी दृष्टि सहसा उस पर पड़ी। मुझे जान पड़ता है कि वह कोई नई आई है।

शहबाज़ खाँ—वह उधर हिन्दुस्तान की तरफ से आई है। उस के साथ उस की माँ भी है। उस की माँ निज़ाम के बेटे, शरीफ़ खाँ, के साथ उसका व्याह करने को कहती है।

जाधवराव—फिर तो निज़ाम साहब का लड़का प्रसन्न हो जायगा।

शहबाज़ खाँ— मगर वह लड़की कहाँ उसको पसंद करती है। वह कहती है, मुझे ऐसा कुरूप भूँडा युवक नहीं चाहिए। उधर निज़ाम के मन में कुछ और ही विचार है। ऐसा ही कुछ मामला चल रहा है।

जाधवराव—पर वह कौन जात होगी ? उसका पहरावा तो कुछ मुसलमान जैसा नहीं दीखता।

शहबाज़ खाँ—मैंने ऐसी अफवाह सुनी है कि वह बुन्देल खंड के राजा की लौंडी की बेटी है। लड़ाई में निज़ाम साहब उसे पकड़ लाये हैं।

जाधवराव—ऐसी बात है क्या! अच्छा, शिविर का और कोई नवीन समाचार?

शहबाज़ खाँ—बड़ी राजकुमारी अस्वस्थ हो गई है। इस लिए सब अन्तःपुर औरङ्गाबाद जा रहा है।

जाधवराव—अच्छा है। हम भी फिर सातारा का रास्ता पकड़ेंगे॥

शाहबाज़ खाँ—बहुत अच्छा! चलो, अब गप शप करते बहुत देर हो गई है। मैं अब जाता हूँ। वलेकम सलाम!

जाधवराव—ठीक है, सलाम! [शहबाज़ खाँ जाता है! उसके जाने के उपरान्त] यही बात है क्या? ऐं! अहा!! उसका कैसा रूप-लावण्य है!!! वह सद्गुणों की साक्षात् मूर्ति है। उस के अङ्ग बड़े ही सुकुमार हैं। जिसे वह अपना पति बनाएगी वह जगत् में धन्य होगा। ऐसी सुन्दर हिन्दू की लड़की मुसलमान के हाथ पड़कर, उस काले कलूटे शरीफ़ खाँ के अधिकार में जाने को है! छिः!

हिन्दू की कन्या यवन के घर में कैसे शोभा दे सकती है! नीच के साथ उस का विवाह होने से हमें भी सचमुच लज्जा आनी चाहिए! कोई न कोई युक्ति लड़ा कर मैं उसे अवश्य उड़ाऊँगा—[मूछों पर हाथ फेरता है] इस छैल चन्द्रसेन जाधवराव के रहते ऐसी बात हो ही कैसे सकती है। मैं तो अब उस प्यारी चिड़िया को निज़ाम के अन्तःपुर

रूपी पिंजरे से छुड़ा कर ही रहूँगा ! मुझ राजकुमार जैसे बाँके तरुण को देख कर वह कामिनी सचमुच आनन्द से मेरे गले में वरमाला डाल देगी। मेरे सुन्दर वस्त्र देख कर वह तरुणी मुझ से विवाह कर लेगी। तब मैं हर्ष के मारे त्रिभुवन में फूला न समाऊँगा। कामदेव भी मेरे सामने क्या है। वह मेरी सुन्दरता को देख कर लज्जा से मुँह छिपा लेगा। राकेश को उदय होते देख रवि स्वयमेव अस्ताचल-गामी हो जाता है।

चलो, अब छैल बाँके जाधवराव का हस बात को तूल देना ठीक नहीं। ज्यों ही यह छावनी यहाँ से उठी, फिर सुयोग मिलना कठिन है। इस लिए आज ही रात्रि को अन्तःपुर में जाऊँ और सन्नाटे में उस चिड़िया को उड़ा कर सीधे सातारा पहुँचा दूँ।

मेरी प्रबल इच्छा है कि मैं महाराजा साहब से बाजी का पेशवाई-पद छीन लूँ। तभी उस रमणी-रत्न को लेकर बड़ी शान-बान से रह सकूँगा। जगत् में मैं ही एक वीर-रत्न हूँ, बाकी सब नगण्य हैं॥

[इतना कहकर बड़ी अकड़ के साथ निकल जाता है]

[परदा गिरता है]

———

प्रवेश चौथा

(स्थल—निज़ाम की छावनी के निकट एक टूटी फूटी धर्मशाला ।)

[मस्तानी अकेली प्रवेश करती है ।]

मस्तानी---[स्वगत] उस मनोहर-मूर्ति को देख कर तत्काल मुझे अपनी कुछ भी सुध-बुध न रही । सहज ही मेरे मन में प्रेम का अंकुर फूट निकला । मैं अपना सर्वस्व उन्हें अर्पण करके आज सच मुच प्रमुदित हो जाऊँगी । उनका रूप देख कर मुझे उन से मोह हो गया है । मेरे नेत्र उनके दर्शन से अभी तृप्त नहीं हुए ।

अहा कैसा मनोहर रूप है ! वह अकड़, वह बात करने का ढंग, सच मुच उस राजकुमार को देख कर मुझे अपनी देह का भान नहीं रहा । उस के निर्मल गुणों पर मैं लट्टू हो गई हूँ । हाय ! मैं उसे कहाँ ढूँढूँ ! मुझे अपना जीवन व्यर्थ जान पड़ता है !

मेरा मन बड़ा पागल है । जब से मेरे मन में यह प्रेम का उद्रेक और यह अशान्ति आरम्भ हुई है तब से सकल जगत् मुझे तुच्छ जान पड़ता है ।

पर हे पागल मन ! तेरी इच्छा एक अप्राप्य वस्तु पर गई है । वह पूर्ण कैसे होगी ? वे हिन्दू, और मैं दूसरी

जाति की। तब वे मुझे किस प्रकार ग्रहण करेंगे ? परन्तु नहीं, चाहे मेरी माता यवनी भी हो, तो भी पिता तो हिन्दू और एक प्रान्त के राजाधिराज हैं या नहीं? फिर, जिस प्रकार उन को देख कर मेरे मन में प्रेम का सोता फूट निकला है, क्या उसी प्रकार मुझे देख कर उनके मन में भी कुछ हुआ होगा या नहीं? एक क्षण के लिए मान लीजिए कि मैं रम्भा जैसी सुन्दरी नहीं हूँ, तो भी प्रेम की बात निराली ही होती है।

गीत

जगत् में प्रेम अपूर्व अपार।
लीलामय की लीला का है तू ही मुख्याधार।
प्रेम न देखता जाति, कुल, अवसर अथवा स्थान,
प्रेम-पीड़ितों में रहता कब मर्यादा का ध्यान ?
जगत में प्रेम अपूर्व अपार॥

जगत् में प्रेम एक बहुत बड़ी चीज़ है। प्रेम से ही विधि का सारा खेल चल रहा है। प्रेम वेला-वक्त और जाति-गोत्र कुछ नहीं देखता। उस में मर्यादा भी कोई बाधा नहीं दे सकती।

अस्तु, अब सन्नाटा छा जाने तक इस धर्म्म-शाला में

विश्राम करना चाहिए। डेढ़ पहर रात बीतते ही फिर उस शिविर का रास्ता लूँगी और उन से मिलने की प्रत्येक चेष्टा करूँगी। मैं तो अन्तिम निश्चय करके ही निकली हूँ कि मैं प्राण दे दूँगी। मालूम नहीं, मेरी क्या गति होने को है। प्यारे, तेरा प्रेम पाने के लिए मैं प्राणों की बाज़ी लगा रही हूँ।

[ऐसा कह कर मुँह पर बुर्का डाल लेती है और झाँक कर देखती है।]

यह धर्म्मशाला की ओर भला कौन आ रहा है ! होगा कोई बटोही। [फिर अच्छी तरह से देख कर] पर यह तो कोई निज़ाम की छावनी का दीखता है। यह अपना घोड़ा सरपट दौड़ाए आ रहा है !

[डर कर एकदम उठती है और धर्म्मशाला में छिप कर बैठ जाती है। इतने में जाधवराव धर्म्मशाला के सामने पहुँच जाता है।]

जाधवराव—[प्रवेश करके] [स्वगत] क्या करूँ ? उस सुन्दरी को ढूँढ़ते ढूँढ़ते मैं नितान्त थक गया हूँ। मुझे निश्चय नहीं होता कि वह सच-मुच कहीं छिप गई है या उस ने प्राण दे दिये हैं। उसे मैं कहाँ देखूँ ? मुझे एक एक क्षण युग के समान जान पड़ता है। कल्पना-तरंग के उठने से मेरा मन क्षुब्ध हो जाता है।

वह मोहिनी मूर्ति मुझे छोड़ कर कहाँ चले गई ? अब मैं उसे कहाँ ढूँढूँ। मेरी मति भ्रष्ट हो गई है। मुझे इस समय कुछ नहीं सूझता।

अच्छा, जो काम मैं ने हाथ में लिया है उसे पूर्ण किए बिना मैं अन्न ग्रहण नहीं करूँगा। मैंने अन्तःपुर में उसकी बहुत तलाश की। परन्तु वह सब व्यर्थ हुई। इस से जान पड़ता है कि वह शिविर में से सच मुच भाग गई है। कारण, माँ-बेटी का झगड़ा रोज़ चलता था, यह मुझे शहबाज़ खाँ ने बताया था। यह भी दुरुस्त है कि ऐसी रूपराशि को वह काला कलूटा शरीफ खाँ कैसे पसन्द आ सकता है। इस लिए उसका वहाँ से भाग जाना सर्वथा ठीक ही है। अधिक संभव यही है कि वह छावनी के आस पास ही कहीं इस छैल बाँके जाधवराव की तलाश कर रही होगी। इस लिए उसे शीघ्र ढूँढ़ना चाहिए। नहीं तो मुफ्त में हाथ से शिकार निकल जायगा और फिर रोते बैठना पड़ेगा।

मस्तानी—[स्वगत] हा ! क्या करूँ ? मुझ पर बड़ा कठिन समय आया है। जगत् में मेरी तलाश किस लिए हो रही है ? मालूम नहीं यह कौन है। इस से मैं बहुत तंग आ गई हूँ। यहाँ से मैं कैसे जाऊँ ? द्वार पर यम खड़ा है। हे करुणेश, मुझे कोई युक्ति सुझाइए !

जाधवराव—पर वह गधा अब तक क्यों नहीं आया ! [उसके आवाज़ देता है] रामू , अरे रामू !

रामू—[दूर से] जी ! स्वामिन्, मैं आया !! [हाथ में घोड़े की बागें पकड़े लँगड़ाता हुआ आता है ।]

जाधवराव—[क्रोध से] बच्चू, जल्दी नहीं चला जाता ? घोड़े को सँभालने के लिए हम क्या तेरे बाप के नौकर हैं ?

रामू—नहीं, स्वामिन्, रास्ते में ठोकर लग जाने के कारण मैं गिर पड़ा था । पाँव से रक्त बह रहा है । गहरी चोट आई है ।

जाधवराव—गिर कैसे पड़ा, बच्चू ? जान पड़ता है, कुछ खाया नहीं है । ले, इस घोड़े को बाँध और सँभाल मेरे ये वस्त्र और तलवार । मैं ज़रा बाहर घूम आऊँ ।

रामू—अच्छा, मालिक ! [ऐसा कह कर वस्त्र लिए धर्मशाला में जाता है और आले में जलते हुए दीपक का फूल झाड़ कर एक ओर बैठ जाता है] तंग आगया हूँ इस मनुष्य की चाकरी से । इसके घोड़े के पीछे भागते भागते आज मैं बहुत थक गया । इस मनुष्य को लज्जा भी नहीं होती । पेशवा और उसका स्वामी संभाजी पकड़े जाने वाले हैं । तो भी इसे उन का कुछ विचार नहीं आता । बड़ा निर्लज्ज है यह मनुष्य !

मस्तानी—[धीरे से] लड़के, उनको कहाँ ले जायँगे ?

रामू—[चौंक कर] रे, यहाँ यह कौन है ! ऐसे कोकिल-से बारीक स्वर से कौन बोल रहा है ? भूत-प्रेत तो नहीं ? भूत, तू यहाँ से निकल जा नहीं तो इस तलवार से तेरे टुकड़े टुकड़े कर डालूँगा।

मस्तानी—[मुख पर से बुर्का उठा कर] लड़के, डरो मत, मैं एक बटोही हूँ।

रामू—[ध्यानपूर्वक देखकर स्वगत] ऐं, यह कौन है रे ! यह सौदामिनी की तरह चमक रही है। हे सुकुमारी, तू कौन है और तेरा नाम क्या है ? कहाँ से आई है और कहाँ जायगी ? तेरा स्वामी कौन है ? मुझे शीघ्र बता। किस कारण तू चोर की तरह छिप कर बैठी है ? हे भामिनी, तू किस से भयभीत हो रही है ? तू निश्चिन्त होकर बैठ।

मस्तानी—लड़के, तुम्हारे इस मालिक का नाम क्या है ?

रामू—इसे छैला जधवराव कहते हैं। यह एक बड़ा सामन्त है। यह अपने स्वामी से द्रोह करके यवनों के साथ मिल गया है। उन से अपशब्द सुनने और उन के जूते खाने के लिए भी तैयार है। बाप का नाम इसने बहुत अच्छा रक्खा है ! क्या कहना है इस की बड़ाई का ! दिन-रात मेरे पीछे यम की तरह लगा रहता है। नगोड़ा, भगोड़ा, रण-भीरु ! इस के मुँह पर थू है !

मस्तानी—हूँ, हूँ! संभाजी का साथी चन्द्रसेन जाधवराव क्या यही है? पर यह आज इधर कहाँ चला है?

रामू—कौन जाने? लगा है एक स्त्री के पीछे! निज़ाम के अन्तःपुर से एक चटकीली मटकीली स्त्री भाग गई है। उसी को यह ढूँढ़ रहा है। उसके लिये यह पागल हो रहा है। जल्लाद की तरह उसको खोजता फिरता है।

मस्तानी—[स्वगत, डर कर] अब मैं क्या करूँ? यहाँ से भागना ही अच्छा है। पर कैसे जाऊँ! मेरे मन में बहुत भय हो रहा है। मुझे कोई उपाय नहीं सूझ रहा। मैं अब क्या करूँ? प्रभु, दया करके मेरा उद्धार कीजिए। मुझे भारी भय हो रहा है। इसे निवारण कीजिए! आपकी यह दीन दासी विनती कर रही है।

[उठने लगती है।]

रामू—देवि, तुम कहाँ चली हो? यहाँ निश्चिन्त रहो! ऐसी घबरा क्यों गई हो? मैं तुम्हारा बाल भी बाँका न होने दूँगा। फिर इस रामू के होने का लाभ ही क्या। इस नगोड़े देश-द्रोही से मत डरो।

मस्तानी—

गाना

बंधु, कर रक्षा मेरी आज।
इस पापी के पाप-सिंधु में मेरा लाज-जहाज।
डूब रहा है केवट बन कर इसको शीघ्र उबार।
जीवन में न कभी भूलूँगी तेरा मैं उपकार॥

लड़के, मैं आज तेरी शरण आई हूँ। तू बहन की लाज रख। मुझे और किसी का आश्रय नहीं। इस समय तू ही मेरा बंधु है। भाई, इस पापी का स्पर्श भी मुझे न होने दे। तेरे इस उपकार का बदला मैं ज़रूर चुका दूँगी।

तू अल्पवयस्क अबोध बालक होकर भी अभिमान के साथ मुझे धैर्य दे रहा है। मेरे इस भय में तू मुझे ढाढ़स बँधा रहा है। भगवान् तेरा सदा कल्याण करेंगे! मेरे इन वचनों को सत्य समझ।

रामू—[स्वगत] यह स्त्री इतनी क्यों घबरा गई है! यह नगोड़ा जिसको ढूँढ़ रहा है कहीं वह यही तो नहीं?

[इतने में जाधवराव आता है]

मस्तानी—[जाधवराव को देख कर डर से] [स्वगत] यह आ गया मुआ! [फिर अच्छी तरह बुर्का ओढ़ कर] ईश्वर, अब मेरी लाज तुझे है!

जाधवराव—रामू, तुझे चिलम भरने का ख़याल नहीं था? धर्म्मशाला में जाजम बिछा दे।

रामू—राव साहब! अब शीघ्र चले चलिए। यहाँ बैठना उचित नहीं है। संभवतः वह स्त्री अगले गाँव में आप को व्यर्थ ही ढूँढ़ रही होगी।

जाधवराव—[आनन्द से] रामू, सच मुच तुझे क्या उस का कुछ पता लगा है? तब मैं तुझे भारी इनाम दूँगा। पर क्यों रे रामू, वह इस छैले जाधवराव की बड़ी बड़ी मूँछों, गुलाब-से खिले चेहरे और बाँकी अकड़ को देख कर खुश नहीं होगी?

रामू—वाह! क्या पूछते हो महाराज! आपका मुख-मण्डल तो पुष्प-वाटिका दीख पड़ता है। आप जैसे को देख कर इन्द्र राजा की अप्सराएँ भी मुग्ध हो जाती हैं। फिर वह स्त्री तो चीज़ ही क्या है! आप बड़े शानदार सरदार दीखते हैं। आप को देख कर कामिनियाँ लट्टू हो जायँगी। आप का चेहरा गुलाब की तरह खिल रहा है और मूँछें पेच-बल खा रही हैं। सिर पर तलई साफा खूब शोभा दे रहा है। शरीर पर तंग अँगरखा, नीचे चुस्त पायजामा, पाँव में नोकदार जूता, कमर में बाँकी तलवार, ऐसा जान पड़ता है मानो आप दूसरे कुँवर कन्हैया हैं।

राव साहब, जल्दी चलिए, समय खोना ठीक नहीं। अन्यथा पछताना पड़ेगा।

जाधवराव—ठहर रे, वह कहाँ भागी जा रही है। ज़रा तमाकू तो पी लेने दे। ले चिलम भर ला। मैं दीपक पर ज़रा धज्जी सुलगा लेता हूँ।

[ऐसा कह कर धर्म्मशाला के दीपक पर कपड़े का टुकड़ा रखता है और उसके उजाले से मस्तानी दृष्टिगोचर होती है। उसे देख कर] अरे, यह यहाँ कौन है ?

रामू—[स्वगत] अरे यह मनुष्य बड़ा चालाक है।

जाधवराव—[ज़ोर से रामू को] रामू, बच्चा, कौन है यह कोने में बैठा हुआ ?

रामू—वह कोई बटोही उतरा है। पता नहीं कौन है।

जाधवराव—पर इसने मुख पर बुर्का क्यों ले रक्खा है ? [पास आकर] कौन है बोलता क्यों नहीं ? यह कौन है ?

रामू—[बीच में ही] राव साहब, होगा कोई, आपको उस से क्या करना है ? चलो, पहले अपना काम करें।

मस्तानी—[स्वगत] प्रभु, अब मेरी लाज रख ! [प्रकट] हम प्रवासी हैं। हमें औरङ्गाबाद जाना है।

जाधवराव—ऐसे अकेले ? आपके साथ दूसरा कोई नहीं क्या ? [स्वगत] परसों भोज के समय देखी हुई वही प्यारी

चिड़िया तो नहीं ? मुझे वह सुन्दरी बहुत भाती है। उस दिन उसे अच्छी तरह से देखा था। मैं उसके लिए मारा-मारा फिर रहा हूँ। क्या मेरी आँखें फिर उसे देख सकेंगी ? यदि यह अपना मुँह ज़रा नङ्गा कर के दिखा दे तो मैं झट उसे पहचान लूँगा। [प्रकट] देवी, तू ऐसी रात में अकेली यहाँ बैठी है, तुझे डर नहीं होता ? [रामू को क्रोध से] रामू, क्या सुन रहा है, बच्चू ? बाहर घोड़े को सँभाल। [रामू क्रोध से ठप ठप करता हुआ जाता है] देवि, तेरे बारे में मेरे मन में संशय होता है। कारण, निज़ाम के अन्तःपुर से एक तरुण स्त्री भाग गई है। उसका पता लगाना है। अतएव तुम्हारे विषय में हमारा सन्तोष होना चाहिए।

मस्तानी—मुझ पर अकारण ही क्यों संदेह ? मेरा उस से कुछ भी संबंध नहीं। मुझे दिन निकलते ही ससुराल पहुँचना है।

जाधवराव—वह तो ठीक है, पर तुम्हारी केवल इन बातों से ही हमारा संतोष नहीं होता। तुम्हारा आकार-प्रकार हमें देखना है।

मस्तानी—[स्वगत] अब क्या करूँ ? [प्रकट] भाई, हम तो परदा-मशीन हैं। आपकी कल्पना व्यर्थ है।

जाधवराव—[स्वगत] इस के इन शब्दों से मेरा संदेह और भी बढ़ता जा रहा है।

[उसके निकट जाता है]

मस्तानी—[स्वगत] यह मुआ अब बिलकुल निकट ही आ गया! अच्छा कोई बात नहीं, यह मुझे कहाँ पहचान सकता है। मैं अन्तःपुर-वासिनी अवगुण्ठनवती, इस ने मुझे कहाँ देखा होगा!

[मुख पर से बुर्का उतार कर जाधवराव से] क्या, अब सन्तोष हो गया?

जाधवराव—[देख कर आनन्द से] [स्वगत] यह तो सच मुच दूसरा चन्द्रमा उदय हो गया है! यह अमृत-बिन्दुओं से परिपूर्ण है। विधाता, तेरी यह अद्भुत कृति देख मेरी मति गूङ्गी हो गई है। सच मुच इसी मनोहारिणी स्त्री की झलक परसों निज़ास के भोज में देखी थी। आज उस का पूर्ण रूप देखने को मिला। मैं धन्य हो गया हूँ। [प्रकट] हे चारुगात्री, तू अचानक ही मुझे मिल गई। मुझे बहुत हर्ष हो रहा है। तुझे देख मेरे नेत्र सार्थक हो गये।

मस्तानी—यह क्या! ऊपर से तो आप सज्जन और कुलीन दीखते हैं। फिर ऐसा निन्द्य कर्म क्यों? मैं विवाहिता स्त्री हूँ। मुझ से आप की जान-पहचान नहीं। फिर भी आप

मुझ से ऐसी बातें कर रहे हैं। आपको लज्जा नहीं होती ? आपका यह व्यवहार नितान्त अयोग्य है। मैं पर-स्त्री हूँ और आप पर-पुरुष हैं। आपको मन में शंका क्यों नहीं होती ?

जाधवराव—मैं तुझे पराई नहीं समझता। तू इतनी शंकित क्यों हो रही है ? मैं सदा तेरी सेवा के लिए तत्पर हूँ। सखी, तुझे यदि भूँडा शरीफ खाँ पसंद नहीं था तो इस जाधवराव को केवल इंगित करना ही पर्याप्त था। तुमने इंगित किया होता तो तुम्हें यह कष्ट न उठाना पड़ता। भागने से तुम आज बहुत थक गई हो। तुम ने क्यों न कह दिया ? मैं तुम्हारी सेवा में तत्पर हो जाता।

मस्तानी—आप मन में यह कैसे कुविचार ला रहे हैं ?

जाधव—सुन्दरी, ऐसा क्रोध क्यों कर रही हो ?

मस्तानी—पर-स्त्री पर आप पाप-दृष्टि रख रहे हैं। आप को मन में लाज क्यों नहीं होती ?

जाधव—कहाँ तक तू मेरा अन्त देखेगी ?

मस्तानी—पर यह आप भूल रहे हैं।

जाधव—भोजन के समय तुम्हें देखा था। तभी तुम्हारे चरणों में मैंने सर्वस्व अर्पण कर दिया था।

मस्तानी—निर्लज्जों को लज्जा और भय कहाँ !

जाधव—मैं तेरे पाँव पड़ता हूँ।

मस्तानी—आप के ऐसे जीवन पर धिक्कार है !

जाधव—ऐसी सुनसान रात्रि में तुझे छावनी से अकेलीनिकल पड़ने का कोई कारण नहीं था। यदि मैं तेरी हर तरह से सेवा-चाकरी में उपस्थित न होता तो तू मुझे कहती।

मस्तानी—[क्रोध से] यह आप क्या बक रहे हैं ? ऐसी बातें अपने ही पास रखिए। दूर हो जाओ मेरे निकट से ! खबरदार, जो ऐसी बात मुँह से फिर निकाली। अरे, मैं रास्ता चलने वाली एक बटोही ! जन्म भर में भी आप की और मेरी कभी जान-पहचान नहीं हुई। एकदम ऐसी प्रेम की बातें करते आप को लाज नहीं होती !!

जाधवराव—[गिड़गिड़ा कर] सखी, यह क्रोध मेरा मन देखने के लिए कर रही हो ? क्रोध क्यों कर रही हो ? मन को शान्त करो।

मस्तानी—[क्रोध से] मुए, तेरे मुँह को आग क्यों नहीं लगती ! हे निर्लज्ज, तू क्या बकवाद कर रहा है ! तुझे लाज क्यों नहीं आती ? तेरी ऐसी जीभ टूट जाय—जल जाय ! तू निरा चाण्डाल है ! तुझे मैं कैसे मिल सकती हूँ ? अधम, दुष्ट, खल, दूर हो यहाँ से !

जाधवराव—[निकट जा कर] सखी मुझ पर ऐसा क्रोध मत करो! मेरा भी जन्म शुद्ध कुल में हुआ है। मैं जाति का सरदार हूँ। मेरे जैसा राजवंशी इस संसार में तुम्हें दूसरा न मिलेगा। तुम्हें अधिक क्या कहूँ ? तुम्हारे सामने रुपयों के ढेर लगा दूँगा और तुम्हें गहनों से मढ़ दूँगा। तुम्हारे मुँह से जो बात निकलेगी उसे तत्क्षण पूरा करूँगा। मेरा यह सारा शरीर तुम्हारा है। मुझे दूर मत हटाओ। प्राणप्रिये, मुझ पर दया करो ! मृदु वचन बोल कर मुझ पर दया करो! अपना क्रोध छोड़ दो। मुझ पर कृपा करो।

मस्तानी—कैसा लुतरापन कर रहे हो ! तुम कौन, मैं कौन ! तुम हिन्दू, मैं यवनी ! आप जैसे सरदार को ऐसी पागलों की सी बातें करना ठीक नहीं।

जाधवराव—सुन्दरी, तुम मुझे पागल कहो, लुतरा कहो, कुछ भी कहो, परन्तु अपना कृपा-भाजन बनाओ। मेरे जैसा भाग्यवान् कौन होगा ! जाति-पाँति का भय छोड़ कर मेरे गले में शीघ्र वर-माला पहना दो। यदि तुम चाहो तो मैं तुम्हारे लिए यवन होने को तैयार हूँ। तुम्हें मैं सुख से रक्खूँगा। तुम पर सूर्य की किरण भी न पड़ने दूँगा। पगली, तुम जात-पाँत क्या लिए बैठी हो ! मुझे मुसलमान होने में

क्या देर लगती है ? दाढ़ी रख ली कि बस मुसलमान बन गया समझो।

मस्तानी—[क्रोध से उस के शरीर पर टूट पड़ती है] हे नराधम, तू क्या कह रहा है ? पाजी, तुझे शर्म नहीं आती ? दीपक को भूल कर तू मृत्यु से निरर्थक क्यों लौ लगा रहा है ? कुछ तो विचार कर ! इस पाप-बुद्धि को छोड़ दे !

जाधवराव—[प्रेम से] सुन्दरी, तू दीपक है। इसीलिये यह पतंग तुझ पर गिर कर अपना प्राण अर्पण कर रहा है। हे राजीवाक्षि, तू यह हठ छोड़ कर मुझ से प्रेम कर।

[ऐसा कह कर उसके शरीर को स्पर्श करने जाता है।]

मस्तानी—[पीछे हट कर क्रोध से] हैं ! मुए दूर हो ! मुझे मत छू ! कुछ तो शर्म कर !

जाधवराव—[गिड़गिड़ा कर] क्रोध मत करो, प्रेम करो।.....

मस्तानी—[क्रोध से] दूर हो बधिक ! अपने कलुषित हाथ से मुझे स्पर्श मत कर।

जाधवराव—[गिड़गिड़ा कर] हे सुन्दरी, अब मेरा अन्त न देखो। सदय हो कर मेरी विनती कुछ तो मान लो।

मस्तानी—[क्रोध से] मुझे मत छूना ! चाण्डाल, तेरा सत्यानाश हो ! निर्लज्ज, जान पड़ता है, ऐसे ही नीच कर्म करके तू अपनी जाति की स्त्रियों को भ्रष्ट करता होगा। मुए, मेरे अंग को तो हाथ लगा, फिर दिखाती हूँ तुझे मज़ा !

जाधवराव—[उस के शरीर को छू कर] लो, लगाता हूँ तुम्हारे अंग को हाथ ! तुम मेरा क्या कर लोगी ? भाग जाओगी क्या ? यह छैल बाँका तुम्हारे सामने खड़ा है। तुम कैसे भाग सकती हो ? यह देखो, तुम्हें पकड़ लिया। देखूँ, तुम कहाँ भागती हो। मैं तुम्हारे निकट ही खड़ा हूँ। तुम्हारी क्या मजाल है कि भाग जाओ।

मस्तानी—[दुःखी हो कर] हे निर्लज्ज, अधम, तुम मुझे क्यों तंग कर रहे हो ? हे खल, तुम्हें अभी तक भी लज्जा नहीं आती ? चलो दूर हटो, मुझे क्यों रोक रहे हो ? रास्ता छोड़ो ! मुझे जाने दो।

जाधवराव—[रास्ता छोड़ कर खड़ा हो जाता है] एं ! खबरदार, खड़ी रहो। कहाँ भाग रही हो ? देखो, मैं तुम्हें समझा कर कह रहा हूँ। एक बार फिर विचार कर लो। मेरी बात सुनोगी तो तुम्हारे लिए बहुत अच्छा होगा। [निकट जा कर पुनः प्रेम से] सुन्दरी, तुम यह हठ क्यों कर रही हो ?

[ऐसा कह कर वह ज्यों ही मस्तानी को पकड़ने के लिए हाथ बढ़ाता है, त्यों ही मस्तानी उसके हाथ पर ज़ोर से अपनी खंजर का प्रहार करती है। जाधवराव मूर्च्छित हो कर गिर पड़ता है औ उच्च स्वर से रामू को पुकारता है।]

हाय, हाय, मरा रे, मरा ! अरे रामू, दौड़ो रे दौड़ो ! क्या देखता है ! इस राँड को पकड़ ! बाँध इस की मुशकें।

[ऐसा कह कर वह मूर्च्छित हो आता है और रामू आता है।]

रामू—[घबराहट में भागता हुआ आता है] हे स्त्री, तुमने मेरे मालिक को क्या कर दिया है ? [धीरे से] तुम ने खूब खबर ली है, बच्चू की। बच्चू, तुम मेरे पीछे बधिक की भाँति लगे थे। हूँ ! क्या देख रही हो अब ? यहाँ से एक दम भाग जाओ। [उस को इशारा करता है] एक पल भर भी यहाँ न ठहरो। चली जाओ। अब समय न खो। यदि तुम यहाँ ठहरोगी तो तुम्हारी हानि हो जायगी। हमारा यह बधिक काल रूप है। इसके दाँत तुम ने खूब खट्टे किए। मैं दीन तुम्हारे चरणों का दास हूँ। मुझे भूल मत जाना।

[इतना सुनते ही; मस्तानी जाधवराव के वस्त्रादि लेकर चली जाती है। और उसके जाने के पश्चात् जाधवराव के निकट आ कर]

राव साहब, उठिए। इतने डर क्यों रहे हो ? यह देखिए, मैंने उसे पकड़ लिया है ! अब कहाँ जाती है ! ऐं !

[ऐसे कहते-कहते परदा गिरता है]

(पहला अङ्क समाप्त)

अङ्क दूसरा

प्रवेश पहला

स्थल—गोदावरी के पुलिन पर बाजीराव का शिविर

[परदा उठता है। बाजीराव के तंबू पर पहरा देता हुआ रामोजी शिन्दे दिखाई देता है।]

रामोजी शिन्दे—[पहरेदार के ठाट-बाट में]

गाना

शूर शिरोमणि बाजीराव !
आर्यों में तुझ सा है किसका आज अपूर्व प्रभाव ?
गो-ब्राह्मण का सच्चा सेवक यवनों का तू काल,
दुखियों का दुखहर्ता करता दीनों का प्रतिपाल।
घेर यदि तुझ को लेती है अरि-दल-बादल-भीर,
निकल वहाँ से आता है तू वायु-यान सम चीर।
काँप कलेजे शत्रुगण के उठते तुझ को देख,
अमिट हमारे उर-पट पर है तव महिमा की रेख।

[स्वगत] बाजीराव, सच मुच शूर है, सच मुच शूर है। उसे देख शत्रुओं का कलेजा काँप उठता है। दीन-

दुःखियों का दुःख दूर कर के वह सदा उनको सुख देता है। गो-ब्राह्मण की रक्षा कर के वह यवनों का संहार करता है। वह अपनी सेना पर बड़ा प्रेम रखता है। संकट के समय आप कष्ट उठा कर भी उनकी रक्षा करता है।

जो गत ग्राह गजेन्द्र की सो गत भई है आज।
जाती बाजी हिन्द की राखो बाजी लाज॥

[देखने की सी आकृति बना कर] अरे, यह सामने से कौन घोड़ा दौड़ाए इधर आ रहा है ! यह कोई मुसलमानों की ओर का लड़का जान पड़ता है। पर इतनी रात गये हमारे शिविर में आने का इसका क्या मतलब !! कारण [देखकर] अरे, इस ने तो अपना घोड़ा बिलकुल मेरे ही सामने लाकर खड़ा कर दिया ! इस लिए अब इस छोकरे से कारण पूछना चाहिए। [उस मनुष्य से] क्यों भाई, आप कौन हैं ? कहाँ से और किस लिए इतनी रात को हमारी छावनी में आए हैं ? [फिर सुन कर] क्या कहते हो ? " आप क्या निज़ाम की ओर के कोई सरदार हैं और हमारे स्वामी से भेंट करने आए हैं ?" [उस को] और वह इतनी रात को किस लिए ? आपको उन से मिलने के लिए क्या दिन नहीं था ? अभी इस समय आप उनसे न

मिल सकेंगे। हमारा स्वामी इस समय सोया होगा। जाओ, सवेरे आना, मिल जायँगे! [फिर सुन कर] क्या कहते हो? इसी समय जैसे भी हो उन से मिलना है! बहुत आवश्यक काम है, मैं हाथ जोड़ता हूँ! [उस से] अरे, शिव, शिव!! किस लिए इतने गिड़गिड़ा कर हाथ जोड़ रहे हो? रहो, यहीं खड़े रहो! मैं तंबू में जाकर देखता हूँ। यदि जागते होंगे तो आपकी सूचना उनको दे दूँगा। [ऐसा कह कर जाता है। परदा उठता है। बाजीराव साहब पहली रात में अपने तंबू में बैठे विचार कर रहे हैं।]

बाजीराव—[स्वगत] सच मुच ये दोनों हिन्दुओं के प्रभु हैं। ये हमारे सच्चे वन्दनीय हैं। उन के बीच का बैर अब मिट जायगा। राज्य की बाँट हो जायगी। फिर भी वे मुसलमान पराए हैं। उनका हनन करना बाकी है।

"संभाजी महाराज को शाहू माहराज के सिपुर्द कर के पन्हाल गढ़ में रखना चाहिए।" इस सन्धि की शर्तों से हमारे सब हेतु पूरे हो गये हैं। अब केवल एक बात कार्य-रूप में परिणत होते ही आपस के सब टण्टे मिट जायँगे। रहा, मुसलमानों की ख़बर लेना, सो जैसे भी चाहो ली जा सकती है। कहते हैं, प्रतिनिधि ने और जाधवराव ने

षड्यंत्र रचा था ! हराम ख़ोर कहीं के !! अपने राजा को मुसलमान शत्रु के हाथ देना, यह कितना अधमता का काम किया था ! और इस स्वराज्य को रसातल पहुँचाने का समय लाया था ! ऐं ! परंतु प्रभु की पूर्ण कृपा थी, मैं ने उन के दाँत खूब खट्टे किए। उस निज़ाम को छिपने को जगह नहीं मिलती थी। अच्छा, अब यह सन्धि-पत्र महाराज के चरणों में अर्पण करते ही इस मुहिम का काम समाप्त हो जायगा।

श्रीगुरुमहाराज के आशीर्वाद से, राजा की कृपा से और पूर्वजों के पुण्य-प्रताप से मुझको विपुल जय-श्री प्राप्त हो। तब मैं जगत् में सचमुच धन्य हो जाऊँगा !

[इतने में राणोजी शिन्दे प्रवेश करता है]

राणोजी शिन्दे—[प्रणाम करके] रात बहुत बीत चुकी है, तो भी सरकार को अभी तक नींद क्यों नहीं आई ? आप निश्चिन्त हो कर सोइए। इस तंबू पर राणोजी का पहरा है। आप को कुछ भी चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं।

परन्तु महाराज, मैं आप से एक बात कहना भूल गया। देखिए सरकार, निज़ाम की छावनी से एक सरदार आया है। छोटा बच्चा है, केवल पन्द्रह सोलह वर्ष का होगा। उस

ने मुझे बड़ा कष्ट दिया है। कहता है, मुझे इसी समय आप के मालिक से मिलना है। मैंने उसे सवेरे आने को कहा था, पर वह मानता नहीं। सरकार अब जैसी आज्ञा हो, वैसा मैं उसे कह दूँ।

बाजीराव—कौन ? निज़ाम की तरफ का सरदार ! और इतनी रात को हम से भेंट करना चाहता है ! और कहते हो, छोटा बच्चा है ! यह क्या बात है रागोजी ? अच्छा, उसे अभी भीतर ले आओ।

रागोजी शिन्दे—बहुत अच्छा सरकार ! अभी आपकी सेवा में ले आता हूँ।

[ऐसा कह कर जाता है और उसी समय एक तरुण सरदार को ले आता है।]

सरदार—[बाजीराव को देख कर आनन्द से] [स्वगत] अहा ! यह चन्द्रवदन मुझे कैसा रम्य दीख रहा है ! इसका सौन्दर्य रति-पति को भी लज्जित करता है। कैसी सौम्य, सुखद और मोहक मूर्ति है। इसे देख मेरा मन मुग्ध हो गया है। कपाल पर सुन्दर तिलक है। सिर पर तिलई पटका कैसी शोभा दे रहा है !

रहने दो। अब धैर्य धर कर उन के सामने जाऊँ। फिर जो होता है सो हो। [ऐसा कह कर बाजीराव के निकट जाता है और प्रणाम करता है।]

मैं हाथ जोड़ कर महाराज का चरण-वंदन करता हूँ। मेरी एक प्रार्थना है। उसे सुनने की कृपा कीजिए। अपने दास पर दया रखिए। प्रभु आप को प्रसन्न रक्खे!

बाजीराव—[सरदार से]

कौन, कहाँ से आया है तू, क्या है तेरा नाम ?
ऐसे कुसमय में आने का है क्या तेरा काम ?
निकल नहीं सकती क्यों तेरे मुँह से साफ ज़बान।
है क्या तेरे दिल में मुझ से कर दे जल्द बयान।

तुम कौन हो! कहाँ से आये हो! तुम्हारा नाम क्या है! असमय में यहाँ किस लिए आये हो? तुम्हारे मुख से बात साफ क्यों नहीं निकलती? शीघ्र कहो, तुम्हारे मन में क्या है?

सरदार—[हाथ जोड़ कर] प्रभुवर! दास निज़ाम साहब का भृत्य है। मैं एक पठान का बेटा हूँ। मेरा नाम मस्तान खाँ है। धृष्टता क्षमा होवे, महाराज के चरणों में मेरी एक प्रार्थना है, स्वामी!

बाजीराव—कौन प्रार्थना है? और कैसा मैं तुम्हारा स्वामी? हाल में निज़ाम का क्या विचार है? हाँ मुझ को सब मालूम हो गया है। अब तुम जाकर निज़ाम से कहना कि

अब मैं आप को अच्छी तरह पहचानता हूँ। उनके मन में होगा कि प्रत्येक विषय में हम ही युक्ति जानते हैं। परन्तु उन से कहना कि मन में खूब समझ लें कि आप के ऐसे दाँव-पेच में अब हम फँसने वाले नहीं।

सरदार—[हाथ जोड़ कर] क्या महाराज के मन में यह विचार है कि मुझ को निज़ाम साहब ने भेजा है ? नहीं, नहीं ! मन में ऐसा बुरा संदेह कदापि न लाइए। मैं कहने में लाचार हूँ। मुख से कुछ कह नहीं सकता।

बाजीराव—[मन ही मन आश्चर्य से] इस को निज़ाम ने आज आधी रात के समय मुझे अकेला जानकर मेरी हत्या करने के लिए तो नहीं भेजा ? कारण, कल तो उस का षड्यंत्र मेरे परम विश्वास्य सरदारों, शिन्दे और होलकर के मेरे निकट होने के कारण विफल हुआ। इसी लिए कहीं उसने यह दूसरी युक्ति तो नहीं निकाली ? अच्छा है, निज़ाम साहब, इस बाजीराव से वास्ता पड़ा है। [ज़ोर से सरदार को]—सरदार, ऐसा कापुरुषों जैसा नीच विचार मन में रख कर छल करना, यह क्या शमशेर बहादुरों का काम है ? तुम्हारे निज़ाम ऐसा समझते होंगे ! परन्तु उन से कहना कि आस्तीन चढ़ा कर लड़ने के लिए मैदान में आएँ। फिर मालूम होगी इस वीर की वीरता।

सरदार—खाविन्द, मालिक, ऐसे बुरे विचार मन में प्रति-क्षण काहे को ला रहे हैं ? इस सरदार का कुल ऐसे नीच कर्म को या हीन उद्देश्य को ग्रहण करने वाला नहीं।

ऐसे बुरे विचार आप के मन में क्यों आ रहे हैं ? दीन-बन्धु, मेरी विनय सुन लीजिए। मैं चरणों पर सीस धरता हूँ। मेरा न्याय कीजिए।

दीन-बन्धु, विनय सुन लीजे।
इनकार न कीजे, न्याय दीजे॥

बाजीराव—[बीच में] कौन विनय है ? और किस बात का न्याय चाहिए ? तुम्हारा मतलब कुछ समझ में आता नहीं। क्या है, बोलो तो।

सरदार—निवेदन यही है कि श्रीमान् का एक व्यक्ति मेरे डेरे में आया था। वह मेरा सब कुछ ही लूट ले गया। उसी व्यक्ति को मेरे सिपुर्द कर दीजिए। मेरा जो कुछ लूटा है वह मुझे दिला दीजिए।

[ऐसा कह कर बाजीराव के पाँव पकड़ने लगता है तो]

बाजीराव—[क्रोध से तलवार खींच कर] हा ! खबरदार, जो हमारे निकट आया। याद रख, खड्ग से तेरा मुण्ड रुण्ड से अलग कर दूँगा। धूर्त्त, तेरे शरीर के मैं टुकड़े टुकड़े कर

डालूँगा। तेरी लाश को उठा कर एक पल में निज़ाम की छावनी में फेंक दूँगा।

सरदार—[पीछे हट कर और गर्दन झुका कर]

रणवीरों के योग्य दूसरा काम ही और क्या है ? मेरी यह गर्दन उपस्थित है। अपना काम कीजिए। महाराज, मेरी विनय का न्याय कीजिए। यह मेरी गर्दन काट कर विश्राम कीजिए। यह मेरी गर्दन उपस्थित है, बेशक काट लीजिए। स्वामी, अब विलम्ब न कीजिए। मैं श्रीमान् के पाँव पड़ता हूँ।

बाजीराव—[तलवार निकाल कर] मैं शमशेर से तेरी गर्दन उतार कर रख दूँगा। सावधान !

[सरदार न डर कर वैसे ही हाथ जोड़े खड़ा है। ऐसा देख आश्चर्य से अपने मन में] बड़ा आश्चर्य है ! इतनी रात में ऐसा सुन्दर और तरुण सरदार मेरे सामने हाथ जोड़ता है और पाँव पड़ता है। मैंने इस को इतना डराया है, फिर भी यह नहीं डगमगाता। परन्तु मरने के लिये तैयार है ! कहता है, "मेरा सर्वस्व छिन गया है। वह लौटा दीजिए।" यह कैसा आश्चर्य है !

इसके वचन सुन कर मैं चकित-स्तम्भित हूँ। सच्चा हेतु समझ में नहीं आ रहा है। इस समय तर्क कुछ काम

नहीं देता। आधी रात में इस का आना, हाथ जोड़ कर मेरे पैर पकड़ना! मैं ने बहुतेरा झिड़का है, फिर भी यह नहीं डगमगाया। प्राण देने के लिए उद्यत है! कहता है कि मेरा सर्वस्व छिन गया है, वह मुझे वापस दे दो। इस का कुछ अर्थ समझना मेरे लिए कठिन हो रहा है। [प्रकट] सरदार, जिसने तेरा सब कुछ छीन लिया है, वह पाजी लुटेरा कौन है? जल्दी बता। मैं अभी उसे तेरे सिपुर्द कर दूँगा। परन्तु सरदार याद रख, यदि तेरी ये बातें केवल धोखा निकलीं, तो इस तलवार से तेरी गर्दन उतार दूँगा।

सरदार—ऐसा संदेह किस लिए? मैं लाचार हूँ। मेरा कोई सहायक नहीं। इसी लिए मैं महाराज के श्री चरणों में आया हूँ। इस दास पर तलवार उठाना उचित नहीं। आप के बिना मेरा कोई दूसरा आश्रय नहीं।

[ऐसा कह कर बाजीराव के पाँव ज़ोर से पकड़ लेता है।]

बाजीराव—[दया से] उठो सरदार। मैं तुम्हारा सहायक हूँ। अपराधी को दण्ड दूँगा। उसे तुम्हारे सिपुर्द कर दूँगा। मैं तुम्हें यह वचन देता हूँ। चिन्ता मत करो। धीरज धरो। शोक को विसार दो। उठो!

सरदार—[उठता है] नहीं, नहीं, उस ने यद्यपि मेरा सब कुछ छीन लिया है तो भी मैं उसे अपराधी नहीं कह सकता। श्रीमान् से मैं वचन माँगता हूँ।

बाजीराव—अच्छा, यह लो मेरा वचन। [उसे वचन देता है] —मेरे वचन पर तुम निश्चिन्त रहो। मेरा यह वचन चमत्कार दिखायगा। मैं बाजीराव हूँ। मेरा वचन असत्य न होगा। मैं इस बात की लाज रक्खूँगा।

सरदार, अब तुम चिन्ता न करो। यहाँ से तीन कोस के अन्तर पर माणिक बाग नाम का एक उद्यान है। कल यहाँ से उठ कर हम वहीं पड़ाव करेंगे। तुम भी वहाँ उपस्थित रहना। मैं फिर तलाश करूँगा। अब तुम हमारे निकटवर्ती तंबू में विश्राम करो। जाओ, बहुत रात बीत चुकी है। [राणोजी शिन्दे से] राणोजी, इस सरदार को इस पास के तंबू में उजाला होते तक रहने दीजिए। यह क्या कहता है, इसका भाव कल सवेरे मालूम करेंगे। इसका ठीक-ठीक प्रबंध कर दीजिए।

राणोजी शिन्दे—सरकार, जैसी आज्ञा ! [सरदार से] चलो सरदार, अब हमारी सरकार को घड़ी भर विश्राम करने दो।

सरदार—बहुत खूब। [प्रणाम करता है] रुख़सत होता हूँ।

[ऐसा कह कर राणोजी और सरदार जाते हैं]

बाजीराव—[स्वगत] बाहर से सरदार की सूरत को देख कर मेरे मन में विलक्षण भाव उठते हैं। इसका रूप कैसा मधुर है! वाणी कैसी रुचिर है! शरीर कैसा साँचे में ढला है! इसे देख कर मेरे मन में एक निराली कल्पना उठती है। भला यह क्या बात होगी! और हमारी छावनी के एक सरदार ने इसका सर्वस्व-हरण किया है, वह उसे वापस माँग रहा है! वह कहता है, जिसने मेरा सर्वस्व-हरण किया है उसे मेरे सिपुर्द कर दो! यह क्या बात है? भाई, सरदार बड़ा चतुर है! सवेरे देखेंगे कि क्या होता है! चलूँ, अब तनिक लेट लूँ। देखें, आँख लगती है या नहीं। [आँखें मीच कर देखता है] छिः, पर अब कैसी नींद आयगी! अब तो बिलकुल तड़का हो गया है!

रजनी अपना नित्य का काम करके चले गई है। प्राची शुभ्र वसन पहने आ रही है। सकल तिमिर का नाश हो गया है। तारागण तेज-रहित हो रहे हैं। खगवृंद चोगे की तलाश में बड़े हर्ष से किलकिल शब्द करते हुए उड़ रहे हैं।

[परदा गिरता है]

प्रवेश दूसरा

स्थल—माणिक बाग।

[परदा उठता है। मस्तान खाँ सरदार माणिक बाग के बंगले में अकेला खड़ा है।]

मस्तानी—[स्वगत] कल तो बात खूब बन गई थी। अब आगे क्या करना चाहिए ? यह पुरुष-वेश मुझे कुछ ऊपरी-ऊपरी सा जान पड़ता है। मैं इसे उतार कर अपने प्रियतम से कब मिलूँगी ? मेरी यह उत्कण्ठा कब पूर्ण होगी ? हे नरवर, आप मुझे प्रेम से कब मिलेंगे ? मैं पागल हो रही हूँ। मैं कब तक धैर्य धरूँ ? इस पुरुष-वेश में मैं क्या करूँ ? मैं यत्न-पूर्वक इस कार्य को सिद्ध करूँगी।

पर वे अभी तक क्यों नहीं आए, कौन कह सकता है ? अच्छा, आ जायँगे अभी ! उन के आने तक तनिक माणिक बाग के पिछले भाग की शोभा देखती हूँ। उनके आते ही अपना वास्तविक स्वरूप प्रकट करके एक बार उनके पैर पकड़ लूँगी। तब मेरा काम हो जायगा। [ऐसा कह कर बाग में फिरती है और अवलोकन करती है।]

गाना

कैसी है फुलवारी प्यारी !

इसके सम्मुख नन्दन-वन की शोभा सारी हारी ।
चारों ओर वह रहा सुरभित शीतल मंद समीरण,
विटप विशाल कर रहे मानो नील गगन का चुम्बन ।
ललक ललक कर लता लिपटती चढ़ी जा रहीं उन पर,
फल से लदे पेड़ भी अपना प्यार दिखाते झुक कर ।
नाना पक्षी चहक चहक कर गाते सुन्दर गाना ।
पहनाते हैं इस भूतल को स्वर्ग लोक का बाना ॥
कैसी है फुलवारी प्यारी ।

अहा, यह उपवन कैसा सुरम्य है ! देख कर मन में ऐसा भास होने लगता है, मानो नन्दन वन है । ये वृक्ष मानों गगन का चुम्बन कर रहे हैं । फलों के भार से तरु पृथ्वी पर झुक रहे हैं । नाना प्रकार के असंख्य पक्षी मंजुल गीत गाकर आनन्द से क्रीड़ा कर रहे हैं।

[झाँकती है] अरे वे आगये जान पड़ते हैं । तो अब मैं इस बंगले में घुस जाऊँ । मैं कल से उन्हें छका रही हूँ ।

कहीं उन्हें क्रोध तो नहीं हो आया ! [ऐसा कह बंगले के भीतर जाती है ।]

[इतने में बाजीराव और राणोजी शिन्दे प्रवेश करते हैं ।]

बाजीराव—भाई राणोजी, कल उस तरुण को मैंने कह रक्खा था कि कहीं न जाना । फिर भी बड़ा आश्चर्य है कि वह कैसे चला गया । मैंने उसकी बहुत तलाश की है, पर उसका पता नहीं लगता । मालूम नहीं, उसके मन में क्या हेतु है । उसकी रम्य मूर्ति मेरे नेत्रों के सामने खड़ी रहती है । मुझे बेचैनी सी हो रही है ।

राणोजी शिन्दे—ठीक है ! कल वाला छोकरा बड़ा सुन्दर है । मानों मदन की मूर्त्ति है । बड़ा ही नम्र और सज्जन दीखता था । कैसा मधुर-भाषी था, मानों मुँह में मिश्री हो । वह अपने आप ही चला गया है या कोई यवन उसे पकड़ ले गया है ? वह अभी अबोध बालक है । आश्चर्य है कि वह गायब कैसे हो गया !

बाजीराव—उसे ढूँढ़ने के लिये आत्माराम को भेजा था । पर अब तक उसका भी कुछ पता नहीं ! तब भाई राणोजी, यह काम आप के बिना नहीं हो सकेगा । इसी लिए आप ही जाकर उस सरदार को ढूँढ़ लाइए ।

राणोजी शिन्दे—जैसी आज्ञा ! देखिए उस आत्माराम को और

उस सरदार को दोनों को खोजकर आपकी सेवा में उपस्थित कर देता हूँ। [ऐसा कह कर निकल जाता है।]

बाजीराव—[स्वगत] कहाँ चला गया होगा, भला! सच मुच कल से उसकी रम्य मूर्त्ति मेरे नेत्रों के सामने दीख रही है। सरदार, तुम ने यहाँ आकर मुझे व्यर्थ में क्यों मुग्ध किया? मेरे अन्तरङ्ग को दंग करके तुम कहाँ भाग गये? अहो, मुझे कैसा मोह सा हो गया है!

मस्तानी—[स्वगत] भ्रमर का मन सहज ही कुमुदनी पर जाता है। तुम्हारे जैसे श्रेष्ठ पुरुष का मन चाहे जिधर भी चला जाय उसे कोई दोष नहीं दे सकता। आपका दर्शन होने के बाद अब जगत् में मुझे कुछ भी नहीं सूझता।

बाजीराव—प्यारे, यदि तुम निज़ाम की छावनी को वापस लौट गये हो तो तुम ने ठीक नहीं किया। कारण, तुम ने इधर उधर की बातें बनाकर मुझे मोह-पाश में बाँध लिया है। हे सुशील, देखो, तुम्हें यह योग्य नहीं था। तुम ने ऐसा क्यों किया? तुम लगन लगाकर कैसे निकल गये! [सोचकर] छिः, पर उसके कल के अंतिम भाषण से उसके मन में कपट भाव तो बिलकुल नहीं झलकता था। इसमें ज़रूर कोई गड़बड़ हुई जान पड़ती है।

मुझे ऐसा जान पड़ता है कि तुम्हें कोई यवन ले गया है,

इसी लिये तुम मुझे इस समय नहीं मिल रहे हो। मैं उन को दण्ड देकर तुम्हें छुड़ा लाऊँगा। मेरी यह बात सच जानना।

मस्तानी—[स्वगत] यवनों की क्या मजाल है कि मुझे ले जायँ। वे मुझे ले जायँगे, यह संदेह ही आपके मन में क्यों उत्पन्न हुआ है ? आप केसरी के समान वीर हैं और यवन लोग भेड़-बकरी हैं ! यद्यपि मैं बालिका हूँ पर देखूँगी वे मुझे कैसे हाथ लगाते हैं !

बाजीराव—[कुछ देर सोच कर] फिर वही विचार करना चाहिए। उस यवन को अपार शौर्य दिखा कर मैं उस सरदार को छुड़ा लाऊँगा। वह अधम यवन मेरे बल-विक्रम को देखते हुए भी जान बूझ कर ऐसा कुविचार कर रहा है ! हाथ में यह तलवार ले कर मैं इसी क्षण सब दुष्टों का संहार करता हूँ। यदि मैं जगत को यवन-शून्य न कर दूँ, तो मैं शूर नहीं कहलाऊँगा। प्राणों की भी कुछ परवा न कर इसी समय मैं उन की छावनी में जाऊँगा और तरुण को ढूँढ़ निकालूँगा। तभी मैं अपने को बाजी कहलाऊँगा।

[ऐसा कह कर जाना चाहता है। इतने में]

मस्तानी—[बंगले के बाहर आ कर एकदम बाजीराव से] अहा शूरवीर, मैं आप का सच्चा दास हूँ। मैंने देख लिया कि

आप मेरी रक्षा के लिये सचमुच तैयार हैं। मैं आप के चरण छूना भूल गया, इस के लिए मुझे क्षमा कीजिए। मेरी हाथ जोड़ कर प्रार्थना है कि मेरे सब अपराध क्षमा कीजिए।

अहा! अहा! स्वामिन्, इस तुच्छ सरदार के लिए इतना दृढ़ निश्चय! आप के मन में इतनी बेचैनी! क्षमा कीजिए। बंदा गुलाम है। अपराध क्षमा कीजिए महाराज!

बाजीराव—[आश्चर्य से] सरदार कल से कहाँ गए थे? तुम से मैंने छावनी से बाहर न जाने को कहा था। तुम भाई राणो जी से आँख बचाकर निकल गये, यह क्या? बड़े होशियार दीखते हो, कपटी कहीं के।

मस्तानी—महाराज, आप को यह चरण-सेवक कपटी क्यों जान पड़ता है? मैं आप की आज्ञा बिना इस स्थान पर आया हूँ। मुझ से कोई अपराध हुआ हो तो क्षमा कीजिए।

यदि मैं आप को कपटी जान पड़ता हूँ तो निस्संदेह आप मुझे चाहे जो दण्ड दीजिए। महाराज, आप इस बाग़ में आने वाले थे, अतएव इस की सब व्यवस्था ठीक करने के लिए, आप की आज्ञा लिए बिना ही, मैं निकल आया। इसके लिए मुझे क्षमा कीजिए। चलिए महाराज, बंगले में और थोड़ा विश्राम कीजिए। क्रोध शान्त कीजिए। यह दास सर्व प्रकार से सेवा करने को तत्पर है।

बाजीराव —[स्वगत] अरे, यह सरदार हिन्दी बोलने में बड़ा होशियार है। [प्रकट] सरदार, ईश्वर ने यह मधुर भाषण तुम्हें विचित्र वस्तु दी है। तुम्हें देखते ही हमारा क्रोध सब जाता रहा है। तुम कैसे मीठे वचन बोलते हो! तुमने मुझे मोहित कर लिया है। ईश्वर ने तुम्हें पूर्ण मनोहरता दी है। तुम्हें देख कर मेरा क्रोध शान्त हो गया है। तुम मेरे स्नेही बने हो। यदि तुम्हारी इच्छा हो तो चलो, उस रम्य मन्दिर में चलते हैं।

चलिए। [इतना कह कर प्रेम से उसके कंधे पर हाथ रखता है और मन ही मन कहता है।] अहा! यह तरुण कितना सुन्दर दीखता है। इस का सौन्दर्य रति-पति को भी लज्जित करता है। इस की गौर वर्ण देह कैसी साँचे में ढली है। मेरा मन भ्रम के सागर में डूबा जा रहा है।

मस्तानी—[गलीचा दिखा कर] बैठिए महाराज, इस गलीचे पर। और मेरी कल की प्रार्थना का निर्णय कीजिए।

बाजीराव—सरदार इस बाजीराव को तुमने कल से अतीव विलक्षण संशय में डाल कर पागल बना दिया है। ईश्वर ने तुम्हारे शरीर में सभी सद्गुण कैसे ठसाठस भरे हैं! सचमुच तुम्हारी देह बड़ी सुकुमार है। मेरा मन तुम्हें बार बार देखने को होता है।

मैं क्या कहूँ ! तुम्हारा यह सुन्दर स्वरूप, तुम्हारी देह-रचना, तुम्हारा तारुण्य और मनोमोहक वाणी ब्रह्मा ने यदि किसी—

मस्तानी—[बीच में ही] "किसी स्त्री को दी होती तो ठीक हुआ होता !" यही है न स्वामी का कहना ? [हाथ जोड़ कर] मेरे इन शब्दों के लिए क्षमा कीजिए महाराज !

बाजीराव—सरदार, तुझे सब कुछ क्षमा है। हे तरुणा, तुम मुझे बड़े ही चतुर दीख पड़ते हो। तुम नम्रतापूर्वक मधुर भाषण करके मेरे मन को रिझाते हो। इसी लिए आज मेरे हृदय में आनन्द हो रहा है। तरुणा, कहो तुम क्या चाहते हो ? मुझे समझाओ तो सही।

मस्तानी—क्या आप समझते हैं, प्रभु चाहे जैसे गुण चाहे जैसे स्थान में रख देता है ? देखिए, कोकिला को मीठी वाणी दी है, तो हंसिनी को मंद गति, मृगी के नेत्रों को चंचलता, और केतकी को पीत वर्ण और मधुर सुवास। क्या ये सब गुण विधाता ने योग्य स्थानों पर नहीं रक्खे ?

बाजीराव—पर प्यारे ये सब गुण किसी स्त्री के शरीर में होने चाहिए थे, तुझे कैसे मिल गये ?

मस्तानी—महाराज, ये सब गुण मुझे देने में ब्रह्मा ने भूल कर दी, ऐसा तो आप नहीं कहेंगे न ?

बाजीराव—[स्वगत] मन में मस्त हो कर यह क्या कह रहा है ? पता नहीं लगता, मेरी कल्पना-तरंग का क्या फल होगा ! पुरुष की आकृति है और स्त्री के समान कृति है ! इस ने अपने बल से मुझे प्रेम में बाँध दिया है। विचारशील होते हुए भी मुझे कुछ सूझ नहीं पड़ता !

[प्रकट] ये सब गुण तुम्हें देने में ब्रह्मा ने भूल तो नहीं की ? सरदार, फिर तुम्हारे आगे भाई, हमारी हार हुई !!

मस्तानी—सरकार, अब चोरी क्यों रक्खूँ [ऐसा कह कर शरीर पर से कोट और सिर पर से पगड़ी उतारता है। नीचे सारा स्त्री-वेष दीख पड़ता है।] नाथ, मैं मन में आप को वरण करके यहाँ आई हूँ। प्रियतम, मुझे दूसरा कोई भी मार्ग नहीं भाता। मुझे अंगीकार कर के संतुष्ट कीजिये। आप के बिना मेरा कोई पति देव नहीं।

प्रियतम, कहिए अब ब्रह्मा ने भूल की क्या ?

बाजीराव—[देख कर आश्चर्य से] अरे, यह क्या ! जीभ से निकलते ही बात सत्य हो गई !! कैसा चमत्कार है !!! अन्त को तुम्हारे सर्वस्व का हरण करने वाले हम ही ठहरे ?

मस्तानी—इस में क्या संदेह है ! मेरा यह तन-मन भोज के दिन

आपने छीन लिया है। या तो वह मुझे लौटा दीजिए, नहीं तो अपना तन-मन मेरे सिपुर्द कर दीजिए। यही मेरी माँग है।

बाजीराव—नीति और नय को त्याग कर मैं तुम्हें कैसे वरूँ? तुम तो बड़ी सती साध्वी दिखाई देती हो। पर-पुरुष की कामना करके तुम नरक में जाने का साधन क्यों कर रही हो? इस हेतु को छोड़ दो।

मस्तानी—इस विषय में आप कल ही मुझे योग्य न्याय करने का वचन दे चुके हैं। तब [प्रेम से] प्रियतम, मेरा तन-मन आपने छीन लिया है, वह क्या आप मुझे लौटा सकेंगे? तब अभी—"तुम इस जन्म में मेरी हो" ऐसा एक बार कह कर इस दासी को अपनी शरण में ले लीजिए।

बाजीराव—मैं सुनीति को छोड़ कर दुष्कृति नहीं करूँगा।

मस्तानी—मेरा वृत्त बहुत गहण है। कृपया दत्त चित्त हो कर सुन लीजिए।

बाजीराव—सज्जन पुरुष पराई स्त्री के वचन कभी नहीं सुनते।

मस्तानी—पराई स्त्री होने का दोष मुझे व्यर्थ मत दीजिए।

बाजीराव—तुम पर-स्त्री नहीं, तो लोगों को बताए बिना यहाँ कैसे आ गई?

मस्तानी—मैं अपना वृत्तान्त कहती हूँ। सुनिए।

बाजीराव—अपना सारा वृत्तान्त शीघ्र कहो। देर मत करो।

मस्तानी—मैं आप के श्री चरणों से यही माँगती हूँ कि मुझ पर दया कर के क्रोध न कीजिए।

बाजीराव—मुझे कष्ट न दो।

मस्तानी—प्राण-सखे, आप को देख कर मैं उसी दिन से पागल हो रही हूँ। नाथ, इस दासी का अब अन्त न देखिए। मन को शान्त कर के तनिक बैठिए। आप के बिना मुझे कोई दूसरा सहारा नहीं। हे गुणागार, यदि आपने मुझे अंगीकार न किया तो, मैं ने पूर्ण निश्चय किया है, कि अपने प्राण नहीं रखूँगी।

[इतना कह कर बाजीराव के पाँव पर गिर पड़ती है।]

बाजीराव—[उसे उठा कर] हे सखी, तुम्हारा यह निश्चय देख कर मेरा हृदय आनन्द से परिपूर्ण होगया है। मेरे मन का इच्छित हेतु सिद्ध होगया है। अब तुम सब चिंता छोड़ दो।

क्या! मैं यह कोई स्वप्न तो नहीं देख रहा हूँ! [प्रेम से] अहा! सुन्दरी, कल से तुम ने मुझे संदेह में डाल रक्खा था। क्या तुम्हारे लिए यह उचित था? अब बैठ जाओ। कहीं तुम्हारे पाँव न दुखने लगें।

मस्तानी—प्रियतम, मैं तुच्छ अबला आप को कैसे फँसा सकती

हूँ ! यह दीन दासी आप के श्रीचरणों के सामने क्या चीज़ है !! अब दासी की हाथ जोड़ कर चरण-कमलों में विनती है कि मुझे प्रेम से स्वीकार कीजिए। दासी ने अपना तन-मन आपके चरणों में अर्पण कर दिया है। मैं हाथ जोड़ कर प्रार्थना करती हूँ कि इस दासी का कभी परित्याग न करना।

बाजीराव—[आनन्द से] अहा हा हा ! हे सुन्दरी, तुम ऐसा क्यों कहती हो ? मन में द्वैतभाव क्यों ला रही हो ? घर पर आई लक्ष्मी का कौन अभागा परित्याग करेगा ? फिर तुम्हारे जैसी सुन्दरी का त्याग !

मस्तानी—जली मुई यह प्रशंसा ! रहने भी दीजिए। अब आप मेरा वृत्तान्त सुनें तो आपको सब पता लग जाय। आप सुनने की कृपा नहीं करेंगे ?

बाजीराव—हाँ, हाँ ! कहो, इस मुख से निकले मीठे शब्द किस को प्यारे न लगेंगे ? कह देखो।

मस्तानी—मैं बुन्देल खण्ड की रहने वाली हूँ। छत्र-साल मेरे पिता हैं।

बाजीराव—कौन ! बुन्देल खण्ड के राजा छत्रसाल ! वाह, वे तो हमारे बड़े मित्र हैं !!!

मस्तानी—फिर तो क्या कहना है, दूध में शक्कर ही मिल

गई समझो ! मेरी माँ थी—चोरी क्यों रक्खूँ—मुसलमानी। वह बहुत वर्ष से राजा के पास रहती थी । बड़ी रूपराशि थी। उसके रूप को देख कर इन्द्राणी भी लज्जित होती थी। उसी के उदर से मैंने जन्म लिया था । मेरा नाम मस्तानी है। निज़ाम के साथ राजा का युद्ध हुआ । उस में हम भी माँ-बेटी दोनों पकड़ी गईं और वह हमें हरण करके ले आया। फिर मेरी माँ ने निज़ाम साहब के उस मुए भूँडे, काले कलूटे शरीफ खाँ के साथ मेरा विवाह करने का निश्चय किया।

बाजीराव—वाह वा, वाह वा ! वह शरीफ खाँ निज़ाम का चिरंजीवी है न ? फिर, अच्छा हुआ होता ! निज़ाम के कारण फिर तो तुम दक्षिण की बादशाह बेगम बनी होतीं।

मस्तानी—अच्छा, अच्छा, बस करो ! हुआ !! आप हमें ताने मार रहे हैं, मैं सब समझती हूँ !

बाजीराव—अच्छा भाई ! हो गया !

[इतने में आत्माराम बंगले में आता है। उसे देख मस्तानी लज्जा से एक ओर खड़ी हो जाती है।]

आत्माराम—[हाथ जोड़ कर] सरकार, मैं थक गया भाई, उस सरदार को ढूँढ़ते ढूँढ़ते ! कहीं उस का पता नहीं चलता।

[मस्तानी की ओर देख कर] पर क्षमा कीजिए महाराज, मैं तीसरा यहाँ क्यों ठहरूँ ? [जाने लगता है]

बाजीराव—अरे, आजाओ, जाओ मत ! तुम से काहे की चोरी ! तुम क्या कोई पराये हो ? बैठ जाओ। [मस्तानी से] आओ, इतनी दूर क्यों खड़ी हो ? आत्माराम अपना ही है। [मस्तानी निकट आकर बैठती है] आत्माराम, तुम तो मूँछों पर बड़ा ताव दे कर गये थे। अन्त में उस सरदार को ढूँढ़े बिना ही लौट आये न ?

आत्माराम—सरकार, एक भी स्थान बिना ढूँढ़े नहीं छोड़ा। वह कहीं भी मिला नहीं। तब मैं क्या करूँ ?

बाजीराव—क्या निज़ाम की छावनी में गये थे ?

आत्माराम—उस के बाप की भी छावनी में मैं जा सकता हूँ, उस की तो बात ही क्या है ! मैं ठेठ निज़ाम तक जा कर आया हूँ। ये दाढ़ी मूँछें रहते मुझे मुसलमान बनने में क्या देर लगती है।

मस्तानी—[आत्माराम से] क्या ! मुसलमानों के वेष में आप गये थे छावनी में ? शाबाश भाई तुम को !

बाजीराव—इस में शाबाश काहे की ! जब स्त्रियाँ प्रत्यक्ष पुरुषों का भेस बदल कर आती हैं तब पुरुषों को भेस बदलने में क्या देर लगती है !

मस्तानी—[हँस कर आत्माराम से] पर वहाँ आप को किसी ने पहचाना नहीं क्या ?

आत्माराम—पहचान लेता तो फिर मेरी बहादुरी ही क्या थी ?

बाजीराव—जब प्रत्यक्ष बाजीराव जैसे मूँछों को ताव देने वाले भी फँस गये तो फिर मुसलमान बादशाह की तो मजाल ही क्या ! अच्छा, फिर क्या हुआ आत्माराम ?

आत्माराम—मेरे जैसा पत्थर ऐसी संदिग्ध बातें कहाँ समझ सकता है ! परन्त वहाँ निज़ाम के अन्तःपुर से मस्तानी नाम की एक रूपवती स्त्री कहीं अन्तर्धान हो गई है। उस को ढूँढ़ने के लिए जाधवराव गया तो वह अपनी पोशाक ही कहीं खो आया ! इस लिए वहाँ बहुत खलबली मच रही है।

बाजीराव—बस रहने दो ! गप हाँकने में बड़े होशियार हो ! परन्तु हाथ में लिया हुआ काम तो अन्त को पूरा नहीं किया न ! [मस्तानी से] अच्छा, फिर सुनाओ अपना वृत्तान्त।

मस्तानी—भोज के लिए आप की सवारी आई। खूब जी भर कर दर्शन किए। मैं प्रेम से मुग्ध हो गई । सब कहती थीं, उनके मन में वैर-भाव नहीं। निज़ाम के राज परिवार की स्त्रियाँ इस फूल से खिले दिव्य स्वरूप को आनन्द से पूजती थीं। जब सब की ऐसी स्थिति हुई तो आप ही

सोचिए मेरी दशा कैसी हुई होगी। दिन-रात आप के ही ध्यान में मेरा तन-मन लीन रहने लगा। मेरा जी चाहता था कि मैं अपनी काया आप के अर्पण कर दूँ। हे सखे, सेवा करने के उद्देश्य से ही मैं यहाँ आई हूँ।

—परसों—हाँ एक बात बताना तो मैं भूल ही गई—छावनी से बाहर निकलते समय मैंने एक खंजर मात्र अपने साथ ली थी।

बाजीराव—वह किस लिए ?

मस्तानी—ताकि यदि आप इस मस्तानी को अंगीकार न करें तो मैं अपने प्राणों का अन्त कर लूँ। आगे वह मुआ जाधवराव मुझे ढूँढ़ता हुआ वहाँ आ पहुँचा, और लगा मुआ मुझ से छीन-झपट करने। फिर क्या था, लिया एक बार आप का नाम, और ज्यों ही वह निकट आया झट उसके हाथ पर खंजर का प्रहार कर दिया! वह उसी समय मूर्च्छित हो कर पृथ्वी पर गिर पड़ा। उसके पास उस का घोड़ा सँभालने वाला जो रामू नाम का लड़का था, उसने उस समय मेरी बहुत सहायता की। उसी ने उसके ये वस्त्र और साफ़ा मेरे सिपुर्द किए थे। फिर क्या, बन गया मैं सरदार और पकड़ी इस छावनी की राह!

आत्माराम—[आश्चर्य से] क्या ? तो फिर सरदार को ढूँढ़ने का

श्रम मुझे व्यर्थ ही करना पड़ा ! शाबाश, बाई जी ! ऐसी होशियारी पुरुषों में होना बिलकुल असंभव है !!

बाजीराव—सच है, इस में संदेह ही क्या है !

मस्तानी—[आत्माराम से] पन्त, अब समझ गये क्या, मैं कौन हूँ और वह सरदार कौन है ? पर क्या कहूँ पन्त ! इस पुरुष-वेश में मैं ने ये चार पहर कैसे बिताए, यह मैं ही जानती हूँ। परन्तु सरकार ने मेरा बड़ा संमान किया, इस से मेरी सारी थकावट जाती रही है।

बाजीराव—[आनन्द से] अहा ! सखि, तुम्हारा यह चरित सुन मैं मन में अतिशय प्रमुदित हो रहा हूँ। तुम्हारी ऐसी चतुराई को धन्य है। तुम्हारे समान रूपवती दूसरी नारी इस जगत में मुझे विरली ही दिखाई देती है।

परन्तु हम ब्राह्मण हैं और तुम मुसलमानी हो। इस लिए जैसा तुम चाहती हो वैसा होने की कोई आशा नहीं। पर जिस उद्देश्य से सुन्दरी, पहले से ही मैं ने तुम्हें वचन दिया है, यदि मैं तुम्हें अंगीकार नहीं करता तो मुझ पर दूषण आता है। तुम अपना प्राण अवश्य दे डालेगी, मेरे मन में इस का निश्चय हो चुका है। अपने मन में भली भाँति विचार करके मैं तुम्हारा पाणि-ग्रहण करता हूँ। मैं कभी तुम से भेद-भाव नहीं रक्खूँगा। आज जन्म भर के लिए

मैं तुम्हारा होता हूँ। परमेश्वर हमारी रक्षा करे, और हमारे प्रेम को दिन पर दिन बढ़ाए!

मस्तानी—आज मेरी सब कामनाएँ पूर्ण हो गईं। जगदीश्वर! हमारी प्रीति को दृढ़ कीजिये! मैं आप के चरणों में सीस झुकाती हूँ। प्रिय सखा ने इस समय मुझे प्रेम से अंगीकार किया है। सचमुच मेरे पूर्व पुण्य उदय हुए हैं, इस में कुछ भी संशय नहीं।

बाजीराव—[आत्माराम की ओर उँगली करके] यह आत्माराम, हमारा अति विश्वासपात्र और प्राणों से भी प्यारा है। इस को आप की नौकरी में रखने का हमने निश्चय किया है। [आत्माराम से] आत्माराम, इस नई स्वामिनी को चलो अब पूना ले चलें। इस की उँगली तक पर भी किसी की दृष्टि नहीं पड़नी चाहिए। कल तड़के चलने की तैयारी करो।

आत्माराम—बहुत अच्छा सरकार!

बाजीराव—चलिए तो फिर अब! आज की सारी घटना मुझे जन्म भर न भूलेगी।

धन्य है इस त्रिया चरित्र को! जिस बाजीराव ने रण में प्रतिनिधि जैसे, निज़ाम जैसे और माधवराव जैसे योद्धाओं के छक्के छुड़ा दिए, उसी मुझ को एक तुच्छ

सी स्त्री ने नीचा दिखाया ! अस्तु, पर इस में आश्चर्य की बात ही क्या है ? कारण, जब मेनका अपने नेत्र-कटाक्ष से कौशिक मुनि को इन्द्र की सभा में कुत्ता बना कर ले गई, तब हमारा तो कहना ही क्या है ?

[ऐसा कह कर निकल जाता है]

[परदा गिरता है]

[दूसरा अङ्क समाप्त]

अङ्क तीसरा

प्रवेश पहला

स्थल—बुरहानपुर का एक महल

[परदा उठता है। मस्तानी और आत्माराम बैठे बातें करते दिखाई देते हैं।]

मस्तानी—आत्माराम पन्त, सरकार पूने में कब पधारेंगे ? मैं उन के बिना उदास हो रही हूँ। प्रिय सखा के बिना मुझे कुछ भी अच्छा नहीं लगता। बेचैनी हो रही है। कुछ भी नहीं सूझता। जैसे जल के बिना मीन तड़पती है वैसे ही वियोग में यह मन तड़प रहा है। उन के बिना मुझे अन्न नहीं भाता। मैं कब उन के चरणों के दर्शन करूँगी ?

आत्माराम—बाई जी, यह मेरा अपराध है कि कल गुप्तचर के हाथ जो पत्र आया था वह मैं आप को बतलाना भूल गया।

मस्तानी—पर पन्त, तुम ने यह क्या किया ! उन की जो भी खबर आवे मुझे ताबड़ तोड़ बताया करो। मैं तुम्हें कितनी बार कह चुकी हूँ !

आत्माराम—बाई जी, यह मुझ से सचमुच भूल हुई। अब एक बार मुझे क्षमा कीजिए पुनः मैं ऐसा नहीं करूँगा। मुझ दीन पर क्रोध मत कीजिए।

मस्तानी—अजी, मैं कोई आप पर गुस्सा नहीं हुई हूँ। अच्छा, पत्र सुनाइए। मैं देखूँ क्या लिखा है।

प्रात्माराम—पत्र में लिखा है कि तुम तुरन्त पूना का रास्ता पकड़ो ; मैं तुम्हें रास्ते में मिलूँगा।

मस्तानी—[आनन्द से] हैं ! फिर चलिए। कब निकलेंगे ? कल सवेरे करो तैयारी। जाओ फिर तैयारी में लग जाओ।

आत्माराम—जी, मैं सब तैयारी कर रहा हूँ। जाता हूँ तब।

[इतना कह कर चला जाता है।]

मस्तानी—[स्वगत] सच मुच मैं अकेली रहते रहते कैसी ऊब गई हूँ। क्या मालूम, कब पूना जा कर स्वजनों से मिलना होगा। फिर मुझे किसी का डर नहीं। पूना में जाने पर मैं उन को एक घड़ी के लिए भी अपने पास से हिलने नहीं दूँगी। जिधर वे उधर ही मैं। चाहे प्राण भी निकल जायँ मैं एक घड़ी के लिये भी उन से अलग नहीं रहूँगी।

[इतने में एक भिखारी लड़का आता है।]

भिखारी लड़का—[गाता है]

गाना

पेशवा वर वीर बाजीराव परम उदार है,
प्रबल हैं भुज-दण्ड उस के प्रखतर तलवार है।
दूसरा कोई नहीं उस के समान हुआ कहीं,
गूँजता उसके गुणों से यह सकल संसार है।
दाँत खट्टे कर दिये उस ने प्रमत्त निज़ाम के,
छोड़ जो सो गाँव भागा हो गया लाचार है।
सर किया गुजरात उस ने हर जगह फैला सुयश,
है प्रतापी वीर मानों राम का अवतार है।

बाई जी, मैं बार बार आप के पाँव पड़ता हूँ। मेरे प्राण भूख से निकल रहे हैं।

मस्तानी—कौन है रे तू ? तुझे क्या चाहिए ?

भिखारी लड़का—उदर की ज्वाला को शान्त करने के लिए कौर भर रोटी दोगे तो ईश्वर आप को जन्म भर सुखी रक्खेगा !

मस्तानी—अरे बैठ लड़के, मैं तुझे कुछ खाने को देती हूँ ! [स्वगत] इस लड़के को कहीं देखा जान पड़ता है। इस का चेहरा कुछ परिचित सा दीखता है। [प्रकट] लड़के, तेरा नाम क्या है ?

भिखारी लड़का—बाई जी, आप को मेरे नाम से क्या करना है ? भूख से मेरे प्राण निकल रहे हैं । इस लिए पहले मुझे कुछ दीजिए ।

मस्तानी—यह लो लड़के, मिठाई ! [उस को मिठाई की पुड़िया देती है] यह थोड़ी सी खा लो और पानी पी लो । फिर तुम कुछ तरोताज़ा हो जाओगे ।

भिखारी लड़का—[थोड़ी सी मिठाई चख कर देखता है] मुझे नहीं चाहिए ऐसा मीठा ! मुझे थोड़ी रोटी ही दीजिए !!

मस्तानी—अरे लड़के, अभी रसोई बन रही है, फिर मैं दूँगी तुझे रोटी !

भिखारी लड़का—बाई जी, मुझे जन्म भर की रोटी चाहिए । मैं कोई एक आध टुकड़ा-बुकड़ा नहीं लूँगा ।

स्तानी—क्या भई, यह लड़का कोई पागल तो नहीं ?

खारी लड़का—बाई जी, मैं अपना अधिकार माँग रहा हूँ । मेरा अधिकार है आप की तरफ़ ।

तानी—अच्छा लड़के ! तेरा नाम क्या है ? तुझे मैंने कहीं अवश्य देखा जान पड़ता है !!

ारी लड़का—देखा होगा, तो भी क्या ? [मिठाई खाता है] बहुत मीठी लगती है, बाई जी ।

ानी—रे, पर तेरी आवाज़ तो परिचित सी जान पडती है !

भिखारी लड़का—[मिठाई खा कर पानी पीता है और डकार ले कर कहता है] बाई जी, ईश्वर आपका भला करे ! आपके मन का सारा दुःख दूर हो ! आप को राजपद मिले। आप के वैरी मन में झूरें !

[झोली में से घोड़े की बागें निकालता है।]

यह लीजिए बाई जी, अपनी बागें ! आप उस दिन भूल आई थीं। [हँसता है] मुझे ये रासें क्या करनी हैं ?

मस्तानी—[आश्चर्य से] अरे, यह तो रामजी है ! लड़के, इतना सूख क्यों गया है ? आ, निकट आ !

रामू क्या बाई जी, पहचान लिया अब मुझे ? है या नहीं मेरा अब जन्म भर की रोटी माँगने का अधिकार ? क्या कहूँ बाई जी, देखो, उस दिन से मेरी बहुत मिट्टी खराब हुई है।

मस्तानी—सच मुच तेरा अधिकार ठीक है, रामजी ! तेरा मुझ पर बड़ा उपकार है, बेटा ! तुझे अब मैं अपने पास से छोड़ूँगी नहीं। अब उनके आते ही तेरे बारे में सब कुछ कह कर उनसे तुझे अच्छी बख्शीश दिलाऊँगी।

रामू—बाई जी, मुझे उस बख्शीश को क्या करना है ? जन्म भर के लिए इस रामू को अपने चरणों की चाकरी दीजिए, यह कहना। अब मैं चरण नहीं छोड़ूँगा आपके

देखो ! उस मुर्दार की चाकरी करते करते मैं तंग आ गया हूँ। मुझे नहीं चाहिए उस की नौकरी।

मस्तानी—बहुत अच्छा रामजी ! वह तेरा नगोड़ा सिपाही कहाँ है ? शायद वह गया होगा सम्भाजी महाराज के साथ पन्हाल गढ़ को।

रामू—छिः, वह बैठा है थाली पर मक्खियाँ उड़ाता हुआ ! निज़ाम के लड़के की मिन्नतें करता हुआ हर वक्त फिरता है कुत्ते जैसा उस के पीछे पीछे।

मस्तानी—[तिरस्कार से] मुए का वहीं वंशोच्छेदन हो जाय ! अच्छा रामजी, अब हमारे साथ कल पूना चलेगा न ?

रामू—हाँ बाई जी ! आप जो कहें सो करने के लिए और जहाँ कहें वहाँ जाने के लिए यह रामू तैयार है।

मस्तानी—अच्छा, तो चल। देखें भला कल की तैयारी कहाँ तक हुई है ! [ऐसा कह कर जाते जाते] प्रियतम की रम्य मनोहर मूर्त्ति मैं फिर कब देखूँगी ! उनके बिना मुझे कुछ भी भला नहीं लगता ! न कुछ सूझता है और न कुछ रुचता है। दिन-रात मन भटका करता है। कहीं भी शान्ति नहीं मिलती।

रामू—कैसा मज़ा हो गया ! मुझे जन्म भर की रोटी मिल गई ! मौका मिलते ही मैं वहाँ से भाग आया। मुझे ईश्वर ने

यह अच्छा रास्ता सुझाया। अब मैं सरदार बन कर तलई पगड़ी पहनूँगा। मुझ पर भवानी की कृपा हुई है!

[ऐसा कह कर राम और वह जाते हैं।].

प्रवेश दूसरा

स्थल—पूने का शनिवार महल

[काशीबाई और मस्तानी की भेंट]

काशीबाई —मुझ से क्या अपराध हुआ जो मुझे ऐसी विरहाग्नि में ढकेल दिया ? हाय, हाय ! प्रियतम जब जयश्री प्राप्त करके आते थे, तो पहले मुझे ही दर्शन दिया करते थे। मालूम नहीं इस बार मन को क्यों कठोर कर लिया है ! हे माता जोगेश्वरी, हे गणपति, मैं इस समय आप से यही माँगती हूँ कि पहले का सा पति-प्रेम चिरकाल तक बना रहे !

हे जगदीश्वर, कान्त ने कैसी विपरीत मति कर ली है ! मुझे इस समय कोई उपाय नहीं सूझता। मुझ पर आकाश टूट पड़ा है । मेरे कलेजे पर कुठार चल गई है। मैं अब क्या करूँ ?

मैंने यह दृढ़ निश्चय किया है कि वे चाहे मुझे कितना भी चिढ़ाएँ मैं विनय को नहीं छोड़ूँगी। मेरे चाहे प्राण भी चले जायँ मैं कान्त को कभी नहीं दुखाऊँगी।

पारिजातक के लिये जब सत्यभामा श्रीहरि से रूठी थी तो उन्हों ने भी उसे नाना प्रकार से बहुत समझाया था।

अपने हाथ से उसकी वेणी बाँध, आँखों में काजल तथा माथे पर कुंकुम लगा, शरीर पर आभूषण पहनाए थे। और कहा था—"हे सखी, तू साड़ी और चोली पहन ले, मैं वचन-बद्ध तेरा सेवक हूँ।"

मस्तानी—आप की मुझ पर पूर्ण कृपा-दृष्टि होनी चाहिए। यह किङ्करी नित्य आपकी पद-सेवा करेगी। यदि भूल से कभी मुझ से कोई अपराध भी हो जाय तो मन में ज़रा क्रोध न लाइए, और शान्ति से मुझे समझाइए। मुझे स्वजन जैसा समझ कर घर में रहने दीजिए। सच जानिए, इसके बिना मुझे दूसरा कोई आश्रय नहीं।

काशीबाई—तेरा और मेरा इस प्रकार परिचय और सहवास होना हमारे पूर्व प्रारब्ध का फल है। ईश्वर ने ही यह सहज योग मिलाया है। हम दोनों प्रेम-पूर्वक रहेंगी। मैं तुझ से सत्य कहती हूँ।

मस्तानी—आप दोनों का उदार स्वभाव देख कर मैं धन्य होगई हूँ! सचमुच जगत् में मैं कृतार्थ हो गई हूँ। वे मेरे स्वामी हैं और हम दोनों उनके चरणों की दासी हैं। इसी रीति से रहने का निश्चय करके आई हूँ। मेरे प्राण भी निकल जायँ तो भी हे स्वामिनी, आपकी आज्ञा का उल्लङ्घन नहीं करूँगी। आपके चरणों की शपथ खाकर कहती हूँ।

प्रवेश तीसरा

स्थल--पूना में मस्तानी के बाड़े में शीश महल की अगासी ।

[बाजीराव अगासी पर अकेले फिर रहे हैं]

बाजीराव-- [स्वगत] अहा ! हमारे जैसे सदा प्रवास और युद्ध में विलीन रहने वाले मनुष्य को ये वसन्त-ऋतु के दिन कितने सुहावने मालूम हो रहे हैं ! सचमुच वसन्त की बड़ी शोभा है । तरुराजि पुष्पित होकर झूम रही है । भ्रमर-गण फूलों पर लुब्ध हो गुंजार कर रहे हैं । वे उनके भीतर का मकरन्द निःशंक होकर लूट रहे हैं । कोकिला आम्र विटप पर बैठी अपने मधुर गान से प्रेमी जनों का सुख बढ़ा रही है । दूसरे आज पूर्णिमा है । चन्द्रमा की स्फटिक शुभ्र ज्योत्स्ना पृथ्वी पर पड़ कर इसकी शोभा बढ़ा रही है । विविध पुष्प-पराग-मिश्रित मन्द सुगंधित वायु बह रही है । उससे मन आनन्दित होता है । सब ताप शान्त होजाते हैं ।

निर्मल चन्द्रिका कैसी शीतलता प्रदान कर रही है । सुवासित वायु मंद मंद बह कर हृदय को सुख दे रही है । जी चाहता है, यहीं सुख से सो जाऊँ ।

[ऐसा कह कर पलंग पर लेट जाता है]

मेरी प्रिय सखी, अभी तक महल से क्यों नहीं आई ? बैठी होंगी दोनों दिल की बातें करतीं। कारण, अब उसका और बड़ी श्रीमती का बहुत प्रेम हो गया है। इस में कुछ भी संदेह नहीं कि सब स्त्रियों के स्वभाव में और हमारी स्त्री के स्वभाव में आकाश-पाताल का अन्तर है।

मौका देख कर बर्ताव करने वाली स्त्री ही सच्ची सुशीला गृहिणी होती है। ईश्वर ने मुझे ऐसी ही स्त्री दी है। मेरे जैसा दूसरा कोई भाग्यवान नहीं ! ऐसा जान पड़ता है, जगत् में मुझे सब सुख प्राप्त हैं।

[ऐसा कहते कहते उसे नींद आ जाती है।]

[इतने में पूर्ण शृङ्गार किए मस्तानी प्रवेश करती है।]

मस्तानी---

गाना

फूला है ऋतुपति कुसुमाकर,
मेरा अन्तस्तल शीतल कर।
कोकिल गाती पंचम स्वर में,
बहती सुरभि-पवन मृदु-मंथर।

खेली हुई नव कुन्द कली का,
ी मकरंद मत्त हैं मधुकर।

[महल में इधर उधर देख कर अपने आप से]

अरर, यह क्या ! वे आज यहाँ भी नहीं हैं और काशीबाई साहब के महल में भी नहीं ! फिर गये हैं कहाँ ! [इधर उधर फिरती हुई तंग आकर] हाश ! आज मुई गरमी भी कितनी हो रही है ! पंखा झलते झलते तंग आगई हूँ । साड़ी का पल्ला भीग गया है । मेरे प्राण घबरा रहे हैं । मन में चैन नहीं पड़ता ।

गाना

देखूं कहाँ वह मेरा,
जानी जिगर का प्यारा ।
घबरा गई हूँ प्यारे,
छाया सकल अन्धेरा।
रक्खे तुझी पर नैना,
बन बन फिरे यह मैना,
आती है याद मुझ को,
गाती हूँ गान तेरा ।

[ऐसा कह कर पंखे से हवा करती है] अब अगासी पर चलना चाहिए। [ऐसा कह कर अगासी पर जाती है और बाजीराव को देख कर] अरे, वे तो यहाँ पलंग पर सोए हैं! मैं व्यर्थ ही पागलों की तरह चिन्ता कर रही थी। यह कैसा उलटा काम हो गया! दुष्ट सौत नींद ने पति को पकड़ रक्खा है। अब मैं इन्हें कैसे जगाऊँ?

[पलंग के निकट जाकर बाजीराव को विनोद से]

कितनी नींद आई है! कोई कहे सच मुच सो गये हैं!! [अपने आप से एक तरफ] अब हँसी करने का यह अच्छा समय है। [ऐसा कह कर गुलाबदानी में से गुलाब-जल शरीर पर फेंकती है] प्रियतम, आप सो क्यों गये? निद्रा त्याग कर जागिए। आज यह मुई सौत निद्रा आप को मुझ से अधिक प्यारी हो गई! अब मैं आ गई हूँ। अब इसे छोड़ दीजिए।

अरी, अभी तक भी वे जागे नहीं! यह क्या! आज हुआ है क्या! (हाथ से उन को हिलाती है।] उठिए न! [उठते न देख कर] छिः, पर ये नहीं उठते, इस मुई नींद ने कैसा मोह-पाश डाला है! तो अब इस को योग्य दण्ड दिए बिना यह कभी मेरे प्यारे को छोड़ने वाली नहीं। [क्रोध से नींद को] क्यों री मुई दुष्टा! तू मेरे सामने

ही मेरे पति को मुझ से छीन रही है ! हे निद्रा, तू मेरे पति को तुरन्त छोड़ दे। तू ने झपट कर उन का तन-मन हर लिया है । तुझे लज्जा नहीं आई ! तू दण्ड पाने योग्य है।

[ऐसा कह कर वह बाजीराव का स्पर्श करती है, बाजीराव जाग कर उठ बैठता है।]

बाजीराव—[मस्तानी से] अहो, तुम आगई ! अच्छा सतार के साथ कोई गाना तो सुनाओ।

[मस्तानी गाती है।]

गाना

कलियाँ खूब खिलीं, यह तो आई बसन्त बहार।
जूही भी फूली, चमेली भी फूली, फूलों से झुक रही डार,
फूली कुंज गली। यह तो आई बसन्त बहार॥
ब्रज के बाल गुलाल उड़ाएँ, कृष्ण लिए पिचकार।
रोरी खूब बनी। यह तो आई बसन्त बहार।

[उसके संगीत से खुश होकर]

अहा ! कैसा मधुर गान है। इसे सुन कर मेरा अन्तरात्मा प्रसन्न हो गया है। अब मैं तुझे क्या उपहार दूँ ? सखी, संकोच छोड़ कर जो तेरी इच्छा हो सो माँग। मैं ज़रूर दूँगा।

मस्तानी—जीवन-धन, आपका सारा शरीर जन्म भर के लिए मेरा हो चुका है। अब इस से बढ़ कर और क्या उपहार माँगूँ ? केवल इतना ही माँगती हूँ कि आप का और मेरा पल भर के लिए भी वियोग न हो।

बाजीराव—पगली, तू कैसी बे-ठिकाने की बातें कह रही है ! तेरी यह बात कैसे बन सकती है, तू ही बता ? हमें तो सतत मुहिमों में जाना पड़ता है।

मस्तानी—[प्यार से] मैं भी आप के साथ चला करूँगी।

बाजीराव—[कौतुक से] हठ करना अच्छा नहीं होता। सुख से घर पर रहो। [प्रेम से] पगली. तुम क्या कह रही हो ! अब तो हमें चार पाँच दिन तक सातारा जा कर पुनः हिन्दुस्तान की ओर प्रस्थान करना है। जान पड़ता है, तुम ऐसा ही हठ करोगी।

मस्तानी—क्या, क्या ? चार पाँच दिन तक ही आप जाने को कहते हैं ? तो फिर मैं नहीं रहूँगी अकेली यहाँ ! मैं जाऊँगी आप के साथ !!

बाजीराव—वाह, वाह वाह ! वाह ! बहुत ही अच्छा !! हमें तो अब देश-देशान्तर में घूमना पड़ेगा। युद्ध में हमारे महीनों बीत जायँगे। यदि ऐसी मुहिमों में स्त्रियों को साथ रक्खेंगे तो हमारे हाथ से बड़ी अच्छी तलवार की बहादुरी होगी !

मस्तानी—भला क्यों नहीं होगा ? मैं भी साथ जा कर निठल्ली बैठने वाली नहीं। मैं भी पुरुष का वेष बना कर लड़ूँगी। देखिए तो सही मेरा कैसा पराक्रम है ! जैसे आप के शिन्दे और होलकर हैं वैसा ही मुझे भी एक सरदार समझ लेना !

बाजीराव—मेरे शिन्दे और होलकर की बात कहाँ ! वे कहीं इस बाजीराव को फँसा कर डुबाने वाले नहीं ! इस में संदेह नहीं, तुम भेस बदलने में बड़ी निपुण हो, पर यह बात बिलकुल अलग है।

मस्तानी—[हँस कर] प्यारे, यदि मैं आप को छका सकती हूँ, तो समझ लीजिए, मुझ में सारे जगत् को छका देने का सामर्थ्य है। छोड़िए इस बात को। मैं चलूँगी साथ, जाओ !! ले चलोगे न ? सच मुच ले चलिए !

बाजीराव—[कुछ क्रोध से] मुझ से ऐसी बात त्रिकाल में भी न हो सकेगी। मैं स्पष्ट कहे देता हूँ, हठ-पूर्वक मेरे कामों में बाधा मत दो। शूर लोग संसार में अपनी पूर्ण वीरता तभी दिखला सकते हैं जब उन की स्त्रियाँ अपने घरों में आराम से रहती हों।

मस्तानी—अच्छा, मैं कुछ भी हठ नहीं करती। [रूठ कर] सखे, मुझ से भूल हुई। इस समय मुझे क्षमा कीजिए। स्त्रियों

का हठ कौन चलने देता है ! हमारा तो जन्म ही व्यर्थ है ! हम तो इस जगत् में कैदी ही हैं । हमें दैव ने ज़रा भी सुख नहीं दिया !

[रूठ कर जाती है]

बाजीराव—[हँस कर] आया, आया, फिर आया क्रोध का दौरा! यह दिन में कितनी बार आता है, इस का कोई नियम भी है ? प्यारी, यह रूठना छोड़ दो। व्यर्थ ही अपने प्राणों को क्यों दुःख दे रही हो ? मैं तो सहज विनोद कर रहा था। तुम इसी में कुपित हो गई। तुम्हें देख मुझे खेद हो रहा है। सखी, तुम जान बूझ कर ऐसा बर्ताव क्यों कर रही हो ? यह तुम्हारे लिए उचित नहीं।

यह तुम्हारा कैसा हठ है ! तुम चतुर और गुणवती कहलाती हो। तुम्हारे लिए यह योग्य नहीं है । कुछ तो विवेक करो। इस दुराग्रह को छोड़ दो । तुम्हारे उदर से जो कुमार जन्म लेगा वह हमारे ही साथ रहेगा । फिर उस का नाम भी वैसा ही रखेंगे। नब तो ठीक हुआ न ? अब बस हुआ तुम्हारा यह रूठना, मुँह फुलाना ! पगली कहीं की !!

मस्तानी—[आनन्द से] प्रियतम, यह हमारा रूठना और मुँह

फुलाना प्रेम का है। फिर अब आप क्या कहते हैं, आप को एक ठुमरी सुनाऊँ ? अच्छा लीजिए।

[गाती है।]

गाना

कैसे रहूँ मैं प्यारे ! तुम बिन,
तव छवि छाई मन में निशि दिन।
जग में कौन यहाँ है मेरा,
नैनन में नहिं चैन एक छिन।
विरह विकल बावरी भई मैं,
बीति रहे दिन अब तो गिन गिन।

मैं दिन और रातें कैसे काटूँ ? आप के बिना हृदय व्याकुल रहता है। प्यारे, आप परदेस जाते हैं, तो मैं अकेली घर पर कैसे रहूँ ? एक क्षण जब आप दिखाई नहीं देते तो जी व्याकुल होने लगता है। पर मुहिम पर से शीघ्र लौटना।

बाजीराव—काम संपूर्ण हो जाने पर वहाँ कोई रहने का चाव नहीं। पर अभी से तुम्हें एक बात कहे रखता हूँ। मेरे पीछे बहुत सावधानी से रहना। किस प्रकार लोग हमारे पीछे पड़े हैं, यह तो तुम जानती ही हो। इस लिए कोई

कुछ भी कहें, उस पर बिलकुल ध्यान न देना। दूसरे, तुम तो बड़ी सयानी हो। मुझे कहने की कुछ आवश्यकता नहीं। परन्तु फिर भी कहता हूँ –

प्राण प्रिये, तुम्हें छोड़ कर हमारे परदेस चले जाने पर तुम निश्चिन्त हो कर सुख से रहना और जगदीश्वर का चिन्तन करना। हमारी लज्जा रखना। भगवान तुम्हें सुखी रखेंगे!

मस्तानी—यह आप क्या व्यर्थ बातें कह रहे हैं! क्या कभी ऐसा हो सकता है! मैं कोई ऐसी अधम नहीं। अधिक क्या कहूँ। पर

नहीं तजूँगी कभी प्राण रहते तुम को अब,
जल से हो कर रहित मीन को कल पड़ती कब?

यह मैं शपथ-पूर्वक कहती हूँ। पर आप भी किसी दूसरे से सुन सुनाकर ही मेरा परित्याग न कर दीजिए।

बाजीराव—अहो! प्रिये यह तुम क्या कह रही हो! अरी, अब तो ब्राह्मणों की सभा बुला कर उस में तुम्हें "शुद्ध" कर लूँगा। पगली, क्या वह छोड़ने के लिए कर रहा हूँ?

मस्तानी—[आनन्द से] प्राण नाथ, क्या यह सच है? तब तो समझो मेरा भाग्योदय हो गया।

बाजीराव—अरी ज़रा मौज तो देखो! कल ब्राह्मणों की सभा बुला कर उस में तुम्हें "पवित्र" कर डालता हूँ।

मस्तानी—[प्रेम से] तब फिर सच मुच यह उपाय करोगे न ?

बाजीराव—हाँ, हाँ, सच मुच करूँगा, प्यारी! मत समझो, इस बाजीराव के शरीर में सामर्थ्य नहीं।

अङ्क चौथा

प्रवेश पहला

स्थल—पूने में शनिवार वाड़े का राज महल।

[काशीबाई के निकट नाना साहब बैठा है। परदा उठता है।]

काशीबाई—हे कात्यायनि! हे जोगेश्वरि! हे देवि कालिके! भक्त जन तेरे चरणों में सीस निवाकर विनती करते हैं। मेरे कान्त की बुद्धि फिर गई है। मैं क्या करूँ! वे अब दर्शन नहीं देते। मैं कहाँ तक धैर्य धरूँ! तेरे बिना हृदय में मैं किसका स्मरण करूँ? हे जगत् के चलाने वाली माता, मेरे पति को सुमति दीजिए।

कैसे हो रे नाना? तेरा वदन ऐसा म्लान क्यों हुआ है? मुझे तुम में सौख्य का लवलेश भी नहीं दिखाई देता। तुम्हारे हृदय में ऐसी कौन चिन्ता हो रही है? वह सब मुझे बताओ। मैं तुम्हारा दुःख निवारण करूँगी।

नाना साहब—माँ, क्या कहूँ। अब हमारी कैसे निभेगी? उन्होंने जो कीर्ति कमाई थी वह अब कैसे रहेगी? हमारे सब ग्रह कैसे उलटे हो गये हैं!

काशीबाई—नाना, यह तुम क्या कह रहे हो? ऐसी कौन बात हुई है?

नाना—माँ, तुझे कुछ पता भी है या नहीं ? जब से इस स्त्री का पैर घर में पड़ा है तब से हमारी प्रताप-कला कैसी उतरने लगी है। और हमारी कीर्ति नष्टप्राय हो रही है।

काशीबाई—उसने क्या किया है बच्चा ! जब अपना ही भाग्य फिर गया तो फिर दूसरों का क्या दोष !!

नाना साहब—"उसने क्या किया" ! नहीं तो और क्या ? माँ उसके पीछे चल कर राव साहब ने अब राज-काज पर ध्यान देना ही छोड़ दिया है ! दिन-रात वह चुड़ैल है और पिताजी हैं। पता नहीं क्या चल रहा है ! सुना है, उस निज़ाम ने फिर कुछ ऊधम मचाया है। कोल्हापुर के संभा जी और महाराज इन दोनों के बीच राज्य का बँटवारा हो गया है। तब से वह जाधवराव पिता जी के विरुद्ध हर वक्त षड्यन्त्र रचा करता है। और पिता जी पर से महाराज का सद्भाव नष्ट कर देने का प्रयत्न जारी है। ऐसा मुझे आज ही चाचा के पत्र में लिखा आया है। तब हम सब का क्या मार्ग होगा ?

काशीबाई—बेटा, मैं तुम्हें क्या कहूँ ! सच मुच मेरी बुद्धि नष्ट हो गई है। इसी लिए मुझे कुछ सूझ नहीं रहा है। जो दैव में है वह हो कर ही रहेगा, तिल भर भी न टलेगा।

नाना साहब—प्रान्तों से जो मालगुज़ारी आया करती थी, वह

अब नहीं आती। माण्डलिक राजों ने कर देना बंद कर दिया है। चौथाई और सरदेशमुखी की आय के नाम पर शून्य है। वैसे यहाँ पर भी ख़ज़ाना खाली होता जा रहा है। माँ, बड़े कठिन दिन आए हैं!

काशीबाई—फिर ये सारी बातें उन से क्यों नहीं कह देता?

नाना साहब—मुझे कहते हैं, मूर्ख लड़के, तुझे क्या समझ है! हम आप ही देख लेंगे। तुझे किस ने उथल पुथल करने को कहा है?

काशीबाई—तुम कह दो कि मैं ने आप के अंग से जन्म लिया है। मैं सब कुछ समझता हूँ। आपका अपयश हम सब का अपयश है! उन से साफ-साफ कह देने में कोई हानि नहीं।

नाना साहब—परन्तु माँ, मुसलमानी को घर लाने के कारण लोग क्या कहते होंगे! पहले राव साहब का दबदबा इतना था कि लोगों को एक भी शब्द उन के विरुद्ध निकालने का साहस नहीं होता था। वही अब राव साहब का नाम सुनते ही नाक भौं सिकोड़ते हैं और कहते हैं कि ब्राह्मणत्व का नाश करने के लिए यह कलि पैदा हुआ है। माँ, यह सुन कर मेरी दशा तो मरने से भी बुरी हो जाती है। अब उस के लिए क्या उपाय करना चाहिए?

काशीबाई—नाना, इस का मैं क्या उपाय बताऊँ। बेटा! अब हम सब की लाज एक भगवान् ही रख सकते हैं।

नाना साहब—माँ, आज मुझे जो चाचा का पत्र आया है उस में उन्हों ने ऐसा ही लिखा है। वह मैं तुझे पढ़ कर सुनाता हूँ, देखिए।

[जेब में से पत्र निकालता है]

"आशीर्वाद के बाद, राजेश्री को जो पत्र भेजना था सो भेज दिया है। राव साहब को मारने का हम षड्यन्त्र रच रहे हैं। यदि हमारा षड्यंत्र सफल न हुआ तो हम और तुम अपकीर्ति से बचने और ब्राह्मणत्व की रक्षा के लिए आपस में मिल जायेंगे। २५ रजब, आशीर्वाद।"

काशीबाई—[आश्चर्य से] यह कैसा देवर जी का पत्र आया! तुमने कहीं उन को इस बारे में कुछ लिखा तो नहीं था?

नाना साहब—न लिखता, तो क्या करता! दो कौड़ी का मनुष्य, आत्माराम, वह वहाँ दाई मूँछ का बाल बना बैठा है। सातारे और जहाँगीरी प्रांत से आए पत्र वह स्त्री अपने आप उठा कर खोल लेती है। वह समझती है कि पत्र देख कर राव साहब मुहिम पर चले जायँगे या राज-काज पर ध्यान देने लगेंगे। इस से अपने सुख-भोग में बाधा पड़ेगी। उन के ऐसे ही ढंग चल रहे हैं! माँ, जो होता

है सो हो, मैं उस चुड़ैल से बदला लिए बिना न रहूँगा।

काशीबाई—न रे बेटा, ऐसे घोर उपाय और ऐसे गंदे विचार मन में बिलकुल न ला।

नाना साहब—तो क्या मैं राव साहब का प्रताप-सूर्य अस्त होने दूँ ?

काशीबाई—नाना, तुम्हारा कथन व्यर्थ नहीं है, पर सब बात विचार के अनन्तर होनी चाहिए। देवर जी को आने दो। फिर उनकी सलाह से इस का उपाय करेंगे।

नाना साहब—माँ, हम तुम्हारी आज्ञा के बाहर कहाँ हैं ? पर यह बात लंबी बढ़ाना ठीक नहीं। कारण, तुम्हें एक बात मैं क्या बताऊँ ! उस शीशमहल की अगासी पर वह चुड़ैल राव साहब से कह रही थी कि मुझे मुसलमानी से ब्राह्मणी बना लो ! यह मैं अपने कानों सुनी बात कह रहा हूँ।

काशीबाई—अरे, यह क्या बेहूदगी ! कहती है, कौए को मोर बना लो !! फिर आगे क्या हुआ ?

नाना साहब—आगे क्या, उस ने मनवा लिया—"ब्राह्मणों की सभा बुला कर अपने को "पवित्र" करा लेना"। जिस जिस बात की उस ने हठ की राव साहब ने सब मान ली।

माँ, क्या करूँ, मेरा तो सारा शरीर जल-भुन रहा है। इस चुड़ैल ने, इस कुलटा ने, इस चाण्डालिनी ने राव साहब को कैसा पागल बना रक्खा है ! और हमारे ब्राह्मणों के घर में घुस कर कैसा सब का सत्यानाश कर डाला है !

[क्रोध से दाँत पीस कर]

अच्छा चुड़ैल, तेरा मुझ से वास्ता पड़ा है! याद रख, तुझ से पूरा पूरा बदला लूँगा, तभी मेरा नाम नाना साहब पेशवा होगा। घर में घुसी हुई इस नागन का सिर जैसे भी हो कुचल डालना चाहिए।

[इतने में बाजीराव एक दम आ जाता है]

बाजीराव—[क्रोध से नाना साहब का हाथ पकड़ कर] अरे मूढ़मति, तू यह क्या बक रहा है ? तुझे लज्जा नहीं होती ? मुझे बता, तू किस से बदला लेना चाहता है। तेरी जीभ बहुत चुर चुर करने लगी है। तेरे कोमल शरीर के टुकड़े टुकड़े न कर डालूँ तो मैं अपनी मूँछें मुँड़वा दूँगा। हराम खोर, बदला लेने चला है !

[ऐसा कह कर तलवार निकालता है]

काशीबाई—[घबरा कर] प्रियतम, कोप को छोड़ कर मेरे पुत्र पर दया करो। मैं झोली फैला कर आप से क्षमा की

भिक्षा माँगती हूँ। बाल-बुद्धि पर ध्यान न दीजिए। मैं आप के चरणों पर मस्तक रखती हूँ।

[ऐसा कह कर पाँव पकड़ लेती है।]

बाजीराव—[उसे एक तरफ हटा कर] खबरदार! मेरे पैरों को हाथ मत लगाओ। इस बाजीराव के विरुद्ध तुम कैसा षड्यन्त्र रच रहे हो! तुम्हें लाज क्यों नहीं आती? हराम खोरो, तुम किस से बदला लोगे! [नाना से] देखो, तेरे टुकड़े टुकड़े कर के इस फसील के नीचे फेंक देता हूँ!!

नाना—[नम्रता से] पिता जी, मेरी यह सारी देह आप के अधीन है। उड़ा दीजिए इस दुष्ट की गर्दन! कीजिए इस हरामखोर के शरीर के टुकड़े टुकड़े! इस समय जो अपकीर्ति फैल रही है, आगे जो दुर्दशा होने को है, और पेशवा के नाम को जो कलंक का टीका लगने वाला है, उस को देखने की अपेक्षा मर जाना अच्छा है। यह नाना वीर-पुत्र है! मरने से कभी डरने का नहीं। इस पर खड्ग-वीर पिता के हाथ से मरने से मेरी काया अमर हो जायगी, ऐसा मैं समझता हूँ। इस लिए अब देर न कीजिए!

बाजीराव—[गद्गद हो कर उसे छोड़ देता है]

जाओ, जाओ, चले जाओ! मूढ़ लड़के, मेरे सामने मत खड़े रहो! बड़ा आया है अपकीर्ति की

परवा करने वाला ! देखूँ तो सही, बाजीराव के जीते जी उस के नाम पर कलंक का टीका लगाने वाला कौन माता के गर्भ से उत्पन्न हुआ है !

निकल यहाँ से ! बस देख लिए माता के और पुत्र के गुप्त विचार !!

[नाना साहब चला जाता है]

काशीबाई—[निकट जा कर प्रेम से] आप के लिए हाथ में तलवार ले कर इस प्रकार एकदम बच्चे पर टूट पड़ना क्या उचित है ! उस बेचारे का क्या है ? उस को जन्म देने वाले भी आप और उस का अन्त करने वाले भी आप ! एक हाथ दूसरे हाथ को काटने दौड़ेगा तो दूसरा हाथ क्या रुकावट कर सकता है ! अब बैठ जाइए, क्रोध को शान्त कीजिए।

बाजीराव—बस रहने दो यह लंबा चौड़ा उपदेश ! बैठ कर क्या मंसूबे बाँधे जा रहे थे ? बताओ तो सही !

काशीबाई—मंसूबे कैसे ? लोग नाम ले रहे हैं, वह इतना ही कह रहा था।

बाजीराव—झक मारते हैं लोग ! बिना कारण बकवाद करने वाले लोगों की मुझे क्या परवा है।

काशीबाई—आप यह क्या कह रहे हैं ! जिस बात में प्रजा प्रसन्न

हो उसी में हमारी भलाई है। आपने इतना बड़ा राज्य-प्रसार किया है। सब प्रान्तो में पेशवा के नाम का डङ्का बज रहा है। उस में किसी प्रकार का बट्टा न लगे, सातारे में शत्रुओं की नाक कट जाय और जहाँ तक हो सके हमें कोई बुरा न कहे--वह इतना ही कह रहा था, और क्या ?

बाजीराव--प्रिये, यह सारी बातें एकदम कैसे हो सकती हैं। धीरे धीरे सब कुछ हो जायगा। अच्छा अब हम दो तीन दिन तक मुहिम पर जाने वाले हैं। आप आज्ञा देती हैं न ?

काशीबाई--पर मैं पीछे रहूँगी तब न! मुझे नहीं यहाँ अकेली रहना अच्छा लगता। एक एक दिन कैसा वर्ष जैसा बीतता है। मैं यह जुदाई कहाँ तक सहन करूँ ? मैं आप के प्रेम के लिए अधीर हो रही हूँ। इस सुख-भोग को क्या करूँ! आपके बिना मुझे सब तुच्छ जान पड़ता है। आप मुझे अपने साथ ले चलिए।

"साथ ले चलूँगा" जब तक आप ये शब्द नहीं कहेंगे, मैं आप से बोलूँगी ही नहीं।

[रूठती है]

बाजीराव--अ बबब! कैसा है यह क्रोध का आवेग! भाई, इन

स्त्रियों के रूठने का कुछ सिर-पैर ही नहीं। क्या मुहिम में स्त्रियों का झंझट साथ ले जाना उपयोगी है? व्यर्थ में हठ मत करो। [उस की पीठ पर हाथ फेरता है] सच मुच, इन स्त्रियों में न मालूम कैसी मोहिनी शक्ति है! इन के रम्य वदन को देखते ही क्षुधा और तृषा सब शान्त हो जाती हैं। पुरुष का क्रोध एक दम काफूर हो जाता है।

काशीबाई—बस, बस! मुझे पता है! आप हर वक्त शक्कर बिखेरते हैं! हम रास्ता देखते बैठी रहती हैं! रात को नींद नहीं। ज़रा झींक आई कि चिन्ता में डूब गईं। परन्तु यहाँ तो कोई परवा ही नहीं। क्या करें? मुआ हम स्त्रियों का जन्म ही खोटा!—दीपक को भावे नहीं, जल जल मरें पतंग।

बाजीराव—कमाल है भाई, इन स्त्रियों को। इन को नमस्कार है! इन के लिए हम अरण्यवास करते हैं, शीतल वायु में घूमते हैं, ग्रीष्म का ताप झेलते हैं, इस प्रकार शरीर को मिट्टी कर देते हैं, तो भी हमें हर वक्त ताने मिलते हैं! अच्छा फिर, इच्छा है तो चलो। हमारी ओर से कोई मनाही नहीं। कारण, हमने विवाह में शपथ ली थी कि तुम्हारी इच्छा के विरुद्ध आचरण नहीं करेंगे।

काशीबाई—[प्रेम से] रहने दीजिए, क्रोध और प्यार मुझे सब मालूम है। इतने दिन मुझे आप के चरणों का सहवास

प्राप्त रहा है। फिर भी मैं आप की चालाकियाँ नहीं समझ सकी। मेरे जैसी भोली स्त्री दूसरी कौन होगी ! पर क्या किया जाये ! आप गये, फिर क्या ! कुछ भी अच्छा नहीं लगता। आराम से नींद नहीं आती ! न कुछ खाना, न कुछ पीना। पान, पलंग, उबटन, अलंकार सब छूट जाते हैं। माता जोगेश्वरी के आगे नाक रगड़ कर मैं सदा यही माँगा करती हूँ कि हे माँ, मैं अपने कुल में धुले हुए चावलों जैसी निर्मल रहूँ, और मुझे जन्म-जन्मान्तर में यही चरण मिलें! अच्छा, इस मुहिम के समय तो मैं आग्रह नहीं करती, पर मेरी हाथ जोड़ कर प्रार्थना है कि मुहिम से शीघ्र लौटिएगा। रास्ते में परमेश्वर आपको सकुशल रक्खें ! आप जभी तभी कहा करते हैं—"अमीरी, नहीं तो फकीरी" ! क्या कहीं इस प्रकार भी काम चला करता है ! "सिर सलामत, पगड़ियाँ पचीस"—

बाजीराव—मिल गई भाई, एक बार की आज्ञा ! चलें अब हमें बहुत भूख लग रही है।

काशीबाई—चलिए, मैंने सब तैयारी कब की कर रखी है।

[परदा गिरता है]

प्रवेश दूसरा

[परदे के भीतर ठाः ठाः तोपों का शब्द होता है ! अपने शनिवार बाड़े के महल में काशीबाई प्रवेश करती है।]

काशीबाई -यह कैसी तोपें चल रही हैं ! कोई आनन्द की बात जान पड़ती है ! [चौंक कर] पर आनन्द की या दुःख की ? मेरे मन में उत्पन्न होने वाला संदेह कहीं सच तो नहीं ? उस मस्तानी को--

[मालती प्रवेश करती है]

मालती —लड़का हुआ है, बाईजी !

काशीबाई—[माथे पर त्योड़ी चढ़ा कर] क्या कहा ?

मालती—[हँस कर] बाईजी, मस्तानी बाईजी को लड़का हुआ है !

काशीबाई —[हँसने का बहाना करके] तेरे मुँह में शक्कर !

[मस्तानी की धर्म-भगिनी इन्दुमती प्रवेश करती है।]

इन्दुमती —[हँस कर] शक्कर ले आई हूँ !

काशीबाई —क्या ? लड़का हुआ जान पड़ता है ?

[काशीबाई का मुँह उतर जाता है]

अच्छा हुआ, बहन !

इन्दुमती—यह शक्कर ली होती !

काशीबाई—[हँसने का दिखलावा करके] सच ! मुई शक्कर तो मैं भूल ही गई थी !

इन्दुमती—[स्वगत] इस समय शक्कर कितनी कड़वी होगई होगी !

काशीबाई—मालती ! आज कैसी गरमी हो रही है ! खिड़कियाँ बंद क्यों कर रक्खी हैं ?

इन्दुमती—[स्वगत] खिड़की में कहाँ से पवन आयगी ! प्रियतम के प्रेम की खिड़की बन्द हो जाने पर फिर कहीं से भी पवन नहीं आ सकती ! प्राण-वल्लभ का प्रेम छिन जाने पर पंखे की पवन शरीर को काटने लगती है, बकुल और मोगरा जलाने लगता है।

[हँस कर स्वगत] सौत का डाह ऐसा ही रोग है ! इस के योग से पित्त बढ़ता है, पेट में वायुगोला उठने लगता है, आँखों में कामला हो जाता है और सारा जगत् पीला दीखने लगता है ! सौतिया डाह जैसा भयङ्कर रोग दूसरा कोई नहीं !

काशीबाई—सबेरे से आँखों के सामने कैसे चक्कर आ रहे हैं !

इन्दुमती—[स्वगत] चक्कर तो आयँगे ही! शुकर करो हिस्टीरिया का फ़िट नहीं आने लगा !

[प्रकट] आप ने क्या कहा, सबेरे से चक्कर आ रहे हैं ? फिर एक औषध बताऊँ क्या ?

काशीबाई—हाँ, बताओ भला !

इन्दुमती—यह शक्कर खाओ ! चक्कर-वक्कर सब जाते रहेंगे !

काशीबाई—हाँ, मैं शक्कर तो भूल ही गई !

इन्दुमती—इस शक्कर को कभी मत भूलो ! यह अमोघ ओषधि है !

काशीबाई—शक्कर मैं कैसे भूल सकती हूँ ! पर, शक्कर से कोई पित्त-वित्त तो न बढ़ जायगा ?

इन्दुमती—[हँस कर] शक्कर से पित्त ! अरी, शक्कर तो पित्त को शान्त करती है ! इस जगत में दो ही वस्तुएँ पित्त को शान्त करती हैं ! एक शक्कर—

काशीबाई—और दूसरी ?

इन्दुमती—और दूसरी छोटे बच्चों को चूमना ! बच्चे के चुम्बन से चाहे कैसा भी पित्त हो शान्त हो जाता है । बच्चे को चूमते ही दुःख अपने आप दूर हो जाता है । जगत में यह राम-बाण क्वाथ है । इस से जगत् के सर्व तापों का नाश हो जाता है । असाध्य रोग भी इस से शान्त हो जाते हैं ।

काशीबाई—[हँस कर] अजी, खूब मज़ेदार दवा निकाली है !

इन्दुमती—[हँस कर] मज़ेदार बीमारियों के लिए दवाई भी मज़ेदार ही चाहिए ! जैसा रोग मज़ेदार वैसी ही औषध भी मज़ेदार ! इसी लिए तो मैं कह रही हूँ कि शक्कर खाओ !

काशीबाई—क्या खाने को कहती हो !

इन्दुमती—[हँस कर] हाँ, हाँ, सच मुच !

काशीबाई—तो क्या खाऊँ ?

इन्दुमती—[हँस कर] हाँ, खाइए ।

[नाना साहब दौड़ा दौड़ा आता है ।]

नाना साहब—माँ, मैं डालता हूँ तेरे मुँह में शक्कर ।

इन्दुमती—[हँस कर] हाँ, डालो, डालो !

[नाना साहब काशीबाई के मुँह में शक्कर डालता है ।]

इन्दुमती—अब दूसरी औषध रह गई ! बच्चे को चूमने आप कब आयँगी ?

काशीबाई—आऊँगी, तनिक ठहर कर ।

इन्दुमती—ज़रूर आइएगा ।

काशीबाई—ज़रूर आऊँगी ।

इन्दुमती—अच्छा, अब मैं जाती हूँ । [स्वगत] यह बिलकुल नहीं आयगी । यदि मनुष्य ज़ोर से हाँ करे तो उस का ज़रूरी इंकार समझना चाहिए ।

मनुष्य ने जगत् में यह कैसी नई रीति सीखी है ! वह हाँ, हाँ करता है तो उस का मतलब इंकार होता है । वह चुप बैठता है तो उस के चित्त में क्षोभ हो रहा होता है ।

परन्तु इन को ले ही चलना चाहिए । जब शनिवार के वाड़े में सौतिया डाह की आग भड़क उठी तो उसकी ज्वाला सारे महाराष्ट्र में फैले बिना न रहेगी ।

[जाती है]

नाना—माँ, मैं जाता हूँ अपने नये भाई को देखने ।

काशीबाई—जाओ खुशी से जाओ !

[नाना साहब "मैं जाता हूँ मुन्ना को देखने" ऐसा कह कर चला जाता है]

काशीबाई—मालती, मेरा बिछौना बिछा दो ! बहन, मेरा सिर कितना भारी हो रहा है !

मालती—[हँस कर] चलिए बाई जी ! [स्वगत] सौत को बच्चा हुआ कि स्त्रियों के सिर भारी हुए !

[बाजीराव प्रवेश करता है ।]

बाजीराव—मस्तानी को लड़का हुआ सुन कर इसे आनन्द हुआ होगा क्या ? या यह खिन्नता से बैठी होगी ? यद्यपि दोनों पर ही मेरा प्रेम है, तो भी दो स्त्रियाँ करने के कारण मेरा आनन्द दुगुना होने के बदले बिलकुल नष्ट हो गया है । दो स्त्रियाँ करने की इच्छा रखने वालों को मेरी दशा पर ध्यान देना चाहिए । फिर वे आयु पर्यन्त ऐसी भारी भूल कभी न करेंगे ।

आज कल मेरा घर इतना विकट हो गया है कि राज्य-संचालन मेरे लिए आसान है पर इन दो स्त्रियों का प्रबंध कठिन जान पड़ता है। अरे, पर यहाँ कोई दिखाई नहीं देता ! [आशा से] क्या यह मस्तानी का लड़का देखने गई होगी ? यदि ऐसा हो, तो मैं अपनी आयु में यह पहला सुवर्ण-दिवस समझूँगी !

[मालती आती है]

बाजीराव—क्यों री, वह कहाँ है ?

मालती—बाई जी ?

बाजीराव—[हँस कर] जान पड़ता है, मस्तानी के महल में गई है। ठीक है न ?

मालती—उनका सिर दर्द कर रहा है। इस लिए वे ज़रा लेट गई हैं !

बाजीराव—[फीका पड़ कर] सिर दर्द कर रहा है क्या ? [स्वगत] मेरा ऐसा अपमान अब पल पल पर होगा ! मुझे इस के लिए तैयार रहना चाहिए। परन्तु किसी एक पर से भी तिल भर प्रेम घटाना ठीक नहीं।

मालती—वहाँ चलिए सरकार !

गोवर्धन पन्त—सरकार, अप्पा साहब ने आप को याद किया है।

बाजीराव—क्यों रे बीच में ही !

गोवर्धन—वसई से अनन्त रघुनाथ आए हैं। वे सुनाते हैं कि वहाँ बड़ा धार्मिक अत्याचार हो रहा है!

बाजीराव—क्या? धर्म्म के विषय में अत्याचार! नहीं, नहीं! मराठों के साम्राज्य में किसी प्रकार का धार्मिक अत्याचार हो! यह ठीक नहीं।

गोवर्धन—राव साहब, वसई के लोग जो बातें सुनाते हैं उन्हें सुन कर रोंगटे खड़े हो जाते हैं! मनुष्य भी ऐसा अत्याचार कर सकता है. यह संभव नहीं जान पड़ता!

बाजीराव—चलो, चलो! मुझे बताओ अनन्त रघुनाथ कहाँ है।

[जाता है।]

मालती—अच्छा हुआ जो इस समय सरकार इधर नहीं आए।

[जाती है]

[इन्दुमती बच्चे को लिए प्रवेश करती है]

इन्दुमती—मैं पहले ही समझ गई थी कि काशीबाई जी आएँगी नहीं। आज नामकरण संस्कार है। देखना चाहिए आज भी आती है या नहीं। लोक-लज्जा से आज शायद आजायँ, तो आजायँ। पर वे सच्चे प्रेम से नहीं आयँगी। फिर क्या करना चाहिए? काशीबाई साहब के सामने इस बच्चे को कैसे रक्खूँ? सौत की आँखों से निकलने वाली किरणें—किरणें कैसी! वे तो विष ही हैं! वह विष इस बालक

के शरीर पर कैसे उँडेलने दूँ ! साँप के दाँतों का विष ! वह विष इससे कहीं अच्छा है ! परन्तु सौत की दृष्टि का विष ! छिः छिः ! वह विष लोहे के खम्भे को राख कर डालता है—फिर सोने जैसे बच्चे की तो बात ही क्या । नहीं बहन ! इस सोने के ऐसे बालक की आज मुझे रक्षा ही करनी चाहिये !

[परदा गिरता है । काशीबाई प्रवेश करती है ।]

काशीबाई—आज उस मुई के लड़के का नामकरण-संस्कार है । हाय ! हाय ! इस बात की याद आते ही मेरे मन को कितनी यातना होती है । ऐं ! उस मुई के लड़के का नाम-करण ! सौत को बच्चे हुए, फिर मेरे बच्चों का क्या हाल ? उसे बच्चा हुआ, उस दिन तोपें चलीं—मेरा नाना हुआ तब भी ऐसी ही तोपें चली थीं ! मेरे नाना का मान-संमान उस सौत के बच्चे को ! यह क्या ! क्या यह मेरा अपमान नहीं ? यह सौत अब मेरे घर में घुसेगी ! यह साँपिन—यह बाघिन—यह डाँकिन—अब मेरे घर में घुसेगी, और मेरे पिल्ले !—हाय, हाय !—हाय, हाय ! [धड़ाम से गिर पड़ती है ।]

[इन्दुमती प्रवेश करती है]

इन्दुमती—काशीबाई जी—

काशीबाई—[चित्त-विभ्रम में हँसती है] क्या आ गये ? कहाँ से आना हुआ ? निज़ाम की ओर से आना हुआ है या बुन्देल खंड की ओर से ?

इन्दुमती—यह प्रकरण उल्लङ्घन कर गया है सीमा का। अब यह कोई जल्दी ठिकाने पर आने वाला नहीं !

काशीबाई—पर आप ने यह ऐसा क्यों किया ? मेरी छाती पर सौत कैसे ले आये ?

इन्दुमती—सच मुच, इस समय मेरा पुरुष बनने को जी चाहता है ! मैं पुरुष बनी होती तो ज़रा मौज देखने के लिये ही मैंने ज़रूर दो स्त्रियाँ की होतीं ! कभी न चूकी होती।

काशीबाई—[एक दम ज़ोर से हँस कर] लो, लो, यह शक्कर ! यह शक्कर कितनी पित्त-नाशक है ! पित्त हो या सौत को बच्चा हो, इस के लिए शक्कर खानी चाहिए।

इन्दुमती—[स्वगत] इस ने मेरी उँगली मेरी ही आँख में घुसेड़ दी ! पर यह अच्छा हुआ ! इस घटना से हमारी आँखें खुल जानी चाहिएँ कौर मस्तानी से कह कर बालक की अतिशय रक्षा करनी चाहिए।

काशीबाई—[शक्कर देने का ऐसा करती है] यह—शक्कर खा। अजी—मस्तानी को लड़का हुआ है। वह—उन्हों ने—वहाँ से लाई है न ! मस्तानी को लड़का हुआ !

इन्दुमती—वाह ! मुझे कैसी नई बात सुना रही है !

काशीबाई—पर, अब कैसे होगा ? मेरे लड़के का क्या बनेगा ? यह क्या किया ! यह आपने क्या किया ? मेरी छाती पर सौत किस लिए लाये ? वह सर्पिणी—वह बाघिन—वह डाँकिन—अरे, अब मेरे बच्चे !

[एक दम गिर पड़ती है ।]

इन्दुमती—बस, हो गई यह बात ! इन्दुमती, तू समय पर सँभल गई, नहीं तो सौतिया डाह से तेरी भी ऐसी ही अवस्था हुई होती ! [जाती है ।]

काशीबाई—[होश में आकर] अरी मालती, अरी मालती !

मालती—[प्रवेश करके] क्या है बाईजी ?

काशीबाई—अब कोई आया था क्या ?

मालती—मैं यहाँ नहीं थी, बाई जी !

काशीबाई—यह देख, मेरी ज़रा आँख लगी थी । उस में मुझे ऐसा स्वप्न हुआ कि मस्तानी बाई की तरफ से बहन जी यहाँ आई थीं ! मैंने उन से कुछ कहा है, ऐसा मुझे भास सा हुआ है । पर क्या कहा है, इस का मुझे पता नहीं रहा ! मेरे मन में इस से बड़ी खलबली मच रही है ।

मालती—बाई जी, स्वप्न में मनुष्य चाहे ऐसा बोलता है । पर उस की बात कोई सुन सकता है क्या?

ाशीबाई—अरी, कभी-कभी स्वप्न भी सच निकल आते हैं। हरिश्चन्द्र ने विश्वामित्र को स्वप्न में दान दिया था—पर वह उसे सच ही करना पड़ा न।

ालती—फिर बाई जी, आप भी क्या किसी को राज्य-दान देना चाहती हैं ?

ाशीबाई—[चित्त-विभ्रम के दौरे में] अरी वह साँपिन—वह बाघिन—वह डाँकिन—

ालती—[डर कर] छिः ! बाईजी, यह क्या कह रही हो ! हाय ! मेरा जी डर रहा है।

ाशीबाई—[होश में आकर हँस कर] अरी, सच ! आज मस्तानी बाई के लड़के का नामकरण है। चलो—चलो—वहाँ !

[परदा उठता है। नरसिंगा बजता सुनाई देता है।]

ुमती—यह देखो नरसिंगा ! ऐसा जान पड़ता है काशीबाई और बाजीराव साहब आ रहे हैं।

[मस्तानी और बाजीराव एक साथ आते हैं।]

ुमती—मस्तानी, इधर आ बहन ! बैठ यहाँ। कैसी री पगली है तू ! नन्हे को नहीं लाई ?

स्तानी—वह पालने में सो रहा है।

ुमती—यह देख, वेदी बनी है और चौक पूर कर उस पर फट्टे

रक्खे हैं। इस पर अब तुम तीनों को बैठना है। [बाजीराव से] आप को तो यह बड़ी कवायद जान पड़ती होगी ?

बाजीराव—बहन जी, हमारा जन्म ही कवायद के लिए हुआ है।

इन्दुमती—[हँस कर] पर यह स्त्रियों की कवायद आप को नहीं आयगी। यह हमारी हम ही जानती हैं। इस में पुरुष नौसिखिए हैं !

बाजीराव—[हँस कर] नहीं, बहन जी, यह कवायद भी हम उत्तम रीति से कर के दिखायँगे।

[गोवर्धन पन्त प्रवेश करता है]

गोवर्धन—शाहू महाराज के यहाँ से साँडनी सवार आया है। वसई की घटना के संबंध में विचार करने के लिए आप को बुलाया है।

बाजीराव—बहुत अच्छा ! ठीक है ! महाराष्ट्र की सेवा के लिए यह बाजीराव हर वक्त कमर बाँधे तैयार है। राष्ट्र-सेवा ही उस का ध्येय है। इस लिए यह रण-समाचार मेरे लिए कैसे सुखकर न होगा !

[एकदम निकल जाता है]

मस्तानी—[स्वगत] इन के इस वीरोचित आचरण को देख मेरा प्रेम सौ गुना बढ़ जाता है !

इन्दुमती—चलो, भीतर चलो !

[सब भीतर चली जाती हैं। भीतर पालना दीखता है।]

काशीबाई—क्या! यह पालना? यह बालक है! मस्तानी बाई, यह तुम्हारा बालक है? [उस का डाह एकदम भड़क उठता है] सर्पिणी—बाघिन—डाँकिन [डरावनी आँखें निकाल कर] फिर मेरे बच्चे?—

मस्तानी—[घबरा कर] बहन, दौड़ो, दौड़ो, देखो यह क्या कर रही हैं।

इन्दुमती—[भीतर से बालक को ले आती है] मस्तानी, घबराओ मत! पालने में बालक नहीं है। तेरा लड़का शमशेर बहादुर मेरे पास सुरक्षित है।

काशीबाई—क्या! मैंने क्या किया? मैं क्या कर रही थी? [मूर्च्छित हो कर गिर पड़ती है। मालती उसे सँभालती है।]

इन्दुमती—[स्वगत] तुम कुछ भी करो, तो भी शमशेर बहादुर सुरक्षित है। यह बाजीराव का लड़का, बाजीराव के तुल्य ही मराठा-साम्राज्य के लिए उपयोगी सिद्ध होगा।

काशीबाई—हाय, मैंने क्या किया! [शून्य दृष्टि से देखती है। उसे बाजीराव दिखाई देता है।] आप—आप को क्रोध आया है? नहीं, नहीं, आप क्रोध न कीजिए! आप न भी होते, तो भी आप का बालक सचमुच मेरा ही है! वह मुझे मेरे नाना साहब के ही समान है। शपथ—शपथ सच

मुच आप के पाँव की शपथ! मैं उसे कुछ नहीं करूँगी! यह देखिए, मैं उसे अपनी गोद में लेती हूँ।

[उसे ऐसा भासता है मानो बाजीराव उसकी ओर इंगित करता है।]

काशीबाई—यह देखिए, आपकी आज्ञा मैंने मान ली! हाँ, हाँ! मस्तानी का लड़का मेरा ही लड़का है! [मुस्कराते हुए मुख से] लाओ बहन जी! बालक को लाना इधर! दीजिए उसे मेरी गोद में!

मस्तानी—[घबरा कर, एक ओर हट कर, इन्दुमती से] न देना बहन, उन को बिलकुल न देना।

इन्दुमती—[उसे एक तरफ ले जाकर] अरी, अब बादल हट गये हैं। मनुष्य की परीक्षा उस की आँखों से करनी चाहिए।

काशीबाई—लाओ बहन जी, लाओ! लाओ, बालक को जल्दी!

इन्दुमती—यह लीजिए।

[एक दम भीतर से बहुत सी स्त्रियाँ निकलती हैं। वे दोनों पर फूल बरसाती हैं। हल्दी-कुमकुम*और गोद भरना आरंभ होता है।]

---

*महाराष्ट्र में रीति है कि ब्याह-शादी और दूसरे शुभ अवसरों पर दर्शक स्त्रियाँ वर, वधू या नवजात बालक के पल्ले में नारियल-चावल आदि उपहार डालती हैं। इसे गोदी भरना कहते हैं। घर वाले इन दर्शक स्त्रियों के माथे पर कुमकुम का टीका लगाते हैं। यह प्रक्रिया "हल्दी-कुमकुम" कहलाती है।

इन्दुमती—अब सब कुछ ठीक है। आज बड़ा शुभ दिवस है।

[स्त्रियाँ शकुन के तौर पर बच्चे को उपहार देती हैं। मस्तानी उन सब को और काशीबाई को कुमकुम का टीका लगाती है। इसी अवस्था में परदा गिरता है।]

प्रवेश तीसरा

बाजीराव—लड़ाई पर जाने के लिए प्रिय पत्नी से तो आज्ञा ले ली। अब—पर—गोवर्धन पन्त ने गारपीर पर डेरे डालने का हुकम दिया है या नहीं ?

गोवर्धन राव—सरदार की सेना कभी की उधर गई है, सरकार ! [प्रणाम कर के जाना है।] [नाना साहब प्रवेश करता है।]

नाना साहब—राव साहब, मैं लड़ाई पर जाऊँगा !

बाजीराव [हँस कर] अरे, लड़ाई कोई आँख मचौनी का खेल नहीं !

नाना—वह आँख मचौनी ही है ! अब महाराष्ट्र के लोगों के लिए युद्ध आँख-मचौनी का ही खेल है ! राव साहिब, सिंह को जिस प्रकार हरिण खाद्य पदार्थ दीखता है उसी प्रकार राष्ट्र की स्वतंत्रता के लिए युद्ध करने वाले हम मराठों को शत्रु भक्ष्य पदार्थ दीखता है ! राव साहब, आप शत्रु-शत्रु क्या कह रहे हैं ! हम मराठे शत्रु को खा डालेंगे—उन का जगत् से नाम-शेष कर देंगे।

बाजीराव—[उस के मुँह पर हाथ फेरता है।] [स्वगत] तभी तो तुम मेरे लड़के हो !

नाना—राव साहब, आप क्या सोच रहे हैं ?

बाजीराव —[हँस कर] अरे, हम कोई स्वतन्त्र नहीं हैं! हमारे स्वामी शाहू महाराज हैं ! उन की आज्ञा हमें लेनी चाहिये।

नाना— ठीक है—मैं शाहू महाराज की आज्ञा ले आता हूँ ! उनसे मैं कहूँगा कि लड़ाई पर जाता हूँ ! मैं लड़ाई पर ज़रूर जाऊँगा ! [जाता है।]

बाजीराव—[हँस कर] इस लड़के के लक्षण तो अच्छे दीखते हैं ! जान पड़ता है, यह मराठों का नाम रक्खेगा ! चलूँ, प्यारी मस्तानी से आज्ञा ले आऊँ ! [परदे की ओर देख कर] वह देखो, मस्तानी मेरे चिन्तन में अकेली बैठी है !

[इस दृश्य को दिखाने वाला परदा उठता है]

[मस्तानी का हाथ अपने हाथ में ले कर] मस्तानी, मैं अब मुहिम पर जाने वाला हूँ !

मस्तानी—[स्वगत] मैं अब मुहिम पर जाने वाली हूँ !

मस्तानी —[प्रकट] जाना ही चाहिए। लड़ाई और मुहिम में ही मेरा वीर शिरोमणि बाजीराव चमकता है ! पर आप से मेरी एक विनती है।

बाजीराव —वह क्या ?

मस्तानी—मैं आप के साथ लड़ाई पर जाऊँगी ! मुझे आज समर

में ले चलिए ! आप कल्पतरु हैं तो मैं उसकी छाया हूँ । देखिए, समर की शोभा कैसी खिल उठती है !

बाजीराव—[हँस कर] मस्तानी, इस विनती को सुन कर मुझे आनन्द हुआ है—पर कोंकण प्रदेश की मुहिम बहुत विकट है। वहाँ स्थल-युद्ध और जल-युद्ध दोनों होंगे ! चारों ओर शत्रु डेरे डाले पड़ा है। वहाँ युद्ध के बहुत लम्बा हो जाने की आशंका है। तेरे जैसी सुकुमार सुन्दरी को वहाँ ले जा कर लड़ाकू सिपाहियों के हृदयों को कोमल बनाने की अपेक्षा क्या यह अच्छा न होगा कि मुझे मिलने वाले यश-रूपी हार को तेरे कर-कमलों पर अर्पण कर दूँ ?

मस्तानी—परन्तु आप को किस ने कहा कि स्त्रियाँ सदा कोमल ही होती हैं ? हम शृङ्गार-मन्दिर में जितनी सुकोमल हैं रणाङ्गण में उस से दुगुनी कठोर हैं । सिंहिनी की झपट सिंह की अपेक्षा भयंकर होती है !

बाजीराव—[हँस कर] तभी तो मैं अपनी सिंहिनी को साथ नहीं ले जा सकता !

मस्तानी—पर क्यों ? अब और कौन कारण सूझ पड़ा ? [हँस कर] इस पूने के पानी का गुण ही ऐसा है कि यहाँ कारण खूब सूझते हैं !

बाजीराव—[हँस कर] तुम सब मखौल ही समझती हो ! पर

देखो, शमशेर बहादुर का जन्म हुए अभी पूरा महीना भी नहीं हुआ।

मस्तानी—पर वह भी सिंह का बच्चा है!

बाजीराव—छिः, पर मेरी बात तो सुनो! ऐसे कच्चे शरीर में लड़ाई पर मत चलो। मस्तानी, वह कोंकण देश बड़ा खराब है। वहाँ की प्रखर वायु तुम्हारे कोमल शरीर को हानि पहुँचाएगी, सुनोगी न मेरी इतनी बात, सुनोगी न?

मस्तानी—छिः, अजी इस तरह मिन्नतें करने से मनुष्य निरुपाय हो जाता है!

[इतने में परदे में से आवाज़ आती है—"सरकार घोड़े पर ज़ीन कसा तैयार है।"]

बाजीराव—हाँ, मैं आया! निकला मैं! [उतावली के साथ निकल जाता है। जाते जाते] मस्तानी, मैं जाता हूँ!

[जाता है।]

मस्तानी—[कमर कस कर] और मैं भी निकली! उन्हों ने नहीं कहा, तो भी मैं कोई थोड़ी रहने वाली हूँ! वीर की स्त्री वीर के साथ ही समरांगण में खड़ी होनी चाहिए!

[खिड़की में से झाँक कर]

कैसा नयन-मनोहर रूप है!

इन्दुमती—[प्रवेश करती है] अरी, किस को देख रही हो?

मस्तानी—अरी, पंच कल्याणी अबलक घोड़ा है! ज़ीन पर कलाबतून झकझक कर रहा है। कलगी का तुर्रा सूर्य की तरह चमक रहा है। पाँव में छुम छ न न न न न न न घुँघरू बज रहे हैं!

इन्दुमती—[हँस कर] अरी हाँ!

मस्तानी—अरी, नौबत बज रही है! सेना इकट्ठी हो रही है!

इन्दुमती—अरी, इस शमशेर को तो गोद में उठाया होता।

मस्तानी—ऊँ हूँ! तू ही उठा उसे! अरी, आगे राजकीय सेना है! हाथियों पर अंबारियाँ सजी हुई हैं। कैसा आनन्द का समय है!

[परदा गिरता]

— —

प्रवेश चौथा

[परदा उठता है, दीवान खाने में रघुनाथ, जनार्दन, सदाशिव, ये लड़के खेल रहे हैं ।]

रघुनाथ—अरे भाई, परसों जो लड़ाई का पत्र पढ़ रहे थे वह तू ने क्या सुना था ?

सदाशिव—हाँ, भाई, उस पत्र में बड़े मज़े की बातें थीं । राव साहब ने शत्रु के खूब दाँत खट्टे किए और उसके देश पर अधिकार कर लिया । उसके सिपाही बहुत मारे गये । क्या हम भी कभी ऐसा ही मज़ा करेंगे ?

रघुनाथ—अरे, जब हम बड़े होंगे तब हम भी ऐसा ही मज़ा करेंगे ।

जनार्दन—भाई साहब, ऐसी झूठी गपें मत हाँको । लड़ाई का काम बड़ा कठिन होता है ! वहाँ मारना है या मरना है ! भाई, लड़ाई का मौका न आवे तो अच्छा है ।

रघुनाथ—भाई, तेरे ऐसे भीरु स्वभाव से जान पड़ता है कि तेरे भाग्य में घर पर ही बैठना है । अरे, अप्पा साहब और राव साहब यदि ऐसा डरते तो, पागल, क्या वे इतनी लड़ाइयाँ जीत सकते ?

सदाशिव—ऐं ! ले दे कर लड़ाई में मरने का ही डर है न !!

[थापी मार कर] यह सदाशिव तो लड़ाई में ही मरेगा, परन्तु मुसलमानों की सीमा को पार करेगा !

रघुनाथ—पर क्या रे भाई, आज तो शमशेरा कहीं दीखता नहीं। मैंने उस की कल खूब खबर ली !

जनार्दन—यह देखो भाई, उस को यह सदा तंग किया करता है। यदि राव साहब को इस का पता लग गया तो हमें पीठ पर तेल लगा रखना चाहिए !

रघुनाथ—तो फिर वह रोनी सूरत हम से अकड़ क्यों करता है ?

सदाशिव—ठीक है। उसे अपनी मर्यादा में रहना चाहिए। कितनी भी हो, अन्त को है तो दासी का पुत्र !

[इतने में शमशेर आता है]

शमशेर—देखो, मेरी यह तलवार कैसी सुन्दर है ! इसकी सजावट कैसी मनोहर है। मेरी माँ ने आज ही खेलने के लिए मुझे दी है। तुम्हारे पास ऐसी कहाँ है ! मैं इस के साथ खूब मौज करूँगा।

सदाशिव—क्या है बच्चू ! लकड़ी की तो तलवार लाया है और हमें उस की इतनी शान दिखा रहा है !

रघुनाथ—इस तलवार से क्या करेगा रे ?

शमशेर—माँ कहती थी, शिकार खेलना है।

जनार्दन—काहे का शिकार रे ? चूहे का या सूस का ?

सदाशिव—नहीं भाई, कुत्ते का और सुअर का !

शमशेर—[ईर्ष्या से] नहीं, नहीं ! इस से मैं सिंह और व्याघ्र का शिकार करूँगा । इसी तलवार से मैं शत्रु का सिर चर्र चर्र काट डालूँगा । तुम मेरा शौर्य देखना ।

रघुनाथ—शमशेरा, इस काठ की तलवार से क्या सच मुच के बाघ आदि मर सकते हैं ? छीन लो रे इस की तलवार ! [ऐसा कह कर तलवार छीन लेते और तोड़ डालते हैं] कर अब शिकार, देखें, कैसे करता है !!

शमशेर—यह क्या भाई ! मेरी तलवार क्यों तोड़ डाली ? मैं अब माँ से कहता हूँ, मेरी तलवार तोड़ डाली है !!

[जाने लगता है]

वासुदेव बाबा—अरे शमशेर ! ऐसा रोता क्यों है ? आ जा, आ जा ! अरे, एक तलवार तोड़ दी, तो दूसरी मिल जायगी । ले इधर ।

शमशेर—[मुड़ कर] अच्छा बच्चू, कोई डर नहीं ! आज मुझ से वास्ता पड़ा है । क्या समझ रहे हो ! आज ही मैं एक एक को पकड़ कर दुरुस्त कर दूँगा ।

सब लड़के—तू हमारा क्या कर लेगा ?

[थप्पड़ मारते हैं ।]

शमशेर—मारो, मारो, मैं जाकर माँ से कहता हूँ ।

रघुनाथ—अरे, जा, जा, जा उसे जा कर कह दे।

[एक थप्पड़ और लगाते हैं।]

शमशेर—[ज़ोर से] माँ, यह देख मुझे कैसे मार रहे हैं!

जनार्दन—[डर कर] भाई जाने दो ! व्यर्थ में झगड़ा मत करो! छोड़ दो इसे !

वासुदेव बाबा—अरे छोकरो, ऐसी मारा मारी मत करो ! क्या है रे तुम्हारा ? [उसको छुड़ाता है।]

सदाशिव—शमशेरया ! तू यार बड़ा लड़ाका है ! हमारे साथ खेलने न आया कर। [उसकी जेब की ओर देख कर] अरे, यार इसके खीसे में कुछ खाने की चीज़ है।

[ऐसा कह कर सब लड़के उस के खीसे में से बादाम निकाल कर जाते हैं।]

शमशेर—यह क्या रे भाइयो ! मेरे सब बादाम खा गये !! अब मैं क्या खाऊँ ?

रघुनाथ—उनके छिलके खा ! [एक ओर ले जाकर सदाशिव से] इस को हम फँसाएँगे, अँ ! इसे खूब पीटेंगे ! [प्रकट] यह देख रे शमशेर, तू खड्ग-बहादुर है न? अब हम लड़ाई का खेल खेलेंगे, अँ ! तू, दिल्ली का बादशाह बन, अच्छा ! और मैं राव साहब पेशवा बनता हूँ ! और भाई, तू चिमणा जी काका, अँ ! हम दोनों एक तरफ हैं !

जनार्दन—और भाई, मैं कौन ?

सदाशिव—तू हमारा शाहू महाराज, बैठ कर लड़ाई देखने वाला !

शमशेर—मैं एक तरफ अकेला क्यों ?

रघुनाथ—तुम तो हुए खड्ग-बहादुर ! तुम्हें दूसरा किस लिए चाहिए !!

शमशेर—पर मैं अकेला कैसे लड़ सकता हूँ ?

सदाशिव—अरे यह तो हमारी झूट मूट की लड़ाई है । तू सामने तो खड़ा रह !

[शमशेर सामने खड़ा रहता है ।]

रघुनाथ—अच्छा, करो आरम्भ । [धड़म धाड़ कड़ ड़ ड़ तोपें छूटती हैं] अँ,! भाई अच्छा यह दिल्ली का बादशाह अकेला मिल गया है । पकड़ो इसे ।

सदाशिव—पकड़ो । बाँधो इसकी मुशकें ! बादशाह, दो हमें अपना राज्य !

[ऐसा कह कर उसके हाथ धोती से बाँधते हैं ।]

शमशेर—यह क्या रे भाई ! हमारे हाथ क्या दर्द नहीं करेंगे ?

रघुनाथ—अरे, यह ज़रा यों ही तमाशा है । बादशाह को पकड़ना नहीं चाहिए क्या ? फिर राज्य कैसे मिलेगा !

सराशिव—हँ ! गिराओ इस बादशाह को नीचे । खूब दबा कर

ठोको। [ऐसा कह कर उसे भूमि पर गिराते हैं] क्यों रे देते हो कि नहीं राज्य, या करूँ तुम्हारा आटा ढीला ?

[ऐसा कह कर सब घूँसे मारते हैं।].

शमशेर—यह क्या रे ! मुझे तुम सब मार रहे हो ! मैं भी तुम्हें मारूँ !!

रघुनाथ—हाथ कहाँ हैं तेरे खुले ! अरे, कह दो, मैं राज्य देता हूँ, बस छोड़ देंगे !

शमशेर—अरे भाई, लो मेरा राज्य, पर छोड़ो मुझे !

वासुदेव बाबा—[हँसता है] अरे छोड़ो अब इसे ! यह लड़के भाई, कैसा तमाशा करते हैं !

रघुनाथ—यह माँ को न बतावे, तो हम छोड़ देते हैं !

शमशेर भाई, नहीं कहूँगा। पर छोड़ो एक बार !

सदाशिव फिर आयगा टेढ़ी टोपी पहन कर हमारे सामने ? [उसे छोड़ते हैं] नाम क्या लड़के का, शमशेर बहादुर ! पायजामे में टट्टी निकलती है और चला है शमशेर बहादुरी करने ! क्यों रे !

रघुनाथ—चल, निकल यहाँ से ! खबरदार, फिर हमारे साथ खेलने आया !

शमशेर अच्छा, अच्छा ! [जाते जाते] मैं अभी घर जा कर माँ से कह देता हूँ कि तुम सब ने मिल कर मुझे पीटा है।

पिता जी के आने पर वह सारा वृत्तान्त उन से कह देगी। फिर वे तुम्हारी खूब खबर लेंगे।

सब लड़के—अरे जा नगोड़ा सिपाही कहीं का! तेरी माँ हमारा क्या कर लेगी?

शमशेर—देखो मैं अभी जा कर सारा वृत्तान्त माँ को सुनाता हूँ और उसे झट यहाँ ले आता हूँ।

[ऐसा कह कर जाता है। सब उसके पीछे जाते हैं।]

—

प्रवेश पाँचवाँ

स्थल—सातारे के किले में निवास।

[शाहू महाराज का दरबार]

[दरबार में प्रतिनिधि, पेशवा, जाधवराव और अन्य सरदार बैठे हैं। चोबदार पुकारता है। सरदार लोग मुजरा करते हैं। फिर सब लोग अपनी अपनी जगह बैठ जाते हैं।]

शाहू महाराज—पेशवा, बहुत दिन बाद आप को मेरी याद हो आई! इसी लिए आप आज यहाँ आए हैं। अच्छा आप सकुशल तो हैं न? आपने अपना दिव्य विक्रम कहाँ और कैसे दिखलाया?

बाजीराव—छत्रपति, स्वामी की कृपा देख कर प्रसन्न हैं। स्वामी के आज्ञानुसार हिन्दुस्तान के सब काम पूरे कर आया हूँ। यह चौथाई सरदेश मुखी के प्रमाण-पत्र आप के चरणों में अर्पण करता हूँ।

[प्रमाण-पत्रों के बंडल आगे रखता है।]

महाराज के दर्शन करके आज बहुत आनन्द प्राप्त हुआ है। हमारे नेत्र सफल हो गये हैं। स्वामी की कृपा से जगत् में यश और कीर्ति भर गई है। यवनों का गर्व चूर कर के

उन को हतवीर्य कर दिया है। चौथाई और सरदेशमुखी की जो सनदें मिली हैं वे सप्रेम आप के चरणों पर अर्पित हैं।

शाहू महाराज—शाबाश! बादशाह ने सनदें देते समय कुछ कुड़कुड़ तो की होगी?

बाजीराव—यह आप किस लिए पूछते हैं? जब एक दो लड़ाइयों में लड़ना पड़ा तो झट चुप चाप सनदें दे दीं।

शाहू महाराज—वाह वाह! आप का क्या कहना है!! जगदम्बा आप को सदा यश देवे!!!

बाजीराव—[हाथ जोड़ कर] सरकार, यह बड़े महाराजा की और स्वामी की पुण्याई का प्रताप है!

प्रतिनिधि—[बीच में ही] सरकार, पेशवा अब पूना से आए हैं। हिन्दुस्तान से आए तो इन्हें छः मास हो गये!

बाजीराव—मेरी प्रकृति तनिक अस्वस्थ थी इस लिए पूना में ठहर गया। नहीं तो स्वामी के चरणों का दर्शन किए बिना कदापि न रहता, यह तो महाराज जानते ही हैं।

प्रतिनिधि—शायद इसी लिए पेशवा के मुख की कान्ति फीकी पड़ रही है!

माधवराव—अरे, लड़ाई का श्रम क्या थोड़ा होता है!

प्रतिनिधि—परन्तु गत छः मास में कहाँ था लड़ाई का श्रम?

जाधवराव—न हुआ तो भी —मुहिम में मिली हुई लूट की व्यवस्था करने में भी श्रम होता है !

प्रतिनिधि इस सारे परिश्रम से बड़ी थकावट हो गई होगी !

बाजीराव—महाराज के चरणों के दर्शन से सब क्लान्ति दूर हो कर पूर्ववत् कान्ति आने में क्या देर लगती है ! मैं समझता हूँ, घर में बैठे आटा-दाल गिन कर मुँह चमकाने से क्या लाभ ? युद्ध में श्रम करके सब कहीं प्रशंसा प्राप्त करना ही मुख की सच्ची कान्ति है ।

स्वामी के दर्शनसे मेरा हृदय प्रफुल्लित हो रहा है। जो घर में बैठे अपना समय बिताते हैं उन के जीवन को धिक्कार है ! समर में यश-लाभ करने से बढ़ कर मनुष्य के लिए और दूसरा भूषण कोई नहीं ।

शाहू पेशवा का यह कथन बिलकुल सत्य है । पेशवा, चारों ओर मराठों का जय जयकार करने वाला हमारे दरबार में तुम्हारे सिवा दूसरा कोई नहीं दीखता । बाकी सब तो घर की मुर्गियाँ हैं ! इस में कुछ भी संशय नहीं । अब इस जाधवराव को देखो, इस की ही बात लो । कहाँ मेरे महावीर तलवार-बहादुर धन्नाजी और कहाँ यह ! सूर्य के घर शनैश्चर के सदृश यह अधम जान पड़ता है। शिवाजी महाराज के बाद जिसने हिंदुत्व की स्थापना की

उसी के घर इस नीच ने जन्म लिया और अपने ही लोगों में फूट डाल कर इस स्वराज्य को डुबाने के लिए तैयार हुआ ! बाजीराव, तुम्हीं इसे संमार्ग पर लाये हो !

कहाँ वह महा योद्धा पिता और कहाँ यह कुलाङ्गार पुत्र ! इसके ऐसे जीवन को धिक्कार है !

नमक हराम घर में कलह पैदा कर के हिन्दूपद बादशाही को डुबाने का समय लाया था ! पर जल्दी ही पता लग गया। पेशवा, तुमने ही इस ठीक किया है !

जाधवराव—महाराज, मैं दाँतों में तृण ले कर आप के चरणों में आया हूँ। हम पर आप के अप्रसन्न होने का कारण यह पेशवा ही है । स्वामी के चरणों में सच्चे और झूठे की पहचान होनी चाहिए—

प्रतिनिधि—[बीच में] जी जीभ लंबी करके पाण्डित्य छाँटे वही सच्चा।

शाहू—[क्रोध से] खबरदार, पेशवा के संबंध में कोई शब्द निकाला तो ! हमें सब मालूम है !

बाजीराव—संभाजी महाराज को वापस देने में निज़ाम को बड़ी मुश्किल हुई थी । परन्तु करता क्या ? हमने उस को ऐसा दाँव-पेच में फँसाया कि उसे अपनी जान के ही लाले पड़ गये।

शाहू—वह मुझे सब मालूम है। और इस जाधवराव ने उसे कैसी कैसी नीच सलाहें दी थीं, यह भी मैं जानता हूँ। धिक्कार है ऐसी इस की मन्त्रणा को!

जाधवराव—सरकार, मेरे सब अपराध क्षमा कीजिए! मैंने पहले भी आप से विनती की थी।

प्रतिनिधि—आज गई-बीती बातें दरबार में निकल रही हैं!

जाधवराव—राव साहब को आजकल पूना में जो सुख-विलास प्राप्त है उससे राज-काज की व्यवस्था दिन पर दिन उन के लिए मुश्किल होती जा रही है! आज कितने ही वर्षों से इन की खड्ग-वीरता, लड़ाई, मुहिम सब पूने में ही होती है!

बाजीराव—[क्रोध से] जाधवराव, बात क्यों बढ़ा रहे हो? तुम्हारी सब चेष्टाएँ मैं समझता हूँ! तुम जैसा नमक हराम, पिता के नाम को कलङ्कित करने वाला, अपने राजा को म्लेच्छ के सिपुर्द कर के राजद्रोह का महापातकी हम ने दूसरा नहीं देखा। मुसलमानों की गालियाँ सुनने वाले, अपना वर्चस्व गँवा कर पीठ दिखाने वाले और अन्त को इस दरबार में आकर निर्लज्जता प्रकट करने वाले केवल एक तुम्हीं हो! तुम्हारा जन्म व्यर्थ है, बिलकुल व्यर्थ है!! तुम्हें न कोई धर्म है और न स्वात्माभिमान्!! सच मुच जगत में

तुम्हारा जीवन मृतक के समान है ! तुम्हारे बाप-दादा ने बड़ी बड़ी वीरताएँ की थीं। जगत् में कीर्ति पा कर उन्हों ने अपने कुल को विभूषित किया था। उन के वंश में जन्म ले कर तुम ने उसे कलंकित किया है। तुम्हें धिक्कार है ! यदि कोई दूसरा होता तो अपना काला मुख पुनः सातारा को कभी न दिखलाता !

जाधवराव—मुझे पता है तू कितना धार्मिक है ! मुझे व्यर्थ दोष दे रहा है ! तू अपने को द्विजश्रेष्ठ कहता है और घर में तूने यवनी डाल रक्खी है !

[तलवार निकाल लेता है]

शाहू—[बीच में ही क्रोध से] अरे दुष्ट चन्द्रसेन ! यह अपमान-जनक बातें क्यों कर रहा है ? तुझे मालूम नहीं कि यह राज-दरबार है, कोई भंगड़ खाना नहीं ! तू किस के सामने ऐसे नीच और मर्मभेदी शब्द बक रहा है ! इसे पकड़ कर तुरन्त इसके पाँव में बेड़ियाँ डाल दो !

जाधवराव—पेशवा चाहे जैसी बातें करे, उसे सब क्षमा है !

शाहू—उन्होंने क्या झूठ कहा है ? उन का कथन सर्वथा सत्य है। अब यदि किसी ने इस परिषद् में ऐसा भाषण किया तो उसे दण्ड दिया जायगा ! समझ लीजिए ! पेशवा, इस दरबार के संबंध में आपका आचरण भी थोड़ा उपेक्षा

का दीखता है। यहाँ से आप को पूना में रहने की आज्ञा मिलने से आप सातारा को और दरबार को भूल ही गये हैं! पूने में रह कर मन माना विश्राम लेना चाहते हो न?

बाजीराव—इस बाजीराव ने अपनी अधिकांश आयु स्वामी की सेवा में बिताई है। न गरमी देखी है और न सरदी। सैकड़ों कोस घोड़े की रकाब से पैर बाहर नहीं निकाला। अनेक बार मक्का के भुट्टे खा कर ही निर्वाह किया और स्वामी के नाम का जयजयकार ठेठ अटक तक पहुँचाया। उस के बाद कुछ दिन पूना में विश्राम करने पर इस दरबार में वैरियों ने सरकार के कान भर दिए और इसी से स्वामी का मुझ पर इतना रोष हो गया! स्वामी की सेवा के बदले में अन्त को यदि मुझे यही पुरस्कार मिलना है तो फिर मुझे आज्ञा मिलनी चाहिए! स्वामी-सेवा का यदि मेरे लिए यही फल है तो मैं अपने शस्त्र आप के चरणों पर अर्पण करता हूँ। मुझे जाने की छुट्टी दीजिए। मेरी यही विनती है। मैंने निश्चय कर लिया है कि शरीर पर भस्म रमा कर विदेश को निकल जाऊँगा! मैं रण में प्राप्त हुई अपनी वीर पत्नी को आप के चरणों पर अर्पण करके कल ही अपने अंग पर भभूत रमा कर देशान्तर में चला जाऊँगा।

आप की आज्ञा होनी चाहिए, मैं इस निश्चय से कभी न टलूँगा।

शाहू महाराज—पेशवा, आप को अप्रसन्न होने का कोई कारण नहीं! आप ही जब ऐसा करेंगे तो हमारे पीछे इस गद्दी का नाम कौन रक्खेगा? आप सब कुछ समझते हैं, और जो कुछ हमारे कानों में पड़ा है वह भी सत्य है। पर आप ऐसे इस राज्य के सब से उच्चपदाधिकारी को अपने पद को कलंक लगाना बिलकुल उचित नहीं। आप स्वयं ही पूरी तरह से विचार करेंगे तो आप को भी पता लग जायगा। वीरों का रण में खड्ग से विवाह होता है। जगत् में कामिनी और काँचन के समान विघातक और दूसरा कोई नहीं। स्त्रियों के चक्कर में पड़ कर पुरुष का यौवन और धन सब उड़ जाता है। उसकी कीर्ति नष्ट हो जाती है और बड़ा फजीता होता है। छोटे और बड़े सब उसकी निन्दा करने लगते हैं। फिर मन को बड़ा क्लेश होता है उसके सुविज्ञ होते हुए भी सज्जन लोग उसका संमान नहीं करते। और अन्त को उसकी दुर्गति हो जाती है।

जो सच्चे सुविज्ञ वीर हैं वे रण-क्षेत्र में खड्ग के साथ सुख-विलास करते हैं और उसी से उनको इस लोक में कीर्ति और परलोक में पुण्य मिलता है। कुकर्म करके अपने

आत्मीय जनों को दुःखी करना जिस धर्म्म में अपना जन्म हुआ है क्या उसको रसातल पहुँचाना नहीं ? पेशवा, एक बात मैं आपको और कहे देता हूँ। उस पर पूर्णरूप से ध्यान दीजिए। जो कुछ करना हो उसे सोच समझ कर किया कीजिए।

द्यूत, मधु, स्त्री और काँचन ये चार बड़े मोहक होते हैं। व्यसनी और लंपट लोग निश्चय ही इनमें फँस जाते हैं। ऐसा समझ कर सदा सावधानी से रहना चाहिए। क्यों जाधवराव, हमारा कथन सत्य है कि नहीं ?

जाधवराव—सरकार, बिलकुल सत्य है।

बाजीराव—स्वामी की जो कुछ भी आज्ञा हो, मेरे लिए शिरोधार्य है। मैं उसे ईश्वर की आज्ञा समझ उसका पालन करूँगा। महाराज के चरणों की शपथ खा कर कहता हूँ। इन हाथों से आजन्म प्रभु की चरण-सेवा करूँगा! परमेश्वर मेरी यह प्रतिज्ञा पूर्ण करें!

शाहू महाराज—इस गद्दी का अभिमान रखने वाले को यही प्रतिज्ञा योग्य है। पेशवा, अब आप को यहाँ से यह आज्ञा होती है कि आज से तीन दिन के भीतर भीतर आप नर्बदा की तरफ मुहिम पर चले जाइए। अपने साथ पच्चीस हज़ार सैनिक ले जाइए। पीछे से पचास हज़ार सैनिक और

रवाना कर दिये जायेंगे। जिस समय उस निज़ाम को और दिल्ली के बादशाह को बंदी करके आप सातारा ले आयँगे तभी आपका पेशवा नाम सार्थक होगा।

बाजीराव—[शौर्य से] यह है इस सेवक का काम।

[गद्दी के सामने तलवार उठाकर]

महाराज की आज्ञा मुझे मान्य है। जाने में मैं एक क्षण का भी विलंब नहीं करूँगा। दोनों यवनों को पकड़ कर ले आऊँगा। नहीं तो मैं मुँह नहीं दिखाऊँगा। शत्रुओं को खड्ग के प्रहार से टुकड़े-टुकड़े करके दण्ड दूँगा, तभी मैं बाजी कहलाऊँगा। उनके राज्य का विध्वंस करके उन को रण में रुलाऊँगा। तभी मेरा नाम बाजी सार्थक होगा। आप को मैं दिल्ली के सिंहासन पर बैठाऊँगा। तभी बाजी कहलाऊँगा। सब के मुँह से हर हर महादेव कहलवाऊँगा। तभी मैं बाजी हूँगा। इस के बिना सातारा को मुँह नहीं दिखाऊँगा। यह वचन सर्वथा सत्य समझिए।

प्रतिनिधि—[कटाक्ष से] क्यों जाधवराव, तो फिर हमें शीघ्र ही सातारा छोड़ कर दिल्ली जाने की तैयारी करनी चाहिए। कारण, इस कार्य में पेशवा को सफलता होगी, इस में कुछ भी संशय नहीं!

बाजीराव—प्रतिनिधि की मर्मभेदी बातें हम सब जानते हैं। उस ने आज तक कैसी मन्त्रणा दी है! घर में चुपचाप बैठे रहो और बादशाह के पीछे मत पड़ो, उलटा उस को कुमक भेजो—बस वह सदा इसी प्रकार की मंत्रणा देता रहा है! धन्य है इस प्रतिनिधि को और इस की राजकार्य-प्रवीणता को! पूर्व काल में हमारे बाप-दादा ने बड़े-बड़े राजकार्य किए। बड़ी-बड़ी विजय प्राप्त कीं। क्या हमें वैसा नहीं करना चाहिए? तो फिर उन के आसन पर बैठ कर आप प्रतिनिधि और पेशवा कैसे कहलाते हैं! महाराज, मुझे आज्ञा मिलनी चाहिए।

स्वामी के पुण्य-प्रताप से मैं एक लाख से भी अधिक सेना, गोला-बारूद और ख़ज़ाना इकट्ठा करूँगा। भरत-खंड की तो बात ही क्या है, रूस और यूनान को भी अपने अधीन करूँगा।

शाहू—[आनन्द से] शाबाश, बाजीराव! आप ने बालाजी पन्त के घर में जन्म लिया है, इस लिए जो कुछ आप कहते हैं उसे आप अवश्य पूरा करेंगे, इस का मुझे पूर्ण विश्वास है। आप जैसे कार्यकर्त्ता मेरे पास हों तो मेरे लिए कौन बात कठिन है।

आप धन्य-हैं! आप निश्चय ही मेरे राज्य के आधार-

स्तम्भ हैं। यदि आप के मन में यह निश्चय दृढ़ रहेगा तो इन गुणों से आप को पिता के समान ख्याति मिलेगी। जगदीश्वर आप को रण में विजय और यश प्रदान करें!

बाजीराव—[शाहू महाराज को प्रणाम कर के बड़े शौर्य के साथ अपने सरदारों से]

चलो उठो, सरदारो! हाथ में तलवार लो। घोड़ों पर सवार हो जाओ। जल्दी दिल्ली देखेंगे। दिल्ली पर चढ़ाई करके समर में यवनों को मारेंगे, शिवाजी महाराज का स्मरण कर के शत्रुओं को छिन्न भिन्न कर देंगे और दिल्लीपति को बंदी बना लायेंगे। चारों ओर हरहर महादेव का नाद गुँजा कर संसार में अजर और अमर कीर्ति छोड़ जायँगे।

[चोबदार पुकारता है कि सभा विसर्जन होती है।]

अङ्क पाँचवाँ

प्रवेश पहला

स्थल--पुरन्दर के दुर्ग को जाने वाला मार्ग।

[जाधवराव हाथ में लालटैन लिए प्रवेश करता है]

जाधवराव—[लालटैन को उठा कर ऊपर करता है] वाह रे वाह ! आज परमेश्वर की कृपा से मेरे यहाँ सौ पचास मनुष्य चाकर हैं। परन्तु फिर भी उस लोह-चुम्बक के लिए यह मशालची का काम मुझे आप करना पड़ा है। आज उसे उस बंदीगृह में ला कर रक्खा है । ऐसा सुअवसर लाखों रुपया खर्च करने से भी नहीं मिल सकता। कई बार मैं ने ऐसा प्रयत्न किया परन्तु उस ने सदा गालियों की बौछार ही की। उस की गालियाँ मुझे पुष्पों की वर्षा जान पड़ती थीं। आज का यह सुअवसर नाना साहब की सहायता से प्राप्त हुआ है। कारण, वे चाहते थे कि जैसे भी हो हमारे घर में घुसी हुई यह गोह घर से बाहर निकल जाय। और मैं इस चिन्ता में था कि वह प्यारी मूरत मुझे कब प्राप्त होती है ! इस लिए जब मैं उसे खींचने लगा तब मेरा यह कोमल हृदय थोड़ा पसीज गया । परन्तु उस समय मैं

मातङ्ग-हृदय बन गया, तभी मुझे आज यह सुख का दिन प्राप्त हुआ है।

अहा! उस सुन्दरी की उस समय की स्थिति का क्या वर्णन करूँ! मेरे हाथ पड़ते ही मैंने उसे खींचा। मुझे देखते ही सुहास्य-वदनी ने आग की तरह आँखें लाल कर लीं, भृकुटी चढ़ा ली और क्रोध से मुझे मुआ, जल्लाद, अधम और दुष्ट कहने लगी।

मैंने उसकी बहुतेरी दुर्दशा की फिर भी उस के मन में उस भिक्षुक ब्राह्मण पर से तिल भर भी प्रेम कम नहीं हुआ। उलटा वह मुझ राजपुत्र को कूड़े-करकट के समान तुच्छ समझने लगी। अच्छा दुष्टा! देखता हूँ वह भिक्षुक इस समय कैसे तेरी सहायता करता है! यदि मेरी मनोकामना पूर्ण न की तो मैं तेरी बहुत दुर्दशा करूँगा। और अन्त को हत्या करके तुझे यमपुर भेज दूँगा। यदि तू मेरा वचन मान लेगी तो मैं सच मुच तेरा दास होकर रहूँगा। अरे! मैं इस मनोराज्य में व्यर्थ ही समय क्यों खो रहा हूँ? मैं सच मुच निपट मूर्ख हूँ। रात थोड़ी है और काम बहुत बड़ा है। अब मैं जाऊँ उस प्रिया के पास। इस समय मैं ही उस का मालिक हूँ। वह मेरे ही वश में है।

[ऐसा कह कर बड़ी शान से इधर उधर देखता और लालटैन हिलाता निकल जाता है ।]

प्रवेश दूसरा

स्थल—पुरन्दर के दुर्ग में बन्दीगृह

[मस्तानी दुःख में बैठी है और उस के पास शमशेर सोया है।]

मस्तानी—[स्वगत] प्रभो, अन्त को मेरी ऐसी दशा हुई न! इन दुःसह्य दुःखों को मैं कहाँ तक सहन करूँगी! मेरे प्राणों को भारी दुःख हो रहा है। मैं अकेली अबला क्या करूँ! मुझे किसी का आश्रय नहीं। मुझे अपना जीवन दूभर जान पड़ता है। रे दुर्दैव, तू मुझ दीन को ऐसा कष्ट क्यों दे रहा है? तेरे मन में क्या है? मुझ से इतना बड़ा कौन पाप हुआ है? मेरा राजकुल में जन्म हुआ परन्तु यह अभागिनी फिर भी दासी बनी! मुझे सुख कहाँ मिलेगा! आग लगे मेरे इस तारुण्य और रूपराशि को! माता, जन्म लेते ही तूने मुझे क्यों नहीं मार डाला?

मेरी माँ मुझे इस प्रान्त में क्यों ले आई? परन्तु मेरा यह सौन्दर्य, मेरा यह यौवन बीच में आ पड़ा न। जला मेरा यह सौन्दर्य, यह यौवन और यह रूप!!

इसी के लिये तो यह मुआ पिशाच जाधवराव मेरे पीछे पड़ा है। मुआ राजवंशी बना फिरता है! देशद्रोही कहीं का!! मुए निःसन्तान हों! वैसे ही प्रत्यक्ष नाना साहब—अप्पा साहब देखो न, मेरा तो क्या, मेरे कारण अपने पिता से भी द्वेष करने लगे हैं! उन्हों ने नाना प्रकार के षड्यन्त्र रचे और हम को एक दूसरे से बिछोड़ दिया। हे ईश्वर! क्या मैं अपने जीवन-धन को पुनः आँखें भर कर देख सकूँगी! मेरा मन उन के दर्शन के लिए अधीर हो रहा है! उन के विरह में मुझे कुछ भी अच्छा नहीं लगता, कुछ भी नहीं सूझता। मुझे उनके दर्शन कब होंगे!

मुझे सब से बुरी बात यह जान पड़ती है कि मैं उस दुष्ट, चाण्डाल, नमक हराम के पंजे में फँस गई हूँ। अब मेरी गति अच्छी नहीं। हे नारायण, इस से तो अब मुझे मृत्यु दीजिए। हे अनाथों के नाथ, मैं गिड़गिड़ा कर विनती करती हूँ, अपनी इस पुत्री को मुक्त कीजिए। आप को मुझ पर क्यों दया नहीं आती! इस दुष्ट से तो मुझे मृत्यु ही सुखदायक जान पड़ती है। आप मुझ पर सदय क्यों नहीं होते!

[बच्चे की ओर देख कर] मेरे बच्चे शमशेर! तू ने मुझ

जैसी अभागिनी के उदर से क्यों जन्म लिया ! मैं तेरी जननी बनने के योग्य नहीं। मैं चाण्डालिनी हूँ। तू निश्चिन्त हो कर प्रगाढ़ निद्रा में सो रहा है। परन्तु लाड़ले, बचपन में ही तेरे सिर पर दुःख का पहाड़ टूट पड़ा। तेरी इस जननी को धिक्कार है ! तेरी जननी के प्रारब्ध को धिक्कार है ! तू ने इस अभागिनि की कोख से क्यों जन्म लिया ! जन्म से ही तुझे ऐसी दुर्दशा भोगने को मिली।

[उस का चुम्बन करती है]

पुत्र, तुझे कितनी गाढ़ी नींद आई है ! [शमशेर जाग पड़ता है।] अरे, जान पड़ता है यह तो जाग ही रहा था। पुत्र, सोजा, सोजा मैं तुझे थपकती हूँ !

शमशेर—[उठ बैठता है] माँ, यह भूमि कितनी ऊबड़ खाबड़ है ! मेरे शरीर में चुभती है ! मुझे यहाँ ज़रा भी नींद नहीं आती। माँ, मुझे इस जगह क्यों ले आई हो ? चल, मुझे अपने नगर में जल्दी ले चल और अपने महल मे पलंग पर सुला दे। मुझे बहुत नींद आ रही है।

मस्तानी—[रोती है। स्वगत] बच्चा, तुझे अपनी कहानी क्या सुनाऊँ ! मेरा भाग्य ही उल्टा हो गया है। मुझ पर बड़ा कठिन समय आया है। मेरा सब सुख नष्ट हो गया है।

अब महल कहाँ और पलँग कहाँ ! ये सब चीज़ें एकदम हमारे लिए दुर्लभ हो गई हैं !

गीत—देव गाँधारी

हरि की गति नहिं कोऊ जानै ।
जोगी जती तपी पचहारे, अरु बहु लोग सयाने ।
छिन महि राउ रङ्क कौ करही, राउ रङ्क कर डारै ।
रीते भरे भरे सखनावै, यह ताको व्यवहारै ॥

शमशेर—माता, माता, तू क्या कर रही है ! यह शोक क्यों ? मुझे कुछ पता नहीं चलता, तू ऐसे अमंगल शब्द क्यों बोल रही है ! शाहू के गाँव में जाकर हम और तुम पिता जी से मिलेंगे । उन से कह कर इन लोगों की खूब खबर लेंगे । माँ, तू रो मत, मेरी बात पर ध्यान दे ।

मस्तानी—[स्वगत] इस बच्चे को अब क्या कहूँ ! [प्रकट] बच्चा, सो जा । क्या अब रात नहीं हुई ! हम कल परसों सातारा जायँगे और उन से सब बातें कह देंगे, अच्छा !

शमशेर—मुझे अब नींद नहीं आती, बता मैं क्या करूँ ? मैं आज तक कभी भूमि पर नहीं सोया । तू ऐसा क्यों कहती है ? यहाँ पलंग भी नहीं ! और तू गाती भी नहीं ! तेरा मन ऐसा दुःखी क्यों है ? मैं जाग कर देखता हूँ । तेरे साथ

बैठूँगा। तू सो जा। फिर मैं भी सो जाऊँगा। नहीं तो ऐसे ही बैठे रहेंगे।

मस्तानी—बच्चा, तुझे नींद आ जाने के बाद मैं भी सो जाऊँगी, अच्छा! [उसे सुलाती है] सो जा बेटा, आँखें मीच ले। देख, अभी तुझे नींद आ जायगी। मेरे कुलवन्त पुत्र, सोजा, सोजा, यह दो दिन का संकट तुझ पर आया है। इन कठिन दिनों के बीत जाने पर फिर तू सुखी हो जायगा। सोजा, सोजा, मेरे प्यारे बच्चे! मैं तुझे थपकती हूँ। तुझे सुख से नींद आ जाय! प्यारे पुत्र, तुझे देख कर मेरे मन में इतना प्रेम उत्पन्न होता है कि वर्णन नहीं हो सकता। जगदीश्वर तुझे दीर्घ आयु दें! तेरी सारी बला टल जाय! भगवान् से मेरी यही प्रार्थना है।

[इतने में किसी के आने की आहट होती है।]

मालूम नहीं, इतनी रात में यहाँ कौन आ रहा है! यह उजाला दीखने लगा!

[जाधवराव हाथ में लालटैन लिए आता है और उसे एक आले में रख देता है]

आया मुआ वह दुष्ट फिर! इस समय मेरी लाज रखना भगवान् आप के ही हाथ है। प्रभु, दौड़िए, दौड़िए! आइए, जल्दी आइए! आपकी यह गाय संकट में पड़ कर

आप से विनती कर रही। यह दुष्ट आ कर मेरे शरीर को भ्रष्ट करना चाहता है। जल्दी आ कर इस दीन का उद्धार कीजिए! मुझे इस संकट से छुड़ाइए।

जाधवराव—[स्वगत] अहा! इस लोह-चुम्बक को देखते ही मेरा मन उसकी ओर खिंचने लगता है। [उस के पास जाकर] हे प्रिय कामिनी, तुम्हें देख कर मेरा मन हर्षित हो उठा है। इस समय प्रसन्न होकर मेरे साथ बात करो। तब मेरा जन्म सार्थक हो जाएगा। क्रोध छोड़ कर मन में प्रेम-भाव उत्पन्न करो। मैं हाथ जोड़ कर तुम्हारी विनती करता हूँ।

मस्तानी—[क्रोध से] तू अधम है। मुझ से कुछ भी मत कह।

जाधवराव—[नम्रता से] हे सुन्दरी, मुझे दीन-हीन जान कर मुझ पर क्रोध मत करो।

मस्तानी—[क्रोध से] तू कपट करके मुझे इस विकट कारावास में ले आया है। अब कैसी चापलूसी कर रहा है! हे अधम, तुझे लज्जा नहीं होती?

जाधवराव—[नम्रता से] मुझे क्षमा करो, मन में कुछ भी न लाओ। सुन्दरी, तुम्हारी प्राप्ति के लिए इस जाधवराव ने आज तक जितने भी प्रयत्न किए वे सब व्यर्थ हुए। परन्तु इस समय ईश्वर की कृपा से पुनः तुम से भेंट हुई है। अब तुम और कितना हठ करोगी?

मस्तानी—[क्रोध से] मुए, निकल जायँ तेरे प्राण। किस लिए इस अभागिनी के पीछे पड़ा है ?

जाधवराव—ऐसी निष्ठुरता मन में न लाओ। तुम्हें प्राप्त करने के लिए मैंने अपना राज्य छोड़ दिया, घरबार छोड़ दिया। प्यारी, यह सब तुम्हारे लिए। मेरे जैसे राजवंशी के गले में माला न पहना कर उस भिक्षुक बाम्भन के घर में घुसने से तुम्हें क्या सुख मिला ! प्यारी सखि, तुम मन में कब तक क्रोध रखोगी ? मेरा अन्त क्यों देख रही हो ? तुम उस पामर को छोड़ दो। तुम समझती क्यों नहीं ! वह बन बन फिर रहा है। उसके हाथ से तुम्हारे कौन हेतु पूर्ण होंगे ? मेरे साथ चलो। मैं तुम्हें पूर्ण सुख से रक्खूँगा। अपने मुँह से अधिक क्या कहूँ।

ब्राह्मण लोग बड़े स्वार्थी होते हैं, मेरी यह बात तुम सच जानो। यों ही गप्पें हाँक कर तेरी मिट्टी खराब करेंगे। मेरे साथ मेरे गाँव को चलो। वहाँ तुम आनन्द से रहोगी। तुम्हें फूल की तरह रक्खूँगा और कुछ भी कष्ट न दूँगा।

मस्तानी—[क्रोध से] हे नीच, तू मुझे व्यर्थ क्यों तंग कर रहा है ? ऐसे अप्रिय शब्द बोलने के लिए तेरे मन में कुछ भी विचार क्यों नहीं आता ! चाहे मेरे प्राण भी

चले जायँ मैं तेरे वश में नहीं हूँगी । एक पति के विना जगत् में दूसरे सभी पुरुष मेरे बंधु और जनक हैं। तेरी कामना कैसे पूरी हो सकती है !

हे दुर्जन, तू उनकी निन्दा क्यों कर रहा है ? तुझे लाज क्यों नहीं आती ? तेरी यह अधम जीभ झड़ क्यों नहीं जाती ? कोई भी उनकी समता नहीं कर सकता। तू मुझे क्यों तंग कर रहा है ? मेरे प्राण बेशक चले जायँ तो भी मैं तेरी बात न मानूँगी। मैं यह प्राण शपथपूर्वक उनको अर्पण कर चुकी हूँ।

जाधवराव—प्रिये, कैसी शपथ और कैसी बातें लिए बैठी हो ! वह ब्राह्मण तुम्हें पूछता तक नहीं ! उस की चालाकी तुम अब तक क्यों नहीं ताड़ सकीं ! आप तो परदेस को निकल गया है, और पीछे से अपने लड़कों और संबंधियों से तुम्हें तंग कराया है । मैं ही था जिसने तुम्हें उन के कष्टों से छुड़ाया । मेरा तुम पर यह कितना भारी उपकार है ! [ऐसा कह कर उस के निकट जाता है]

मस्तानी—[क्रोध से] मुए आग से निकाल कर तूने मुझे कुएँ में फेंक दिया, इस में तेरा क्या आभार मानूँ ? दूर हो जा, चापलूसी मत कर । खल, यहाँ से चला जा। गधे, मन में लज्जा कर के ऐसी कुमति को छोड़ दे !

जाधवराव—[स्वगत] यह हठीली नारी इस प्रकार मानने वाली नहीं । इसे उग्र स्वरूप दिखलाना चाहिए । [प्रकट] मस्तानी, तू मुझे चाहे कितनी भी गाली दे, तू मुख से चाहे कितना भी बकवाद कर, पर तू आज मेरे वश में है । बाजीराव यहाँ से सैकड़ों मील दूर है । देखूँ, वह तुझे कैसे छुड़ाता है ! अब भी मान जा, अन्यथा दुःख पायगी ।

मस्तानी—[क्रोध से] मुए, तू मुझे पकड़ लाया है, इसमें तेरी वीरता ही क्या है ? तू क्या समझता है ! तू मेरा क्या कर लेगा ?

देख तेरे सामने जीभ खेंच कर मैं सचमुच अपने प्राण दे दूँगी । इसी प्रकार अपने पुत्र का गला घोंट कर उसे भी मार डालूँगी । पर जिस को एक बार मैं अपना प्राणनाथ कह चुकी हूँ, उस के साथ कभी धोखा नहीं करूँगी । मेरी इस बात को सत्य जान ।

जाधवराव—[स्वगत] क्या अपने कथनानुसार यह सच मुच अपने पुत्र का प्राण ले लेगी ! छिः, इस में इतना साहस कहाँ है ! यह व्यर्थ ही मुझे धमकी दिखा रही है । [उस के निकट जा कर] प्यारी मस्तानी, ऐसा पागलपन मत करो ! मेरी बात सुनो और मान जाओ ।

मस्तानी—[क्रोध से] अरे, क्यों व्यर्थ मुझे तंग कर रहा है ?

तनिक सोच। मेरे मन में जो घोर कृत्य आया है उसे करने में मैं कभी भी आगा-पीछा न देखूँगी। इसे सच समझ। कारण, जिस ने अपने प्राण हथेली पर रख लिए हैं उस के लिए यह सारा संसार तृण-तुल्य है। किस के बच्चे और किस के बाले! [शमशेर के निकट जा कर] शमशेर, बेटा, उठ जाग! यह शैतान तेरे और मेरे गले में फाँसी लगाने आया है। इस लिए उस से पहले ही हम उस परमात्मा के चरणों में चले जायँगे। हो तैयार! कर भगवान का स्मरण!

शमशेर—[जाग कर] माँ कौन? [जाधवराव की ओर देख कर] अरे, यह तो हमें सातारे में पिता जी के पास ले जाने वाला है न? क्यों भई! कल चलना है न सातारा को?

मस्तानी—चुप रह—जाधवराव, जो तुम्हारी इच्छा है सो कह दो! फिर हम एक बार तुम्हारे सामने क्रोध से प्राण दे देंगे!

जाधवराव—[स्वगत] अहा हा! मुझे क्या डर दिखा रही है! कहती है, मैं प्राण दे दूँगी! इस से क्या मैं डर जाऊँगा? यह मेरी बात नहीं सुनती। तो मुझे अब कोई दूसरी युक्ति निकालनी चाहिए। [प्रकट] आ बच्चा, इधर! हम कल सातारा चलेंगे! [शमशेर जाने लगता है]

मस्तानी—खबरदार शमशेर, जो तू यहाँ से हिला।

शमशेर—ठहर माँ, देखूँ वह क्या करता है! [जाता है] माँ, तू मेरी ओर से निश्चिन्त रह। मैं उन के चरण पकड़ कर विनय-पूर्वक क्षमा माँगूँगा। वे मुझ पर दया करेंगे। तू दुःखी क्यों हो रही है? [जाधवराव को संबोधन करके] इस दीन बालक पर ध्यान देकर निष्ठुरता छोड़ दीजिए और मन में प्रीति का संचार होने दीजिए। [माँ से] इनके पैरों पर सिर नवा कर इन के हृदय को पिघलाता हूँ। फिर ये हमें कभी तंग नहीं करेंगे। ये हमें अभयदान दे कर पूर्ण सुखी करेंगे।

जाधवराव—हे पगली, तेरे एक ही मीठा वचन कह देने से तू सुखी हो जायगी और तेरे सब घोर संकट मिट जायँगे।

मस्तानी—हे ईश्वर, मुझे मृत्यु क्यों नहीं आती! मेरा बच्चा कहीं इस असुर के हाथ न पड़ जाय! प्रभु, आप को अभी तक दया क्यों नहीं आई! यह ग़रीब गाय घोर संकट में फँसी है।

जाधवराव—सुन्दरी, मैं कहाँ तक तेरी मिन्नतें करूँ! मेरा वचन सुन और उसे मान ले।

मस्तानी—हे पृथ्वी माता, मुझे अपने उदर में स्थान दे, जिस से मैं इस नराधम से जल्दी छूट जाऊँ!

शमशेर—माता ! तू रोती क्यों है ? अपने शोक को शान्त कर ! अपने इस पुत्र के रहते तू किस से डरती है ? [जाधवराव से] मैं आप के सामने इतना गिड़गिड़ाया हूँ । फिर भी आप के मन में दया नहीं आती ! आप मेरी माता को क्यों तंग कर रहे हैं ?

[उस के निकट जा कर] क्यों पिता जी, आप मेरी माता जी को क्यों दुःख दे रहे हैं ?

जाधवराव—खबरदार लड़के, जो अपनी माँ का नाम फिर मेरे सामने लिया तो ! तू मुझे पिता कहता है, परन्तु उसे यह कब स्वीकार है ?

शमशेर—अजी, मैं ने तो यों ही प्रतिष्ठा के लिए आपको पिता जी कहा था । इस से क्या आप सच मुच मेरे पिता बन गये ?

जाधवराव—[तलवार उठाता है] लड़के, ले अब अपने भगवान का नाम !

मस्तानी—[घबरा कर] ईश्वर !! मेरे बच्चे, मेरे मना करने पर भी तू क्यों उस नराधम के पास चला गया ! इस समय कोई दौड़ियो, दौड़ियो, कोई दौड़ियो ! यह अधम, दुष्ट, राक्षस मेरे पुत्र की हत्या कर रहा है ! मेरा रक्षक बन कर कोई इसे उस के हाथ से छुड़ावे ! दयामय, इस समय मैं क्या करूँ ! [इतना कह कर मूर्च्छित हो जाती है]

शमशेर—क्या है जाधवराव ! जान पड़ता है तुम तलवार उठा कर हमारी हत्या करोगे ! हम से कौन ऐसा अपराध हुआ है ? भला तुम कभी इस प्रकार अपने बच्चे पर भी तलवार उठाओगे ?

जाधवराव—लड़के, तू नहीं, तेरी माँ मेरा अपराध करती है । वह मेरी बात नहीं सुनती ।

शमशेर—मेरी माँ तुम्हारी बात सुनती नहीं, इस लिए तुम मुझे मारोगे !

जाधवराव—हाँ, मैं डरता हूँ क्या !

शमशेर—मेरे जैसे बालक पर तुम्हारा हाथ तलवार उठा सकेगा क्या ? तुम यदि मेरी माँ से चोरी करने को कहोगे तो भला वह कैसे मान सकती है ?

जाधवराव—हराम खोर, बक बक क्यों कर रहा है ?

मस्तानी—[होश में आकर जाधवराव से] मुए चाण्डाल, एक बधिक का हृदय भी तेरी अपेक्षा अच्छा होगा !

जाधवराज—मस्तानी, अब भी मेरी बात पर ध्यान दे, सोच ! अपना बच्चा मत खो। देख, मुझे बालक पर दया आ रही है।

शमशेर—जाधवराव, आप मेरी माता को क्यों तंग कर रहे हैं ? यदि आपको सच मुच मुझ पर दया आती है तो उसे दुःख न दीजिए ।

मस्तानी—शमशेर, इस राक्षस के सामने क्यों प्रार्थनाएँ कर रहे हो ? मर गया, तो मर गया सही ! अरे वीर पिता की सन्तान होकर मरने से डरते हो ?

शमशेर—माँ, मुझे मरने से डर नहीं । लड़ाई में बहुतेरे लोग मरते हैं। वैसे ही मैं भी मर गया तो क्या हुआ। जाधवराज, मैं एक तुच्छ सा बालक हूँ । मुझे कुछ ज्ञान नहीं। तो भी पिता जी के मुख से मैंने लड़ाई की बहुतेरी बातें सुन रखी हैं। लो, तुम मेरा प्राण ले लो। देखो, मैंने तुम्हारे सामने सिर झुका रखा है। एक ही प्रहार से मेरा प्राण निकल जाय तो भी मुझे कुछ परवा नहीं। मैं अपने को वीर-तनय कहता हूँ। मैं मरने की कीर्ति को यों ही हाथ से नहीं जाने दूँगा।

मस्तानी—शाबाश, मेरे बच्चे शाबाश !

[बाहर कोलाहल सुन पड़ता है]

मुए पाजी, नामर्द, उठा तो सही मेरे बच्चे पर तलवार !

जाधवराज—सखि, मेरी बात सुन। तू ऐसा अविचार क्यों कर रही है ? देख इस समय तुझे किसी का भी आधार नहीं है ! ऐसे सुकुमार बच्चे को तू हाथ से मत खो। मुझे इस पर दया आती है। पर इसका जीना या मरना तेरे अपने शब्दों पर निर्भर है।

शमशेर—कठोर शब्द कह कर तुम मेरी माता को क्यों दुःख दे रहे हो ? अब तक तुम्हारा चित्त क्यों द्रवित नहीं हुआ। यदि सच मुच तुम्हें मुझ पर दया आती है तो तुम जान बूझ कर इस के विपरीत आचरण क्यों करते हो ?

मस्तानी—ऐसे असुर के सामने बच्चा, तू क्यों मिन्नतें कर रहा है ? तू नहीं जानता यह बड़ा ही कपटी, निर्दय और खल है। अरे तू वीर-तनय होकर मरने से क्यों डरता है !

शमशेर—मुझे मृत्यु से कुछ डर नहीं। मृत्यु से कौन बचा है ? मेरे पिता, अपने बल से समर में रिपुओं का संहार करते हैं। मुझे पता क्यों नहीं ! मैंने पिता जी के मुख से सुना है। मैं कभी हारने वाला नहीं।

मस्तानी—धन्य है बेटा तू ! मेरे उदर से जन्म लेकर तू ने अपने कुल को विभूषित किया है ! हे पाषाण-हृदय, उठा यह तलवार, देख मैं अभी प्राण विसर्जन करती हूँ।

जाधवराव—तू बेशक अपने प्राण छोड़ दे, मैं अपने निश्चय से नहीं टलूँगा। एक वचन देकर तू इस काल से क्यों नहीं छूट जाती ?

रामजी—[परदे के पीछे से] हे दुष्ट, मैं तेरा बुरा हाल कर डालूँगा।

जाधवराव—यह देख मैंने उठाई तलवार ! लड़के, तू व्यर्थ मर रहा है। [मस्तानी से] यह भेज रहा हूँ यम के घर तेरा बच्चा।

[तलवार उठाता है, पर रामजी पीछे से आकर उसे छीन लेता है। रामजी और आत्माराम जाधवराव को नीचे गिरा देते हैं]

रामजी—[उसकी छाती पर बैठ कर] क्या है रे पाजी नगोड़े ! यह क्या कर रहा था ? बच्चू, तुझे लज्जा नहीं आती !! इस सुन्दर सुकोमल अबोध बालक पर तेरी तलवार कैसे उठती है ! नगोड़े, तेरे मुँह पर थू है ! पाजी कहीं का ! [आत्माराम से] आत्माराम पन्त, क्या देखते हो। बाँधो इस नामर्द की मुश्कें और डाल दो इसे बन्दी-गृह में। [वैसा करते हैं]

जाधवराव—अरे रामजी, इस समय मुझे प्राण-दान दो। अरे, मैं तुम्हारे बचपन से तुम्हारा मालिक हूँ।

आत्माराम—मूर्ख, तुम्हें जीता छोड़ दिया है, यही भारी उपकार समझो ! [बन्दीगृह को ताला लगाता है और उसे हिलाकर देखता है] अब यहाँ बैठ कर हरि-स्मरण करो !

आत्माराम—बाईजी, अब आपको कोई डर नहीं।

मस्तानी—[स्वगत] अहा ! प्रभु, तेरी लीला का कोई पार नहीं। तेरे चमत्कारों को बुद्धि नहीं समझ सकती। तेरी आज्ञा के बिना एक पत्ता भी नहीं हिल सकता। तू दीनों का प्रतिपाल है। तेरा मुझ पर भारी उपकार है।

गाना

पितु मात सहायक स्वामि सखा,
तुम ही इक नाथ, हमारे हो।
जिन के कछु और अधार नहीं,
तिन के तुमही रखवारे हो।
सब भाँति सदा सुखदायक हो,
दुःख दुर्गुण नाशन हारे हो।
प्रतिपाल करो सिगरे जग को,
अतिशय करुणा उर धारे हो।
भुलि हैं हम ही तुम को, तुम तो
हमरी सुधि नाहिं बिसारे हो,
उपकारन को कछु अन्त नहीं,
छिन ही छिन जी विस्तारे हो।

भाई आत्माराम, तुम कहाँ गये थे ? [जाधवराव से] मुए, तेरा वंशोच्छेद हो ! [शमशेर को गले लगा कर चूमती है] बेटा शमशेर, तुझे परमेश्वर लंबी आयु दे ! रामसिंह जी, हम पर आज तुम्हारा भारी उपकार है ।

आत्माराम—बाई जी, इस को आपने पहचाना नहीं है क्या? यह आपका प्यारा नौकर रामजी है !

मस्तानी—अरे यह रामजी है ! भाई, तू मेरा पूर्व जन्म का सहायक है !

शमशेर—माँ, इस ने पूर्वी भैये का भेस बना रक्खा है । मैं ने इसे न पूना में पहचाना और न यहाँ ।

रामजी—बाईजी, यह आपका रामू है । इस पर दया-दृष्टि रखनी चाहिये !

मस्तानी—बच्चा, इस नगोड़े के साथ तू कैसे आया ?

रामजी—बाईजी, मुझे राव साहब ने आप को लिवा लाने के लिए भेजा तो रास्ते में यह पाजी मिल गया । इस के साथ इधर उधर की बातें करके मैं बन गया रामसिंह, और क्या !

मस्तानी—अब वे कहाँ हैं ? हम कब चलेंगे ?

रामजी—राव साहब नर्मदा के इस ओर छावनी डाले आपकी बाट देख रहे हैं ।

मस्तानी—तो फिर अभी इसी समय चलिए! मेरे मन में अधीरता हो रही है कि मैं अपने नाथ को कब देखूँगी। मेरे पतिदेव के नेत्र इस अभागिनी की ओर लगे होंगे। पति देव के बिना इस योषित् का कोई दूसरा आश्रय नहीं। इस जगत् में वे ही मेरे प्राण हैं। मेरे पति को दीर्घायु और सुख प्राप्त हो, मेरी कर जोड़ कर भगवान से यही प्रार्थना है! जल्दी चलो, मैं कब अपने नाथ को देखूँगी!

[ऐसा कह कर जाते हैं]

प्रवेश तीसरा

स्थल—श्मशान। समय—मध्य रात्रि

[चिता सुलग रही है। उसके गिर्द लोगों की भीड़ खड़ी है]

भाऊ साहब—[चिता के सामने खड़े रह कर] शिव, शिव! प्रभु! मैं नहीं जानता था कि इस परदेस में मुझ अकेले पर अपने परम पूज्य स्वामी की—इस महावीर की—चिता को आग देने का विकट अवसर आयगा! हाँ!! अहाहा! स्वामी, तू स्वामी ही था! लाखों मनुष्यों में भी ऐसा रत्न उत्पन्न होना असंभव है!

रण-सिंह बाजीराव हमें छोड़ कर परलोक को चला गया! वह गो और ब्राह्मण का रक्षक था, दीन जनों का परित्राता था, और यवनों का संहारक था। छत्रपति का चमकता दमकता हीरा आज मुकुट में से गिर पड़ा!

ऐसा विलक्षण प्रतापी, भाग्यशाली नरवीर! पर उस का पंचभौतिक शरीर एक क्षण में पंचत्व को प्राप्त हो जाय—उस का कुछ भी शेष न रह जाय! अहो, मनुष्य-देह कितनी क्षण-भंगुर है!! हरि, हरि!!!

[निस्तब्ध खड़ा रह जाता है! इतने में मस्तानी दौड़ती

हुई श्मशान में आती है। उस के पीछे शमशेर, आत्माराम, रामजी आदि आते हैं।]

मस्तानी—[घबराई हुई चिता के सामने आती है] आँ! यह मैं क्या देख रही हूँ! हा दुष्टे! हतभागे! [कपाल पर हाथ मारती है] आप मुझे छोड़ कर क्यों चले गये? मेरा कुछ भी अपराध न होते आज आप मुझ से निष्ठुर क्यों हो गए? रात को भी दिन समझ कर मैं भागी-भागी आप के दर्शन के लिए यहाँ आई हूँ। मेरे प्राणाधार से मुझे कोई मिलाए। मेरे प्राण व्याकुल हो रहे हैं! मेरे जीवन-धन, मुझे छोड़ कर आप कैसे चले गये! आप के मन में मुझ अबला पर दया क्यों नहीं आई? आप के विरह का दुःख जैसे तैसे बिता कर आप के दर्शन के लिए मैं दौड़ती हुई आई हूँ। एक बार मुझे दर्शन दीजिए, फिर मैं आप को जाने नहीं दूँगी। आपके बिना मैं अनाथ हो गई हूँ। अब संसार में मेरा क्या रक्खा है!

शमशेर—[उसके निकट जा कर] माँ, तेरे इस प्रकार एकदम रोने का क्या कारण है? यह सामने क्या जल रहा है? तू मुझे बता।

मस्ताती—[उठ कर बैठती है] बच्चा, मैं तुझे क्या बताऊँ! जिन्होंने तेरे साथ बहुत लाड़-प्यार किया, तुझे कभी भी

डाँट-डपट नहीं की, देख, तेरे वही पिता आज तुझे छोड़ कर स्वर्ग चले गये।

शमशेर—हाय पिता, आप का मन कितना कठोर है! इस जगत् में आपके बिना मेरा कोई आश्रय नहीं! इस प्रकार मुझे तज कर आप दूर क्यों चले गये! अब आपके इस दीन पुत्र को अपनी गोद में कौन बैठाएगा? हाय पिता, प्यारे पिता, अब मैं आप को कहाँ देखूँ! दुःख से भूमि पर लोटते हुए इस पुत्र को छोड़ कर आप कैसे चले गये! पिता जी, हम अब बनवासी हैं। इस जगत में अब हमारा कौन नाता है!

मस्तानी—प्रियतम, मेरे बिना आप को एक घड़ी भी चैन नहीं पड़ता था। अब जाते समय मेरी याद भी नहीं आई न! उस समय "मैं जल्दी लौट आऊँगा" कह कर आपने मुझे कैसा झाँसा दिया! दैव, तूने मुझ पर यह कैसा प्रहार किया! यदि मैं साँझ को यहाँ पहुँच गई होती तो भी मुझे अन्तिम दर्शन तो हो जाते! पर मुझ अभागिनी, मुझ चाण्डालिनी के भाग्य में अन्तिम दर्शन कहाँ था!! मैं क्या करूँ! मैं कहाँ तक धैर्य धरूँ! प्रियतम को कहाँ देखूँ! सखा के बिना यह सारा संसार मुझे सूना जान पड़ता है। प्रभु, मैं इस समय क्या करूँ? मुझे कोई उपाय सुझाइए! हाय! हाय!! हाय!!!

भाऊ साहब—कुछ विचार करके शोक को शान्त कीजिए! आप कितना भी शोक करें, फिर भी आपका स्वामी आपको नहीं मिल सकता। आप शोक कर के शरीर को व्यर्थ कष्ट क्यों दे रही हैं?

मस्तानी—भाऊ साहब, [बावली सी हो कर] वे मुझे फिर नहीं मिल सकेंगे क्या? कहते हो, नहीं मिलेंगे! मैं ने उनका ऐसा कौन अपराध किया है? निश्चय ही, निश्चय ही वे मुझे मिलेंगे!

भाऊ साहब—अरे, बाईजी का चित्त ठिकाने नहीं है। यह ऐसी बातें कर रही हैं। अरे कोई तो--

मस्तानी—अरे, कोई मेरा चोला तो ला दे। मैं आई स्वामिन, जल्दी जल्दी आती हूँ। [ऐसा कह कर जाती है]

शमशेर—[उस का अञ्चल पकड़ कर] माँ, अरी माँ, मुझे भी अपने साथ ले चल। तू कहाँ जायगी और क्या करेगी, मुझे समझा; इस अबोध बालक को अकेला छोड़ कर तुम कहाँ जा रही हो? मैं इधर उधर मारा-मारा फिरूँगा, क्या तुम्हें यह अच्छा लगेगा?

[ऐसा कह कर उसके पीछे भागता हुआ जाता है।]

आत्माराम—स्वामी, अब इस आत्माराम का पालन-पोषण कौन करेगा?

रामजी—सरकार महाराज, आपने अपने पेट के बच्चे की तरह इस रामू का प्रतिपालन किया था। अब मैं कहाँ जाऊँ! हे ईश्वर, हमें किस लिये जीते रक्खा !!

भाऊ साहब—हर हर! जब विपत्तियाँ आती हैं तो इकट्ठी आती हैं! अब यहाँ क्या उपाय करना चाहिए! हा ईश्वर, यह कैसा प्रसंग आया है! छत्रपति महाराज को अब मैं क्या कहला कर भेजूँ! पुण्य ग्राम में मैं लोगों को कैसे मुँह दिखाऊँ! हाय, हाय! सारा जगत् मुझे शून्य जान पड़ता है। मुझे कुछ भी नहीं सूझता।

[इतने में मस्तानी चोला पहने और केश खोले आती है]

मस्तानी—प्यारे, अब तक भी आप को मुझ पर करुणा नहीं आई! प्रियतम, अब तुम कैसे हो गये! प्रेम से आपने मेरा तन-मन हर लिया और मुझे सदा सुख दिया। परन्तु अन्त को मुझे विरहानल में अकेली छोड़ आप आनन्द में चले गये! क्या आप के लिये यह उचित था? अजी, उठिए, उठिए, और आकर मुझे मिलिए!

भाऊ साहब—बाई जी, यह आप क्या कर रही हैं! आप कितना भी रोएँ-चिल्लाएँ, पर राव साहब अब कहाँ उठकर आप से मिल सकते हैं!

मस्तानी—तो फिर, तो फिर—वे आकर मुझे नहीं मिलेंगे—सच

मुच अब पुनः उन से मेरी भेंट नहीं होगी ! तो फिर देखिए मैं उन से जाकर मिलती हूँ ! यह देखो मैं चली—[शमशेर को अपने पास लेकर] प्रिय पुत्र, तू सुख से रहना। अब मैं प्रियतम से मिलने जा रही हूँ। प्यारे की विरहाग्नि हृदय में धधक रही है ! तुझे देखकर मुझे रोना आ रहा है। तूने सुख नहीं देखा। अब तू सुख से रहना ! पिता चले गये, अब माता भी जा रही है ! तू शोक मत कर !

[ऐसा कह कर चिता के निकट जाती है]

आत्माराम—हैं, हैं, यह क्या बाई जी ! इस—लड़के की ओर देखो !

[उसे खींचता है]

शमशेर—माँ, ऐसा मतकर। इस समय इस बालक को छोड़ कर तू कहाँ जा रही है ? तेरे बिना मैं कहाँ रहूँगा ? जगत् में कौन मेरी रक्षा करेगा ? पिता तो मुझे छोड़ कर चले गये, वैसे ही माँ, तू भी क्यों जा रही है ? तेरे पीछे इस जगत् में मेरा त्राता कोई नहीं !

मस्तानी—अरे, कोई नहीं, ऐसा क्यों कहता है ! वह भगवान् तेरे रक्षक हैं ! उन्हीं की शरण जा। वही तेरी रक्षा करेंगे ! भगवान् पर भरोसा रख कर सुख से रहना। पिता की

लाज रखना। दीन-दुःखी की रक्षा और अत्याचारी का हनन करना। पिता का स्मरण करके जगत् में सत्कीर्ति लाभ करना। भाऊ साहब, मैं अब आप को प्रणाम करती हूँ। वह देखिए, प्राणनाथ मुझे बुला रहे हैं। आई जी, आई !

[ऐसा कह कर हाथ बढ़ाए भागती है]

[जाधवराव दौड़ता हुआ आता है।]

जाधवराव—[उस के आगे दोनों हाथ जोड़ कर] सखि, तेरे बिना मुझे कुछ भी प्यारा नहीं। तू मेरी बात मान ले। मैं तेरी कितनी मिन्नत करूँ ! पहले पति के मर जाने पर सती स्त्री दूसरे पुरुष को ग्रहण कर सकती है। यह शास्त्र की रीति है। तू क्यों डर रही है ? तू कोई कुलाङ्गना तो हुई नहीं ! आजा, मैं आजन्म तेरा दास होकर तुझे सुख दूँगा। मन में उदास क्यों हो रही है ?

मस्तानी—पकड़ो पकड़ो, बाँधो इस की मुशकें। आओ, आओ। [रामू से क्रोध से] रामू, मुए क्या देखता है, पकड़ इस दुष्ट को !

रामजी—[उसे पकड़ता है] अरे, कुछ तो शर्म कर ! देख तो सही समय कैसा है !

मस्तानी—[बावली सी हो कर] हे नराधम, देखना कहीं मेरे

शरीर का स्पर्श न कर बैठना ! इस अन्त समय में मैं सच मुच महा भयङ्कर काल-सर्पिणी बन गई हूँ ! मैं तो जाती ही हूँ, परन्तु पहले तुझ से बदला लिए लेती हूँ ! यह ले मुए, प्रेमालिङ्गन ! दूसरी बार देती हूँ !

[उस के पेट में कटार घोंपती है]

हा दुष्ट ! व्यर्थ ही तेरे रक्त से मेरे हाथ अपवित्र हुए !

जाधवराव—[नीचे गिर कर] मरा, रे मरा ! सच मुच मैं अति दुष्ट और पापी हूँ ! स्त्री के लोभ में अन्त को मेरी ऐसी गति हुई ! मैंने मदांध हो कर व्यर्थ ही इस सती को दुःख दिया। इस समय मुझे उस का अनुताप हो रहा है । हाय, हाय, सती, मेरे प्राण निकल रहे हैं। हे साध्वी, मैं तेरा अति अपराधी हूँ। इस के लिए तू मुझे क्षमा करना। राम !

[मर कर गिर पड़ता है]

[ऐसा कहते कहते उसके प्राण निकल जाते हैं]

मस्तानी—भाऊ साहब, आप के सामने मैं अंचल फैलातीं हूँ। मेरे हाथ से यह अन्तिम सेवा होने दीजिए। मैं इस चिता में कूद पड़ती हूँ !—यह मैं गई !

भाऊ साहब—बाई जी, आप समझदार हैं, कुछ विवेक से काम लीजिए। यह आप का लड़का अभी बहुत छोटा है।

तनिक इस की ओर देखिए। आप ऐसा क्यों कर रही हैं ?

शमशेर—माँ, मैं तेरे पाँव पड़ता हूँ। मुझ नन्हे बालक को छोड़ कर मत जाओ !

मस्तानी—बच्चा शमशेर ! हट जा, छोड़ दे मेरी आशा ! क्यों आता है मेरे पास ?

भाऊ साहब, इस बालक की रक्षा कीजिए, इस की रक्षा कीजिए। अब यह आप ही के सिपुर्द है। चाहे इसे मारिए, और चाहे प्यार कीजिए। मुझे यह जगत् तुच्छ जान पड़ता है। पति के बिना मुझे जीना नहीं भाता। इस से तो मुझे मरना सुखदायक जान पड़ता है।

शमशेर, भाऊ साहब के चरणों पर सिर रख। तू अब पूना को जा। काशीबाई और नाना साहब के सामने साष्टाङ्ग प्रणाम कर। फिर वे तुझ पर सदय होंगे। मुझे निश्चय है, वे तुझ से जुदाई न रक्खेंगे। बेटा, तेरा नाम शमशेर बहादुर रखा गया है। इस लिए तेरे पिता ने जो राज-कार्य आरम्भ किया था, उसकी पूर्ति में सहायक हो कर अपना नाम सार्थक कर। तभी मैं धन्य हूँगी। इस में तू ने यदि कुछ भी कसर रक्खी तो छोकरे, इस अभागिनी

के उदर से जन्म लेकर तू ने मुझे व्यर्थ ही कष्ट दिया। भाऊ साहब, इसे सँभालिए! मैं जाती हूँ।

[चिता के निकट जाती है]

भाऊ साहब—बाई जी, ऐसा काम न कीजिए। हमारी बात सुनिए। नाना साहब अब आपके लड़के का और आपका प्रतिपालन भली भाँति करेगा। ऐसा घोर कृत्य करने का विचार मन में मत लाइए।

मस्तानी—[पीछे मुड़कर] इस में कुछ भी संदेह नहीं, मुझे प्राणधन अवश्य मिलेंगे। उन्हें मेरी बहुत आशा है। व्योम-पथ पर मेरी प्रतीक्षा कर रहे हैं। आई, प्राणनाथ, मैं आई। स्वर्ग का मार्ग मेरे सामने है। इस लोक में मुझे कुछ नहीं सूझता। भाऊ साहब, रहने दीजिए यह। आप सब के सामने भला इस अभागिनी अबला की क्या चल सकती है! पर मैं भी जोगन बनी हूँ। इस लिए अब मैं चाहे कहीं भी जाकर अपने शेष दिन दुःख और कष्ट में बिता दूँगी। अब मैं इस क्षणभंगुर जगत् में जीती रही तो क्या और मर गई तो क्या! मुझे दोनों बराबर हैं!

रे मन, यह सारा जगत् क्षण-भंगुर है। यह माया और मोह का प्रसार सब व्यर्थ है। यह जीवन पवन का एक झोंका मात्र है। किस का पुत्र और किस की पुत्री!

अन्त को प्राणी अकेला ही जाता है। एक भगवान् ही काम आते हैं।

राग--पीलू

इस तन धन की कौन बड़ाई
देखत नैनों में मिट्टी मिलाई।
अपनी खातर महल बनाया
आप ही जा कर जंगल बसाया
हाड़ जलैं जैसे लकड़ी की मोली
बाल जलैं जैसे घास की पोली।
कहत कबीर सुनो मेरे गुनिया
आप मुए पीछे डूब गई दुनिया॥

समाप्त